सुख की सरकार
हिमाचल सरकार

हिमाचल की प्रगति एवं संस्कृति का दर्पण

गिरिराज

साप्ताहिक

ISSN 2454-9738

डाक पंजीकरण संख्या
एच.पी./42/एस.एम.एल. 2024-2026
साप्ताहिक आर.एन.आई. 32195/78

इस अंक में
कृषि/ बागबानी/विकास - 5, मुख्यमंत्री का आलेख 6/7, साहित्य-8, महिला/बाल जगत /स्वास्थ्य -9, पहाड़ी पृष्ठ-10

वर्ष 46 अंक 47 शिमला, 21-27 अगस्त, 2024 हर बुधवार को प्रकाशित मूल्य : एक प्रति 5.00 रुपये वार्षिक 250 रुपये आजीवन 2500 रुपये

78वां स्वतंत्रता दिवस समारोह

प्रदेश भर में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया स्वतंत्रता दिवस

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू कांगड़ा जिला के देहरा में आयोजित राज्य स्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर परेड का निरीक्षण करते हुए

◆ 75 वर्ष व इससे अधिक आयु के पेंशनरों को इसी वित्तीय वर्ष में एरियर का भुगतान करने की घोषणा ◆ देहरा में खुलेंगे अधीक्षण अभियंता व खण्ड चिकित्सा कार्यालय ◆ दस पंचायतों को बनाया जाएगा हरित पंचायत ◆ राज्य सरकार की नीतियों से एक वर्ष में 2200 करोड़ का अतिरिक्त राजस्व प्राप्त

प्रदेश में 78वां स्वतंत्रता दिवस पूर्ण जोश, उत्साह और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रदेशभर में राज्य, जिला और उप-मण्डल स्तर पर कार्यक्रमों का भव्य आयोजन किया गया। जिला कांगड़ा के देहरा में शहीद भुवनेश डोगरा मैदान में पहली बार राज्य स्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और मार्च पास्ट की सलामी ली। परेड में राज्य पुलिस, जिला पुलिस, आईआरबी सकोह, आईआरबी पंडोह, उत्तराखंड आईआरबी सशस्त्र बल, ट्रैफिक पुलिस, एसएसबी सपड़ी, गृहरक्षक, एनसीसी और भारत स्काउट्स एंड गाइड्स की टुकड़ियां शामिल हुईं। परेड का नेतृत्व परिवीक्षाधीन आईपीएस कमांडर सचिन हीरेमठ ने किया।

इस मौके पर मुख्यमंत्री ने देहरा में राज्य विद्युत बोर्ड का अधीक्षण अभियंता कार्यालय, जल शक्ति विभाग का अधीक्षण अभियंता कार्यालय और खंड चिकित्सा कार्यालय खोलने की घोषणाएं की। उन्होंने वन अधिकार अधिनियम के तहत पौंग बांध विस्थापितों के स्वामित्व के दावों का समाधान करने की भी घोषणा की। उन्होंने 10 ग्राम पंचायतों में 500 किलोवाट तक की क्षमता वाली सौर ऊर्जा परियोजनाएं स्थापित करके उन्हें हरित पंचायत में परिवर्तित करने की भी घोषणा की।

ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने मुख्यमंत्री सुख शिक्षा योजना के तहत एकल महिला परिवारों, निराश्रित महिलाओं, विधवाओं और विकलांग माता-पिता के 18 वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए 1000 रुपये की मासिक सहायता की घोषणा की। सरकार इन बच्चों का आईआईटी, आईआईएम, मेडिकल कॉलेजों और पीएचडी कार्यक्रमों में 27 वर्ष की आयु तक की शिक्षा का खर्च भी वहन करेगी। यदि निःशुल्क छात्रावास आवास उपलब्ध नहीं है, तो राज्य सरकार पीजी आवास के लिए 3000 रुपये प्रतिमाह की सहायता भी प्रदान करेगी। मुख्यमंत्री ने 75 वर्ष और इससे अधिक आयु के पेंशनरों और पारिवारिक पेंशनरों के पेंशन एरियर का इस वित्त वर्ष में पूरा भुगतान करने की भी घोषणा की। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार आर्थिक तौर पर आत्मनिर्भर बनने की दिशा में प्रयासरत है और आगामी वर्षों में कर्मचारियों और पेंशनरों की देनदारियों का चरणबद्ध तरीके से भुगतान किया जाएगा। इसके अतिरिक्त 15 हजार जीएसटी विरासत मामलों के समाधान के लिए एक नई योजना शुरू की जाएगी ताकि प्रभावितों को राहत मिल सके। प्रदेशवासियों को 78वें स्वतंत्रता दिवस की बधाई देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार अथक प्रयासों के साथ प्रदेश की वित्तीय स्थिति को सुधारने में लगी हुई है और इस दिशा में बहुत कुछ हासिल भी कर लिया गया है।

वित्तीय चुनौतियों के बावजूद राज्य सरकार ने कर्मचारियों के हित में कई फैसले लिए हैं। राज्य सरकार की नीतियों से प्रदेश को एक वर्ष में 2200 करोड़ रुपये का अतिरिक्त राजस्व प्राप्त हुआ है। देश के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान देने वाले वीर सूपतों को श्रद्धांजलि देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि हिमाचल प्रदेश के मेजर सोमनाथ शर्मा को देश का पहला परमवीर चक्र प्राप्त होने का गौरव प्राप्त है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में अब तक शहीद कैप्टन विक्रम बत्तरा सहित चार परमवीर चक्र विजेता, दो अशोक चक्र, 11 महावीर चक्र और 23 कीर्ति चक्र विजेता हैं जोकि गर्व का विषय है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान सरकार को अपने 20 माह के छोटे से कार्यकाल में राजनीतिक, आर्थिक, और प्राकृतिक आपदा के मोर्चे पर कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि हिमकेयर योजना को बंद नहीं किया गया है। सभी सरकारी अस्पतालों में लोगों को इस योजना का लाभ मिलेगा और निजी अस्पतालों में भी डायलिसिस की सुविधा मिलेगी। उन्होंने कहा कि राज्य चयन आयोग ने 2,983 पदों में से 1,841 पदों का अंतिम परिणाम घोषित कर दिया है। राज्य सरकार ने जेओए (आईटी) 817 के अभ्यर्थियों के लिए मजबूती से अपना पक्ष रखा और न्यायालय के फैसले के बाद चार साल से लंबित भर्ती का परिणाम घोषित किया। मुख्यमंत्री ने बरसात के मौसम में हुए भारी नुकसान पर गहरा दुःख व्यक्त किया। उन्होंने प्राकृतिक आपदा में जान गंवाने वालों को श्रद्धांजलि दी और कहा कि सभी प्रभावित लोग उनके परिवार के सदस्य की तरह हैं। वर्तमान सरकार ने 20 माह के (शेष पृष्ठ 11 पर)

राज्यपाल ने फहराया राष्ट्रीय ध्वज

राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने 78वें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर शिमला राजभवन परिसर में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। इस अवसर पर लेडी गवर्नर जानकी शुक्ल भी उपस्थित रहीं। राज्यपाल ने कहा कि यह ऐतिहासिक दिन है जब राष्ट्र को विदेशी साम्राज्य की गुलामी से आजादी मिली। उन्होंने कहा कि असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान और वीर सपूतों के संघर्षों ने हमें आजादी दिलाई है। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता दिवस पर हम सभी देशभक्तों को नमन करते हैं।

केन्द्र से हिमालयन बटालियन के गठन का आग्रह

उप-मुख्यमंत्री श्री मुकेश अग्निहोत्री ने शिमला में जिला स्तरीय स्वतंत्रता दिवस की अध्यक्षता की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह ऐतिहासिक एवं गौरवमयी दिन हमें उन सबकी याद दिलाता है, जिनकी बदौलत हमें आजादी हासिल हुई है। इसलिए हम आजादी के लिए संघर्ष करने वाले वीर सपूतों एवं नायकों को नमन करते हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने केन्द्र से हिमालयन बटालियन का गठन करने का आग्रह किया है। उन्होंने कहा कि इस वर्ष अभी तक प्रदेश के 18 जवान शहीद हो चुके है। सूबेदार राजेश कुमार, सूबेदार नबांग टकपा, सुबेदार हरीश कुमार, हवलदार कुलविंदर सिंह, हवलदार (शेष पृष्ठ 11 पर)

देशी गायों व भैंसों की खरीद के लिए वित्तीय सहायता में होगी वृद्धि

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों शिमला में कृषि विभाग की विभिन्न योजनाओं की समीक्षा करते हुए राज्य में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती से तैयार किए उत्पादों के विशिष्ट ट्रेडमार्क के तहत ब्रांडिंग की जाए ताकि किसानों को उनकी उपज के बेहतर दाम मिल सकें। उन्होंने उत्पादों के प्रमाणीकरण के लिए व्यापक तंत्र विकसित करने और राज्य में मिट्टी की जांच के लिए विशेष लैब स्थापित करने के भी निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने प्रदेश में बढ़ रहे कैंसर के मामलों पर गंभीर चिंता व्यक्त की। उन्होंने किसानों से रसायन मुक्त खेती की पद्धति अपनाने का आग्रह किया।

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को कृषि विभाग में युक्तिकरण के निर्देश देते हुए कहा कि स्टाफ की कमी को दूर करने के लिए विभाग में खाली पदों को तुरंत भरा जाए। उन्होंने कहा कि प्रदेश में 70 फीसदी आबादी खेतीबाड़ी से जुड़ी हुई है और सरकार ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों की आय बढ़ाने पर विशेष ध्यान दे रही है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था राज्य सरकार का प्राथमिक क्षेत्र है और इसको प्रोत्साहित करने के लिए 2024-25 के बजट में विशेष पहल की गई हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि भविष्य में कृषि विभाग और जल शक्ति विभाग, जाइका व शिवा परियोजनाओं (शेष पृष्ठ 11 पर)

मुख्यमंत्री ने किया स्वामित्व योजना का शुभारम्भ

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों हमीरपुर के दोसड़का पुलिस मैदान में राजस्व विभाग की स्वामित्व योजना के तहत आम लोगों को संपत्ति कार्ड वितरण का शुभारंभ किया। उन्होंने 11 तहसीलों के 10-10 पात्र परिवारों को संपत्ति कार्ड वितरित कर इस योजना की शुरूआत की। प्रथम चरण में 190 गांवों के 4230 से अधिक परिवारों को संपत्ति कार्ड प्रदान किये जाएंगे। इस योजना का मुख्य उद्देश्य गांव के आबादी देह रकवा में भूमि मालिकों के कब्जे वाली भूमि का स्वामित्व कार्ड उन्हें उपलब्ध करवाना है, जिससे लोगों को एक बहुत बड़ी सुविधा प्राप्त हुई है। इस योजना को धरातल पर लागू करने के लिए ड्रोन से मार्किंग की गई। अभियान के तहत प्रदेश के 15,196 गांवों में से 13,599 आबादी देह गांवों में से ड्रोन मार्किंग का कार्य पूरा कर लिया गया है, जबकि जिला हमीरपुर सहित कुल 6314 गांव के प्रथम स्तर के 16,588 नक्शे, दूसरे स्तर के 774 गांवों के 1482 नक्शे भारतीय सर्वेक्षण विभाग से प्राप्त हो चुके हैं। इसके साथ ही जिला हमीरपुर में 355 आबादी देह गांवों के अंतिम स्तर के नक्शे प्राप्त हो चुके हैं, जिनमें संपत्ति कार्ड जारी करने की प्रक्रिया जारी है।

ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने अपने संबोधन में कहा कि हमीरपुर देश का पहला जिला बना है, जहां आबादी देह में परिवारों को जमीन का मालिकाना हक दिया गया है। उन्होंने सभी लाभार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि लाल डोरा में रहने वाले को अधिकार मिलने से उनकी बहुत समस्याएं हल हो जाएंगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार पहले ही दिन से लोगों की सुविधा के लिए अनेक कार्य कर रही है। लैंड रेवेन्यू कोड में बदलाव लाया गया है, जिससे पिछले छह (शेष पृष्ठ 11 पर)

पटवारी और कानूनगो संघ का काम पर लौटने का निर्णय

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू के साथ गत दिनों देहरा में हुई बैठक के बाद राज्य पटवारी और कानूनगो संघ ने काम पर लौटने का निर्णय लिया है। बैठक के दौरान मुख्यमंत्री ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वासन दिया कि उनकी जायज मांगों का सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ समाधान किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि पटवारी और कानूनगो का राज्य कैडर किया जाना सरकार का नीतिगत फैसला है। पटवारी एवं कानूनगो संघ के अध्यक्ष सतीश चौधरी ने कहा कि सरकार की सभी योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए पूर्ण निष्ठा व समर्पण भाव से कार्य सुनिश्चित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सभी पटवारी और कानूनगो अपने एक दिन का वेतन मुख्यमंत्री राहत कोष में देंगे।

पर्यटन क्षेत्र के लिए 696 करोड़ की 11 नई परियोजनाएं प्रस्तावित

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों कहा कि राज्य में पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए 696.47 करोड़ की लागत से 11 परियोजनाएं शुरू की जाएंगी। पर्यटन विभाग की बैठक की अध्यक्षता करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि इन सभी 11 परियोजनाओं के लिए निविदाएं आमंत्रित कर ली गई हैं। इन परियोजनाओं का मुख्य उद्देश्य राज्य में पर्यटक की आमद को बढ़ावा जिनका उद्देश्य राज्य में पर्यटकों की आमद को बढ़ावा देना है।

पौंग डैम बनेगा बर्डस्ज पैराडाइज

मुख्यमंत्री ने कहा कि पर्यटन, राज्य की अर्थव्यवस्था का प्रमुख क्षेत्र है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हजारों परिवारों को आर्थिक संबल प्रदान करता है। इसलिए राज्य में समग्र पर्यटन अनुभव को बढ़ाना और नए बुनियादी ढांचे का निर्माण करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि धर्मशाला में 161.91 करोड़ की लागत से कन्वेंशन सेंटर का निर्माण किया जा रहा है, पालमपुर और नगरोटा बगवां में सौंदर्यकरण कार्य 95.50 करोड़ की लागत से किया जाएगा, नादौन में वेलनेस सेंटर में निर्माण पर 91.42 करोड़ व्यय किये जाएंगे। हमीरपुर जिले के बाबा बालकनाथ जी दियोटसिद्ध में (शेष पृष्ठ 11 पर)

मत्स्य पालन से युवाओं के लिए खुले स्वरोजगार के द्वार

प्रदेश में वर्ष 2022-23 में 21 हजार मीट्रिक टन हुआ मछली उत्पादन

प्रदेश में प्राकृतिक एवं मानव निर्मित जलाशयों, नदियों, तालाबों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों की आर्थिकी के सुदृढ़ीकरण के लिए प्रदेश सरकार द्वारा अनेक नवोन्मेषी पहल की जा रही है ताकि ग्रामीण जनता को कृषि व डेयरी के साथ-साथ मत्स्य पालन के क्षेत्र में भी प्रोत्साहित किया जा सके। प्रदेश में 20 हजार से अधिक परिवार विभिन्न जलाशयों, नदियों एवं तालाबों इत्यादि से मछली पकड़ने का कार्य कर रहे हैं। मत्स्य पालन में ग्रामीण युवाओं के स्वरोजगार की अपार संभावनाओं के दृष्टिगत मत्स्य विभाग द्वारा जनवरी, 2023 से जून, 2024 तक 682 युवाओं को स्वरोजगार के अवसर प्रदान किए गए। इस अवधि के दौरान 21022.62 मीट्रिक टन मछली उत्पादन किया गया।

विभाग द्वारा लगभग 22 करोड़ 66 लाख रुपये से अधिक की राशि विभिन्न परियोजनाओं में मत्स्य क्षेत्र में व्यय की जा रही है।

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के अंतर्गत 258 नए ट्राउट यूनिट, 20 मत्स्य कियोस्क, छः लघु व बड़े मत्स्य आहार संयंत्र, 47 बायोफ्लॉक यूनिट, दो कोल्ड स्टोर, दो बर्फ के कारखाने, चार पुनः जलीय कृषि प्रणाली, दो सजावटी मछली यूनिट तथा चार कार्य व ट्राउट हैचरी निजी क्षेत्र में स्थापित की गई हैं। मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू की 2024-25 बजट भाषण की संकल्पना के तहत मत्स्य क्षेत्र को विस्तार प्रदान करने की दृष्टि से 25 हेक्टेयर क्षेत्र में नए तालाब निर्मित किए गए हैं। मत्स्य पालकों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रदेश के 428 मत्स्य पालकों को नाव व जाल खरीदने के लिए उपदान सहायता प्रदान की गई है। मत्स्य व्यापार के लिए एक वातानुकूलित वाहन, आईस बॉक्स सहित 174 मोटर साइकल तथा आइस बॉक्स सहित 10 थ्री-व्हीलर मत्स्य पालकों अथवा उद्यमियों को उपदान सहायता प्रदान की गई है।

प्रदेश सरकार ने मत्स्य क्षेत्र को विस्तार प्रदान करने की दृष्टि से 25 हेक्टेयर क्षेत्र में नए तालाब निर्मित किए हैं। मत्स्य पालकों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रदेश के 428 मत्स्य जीवियों को नाव व जाल खरीदने के लिए उपदान सहायता प्रदान की गई है। मत्स्य व्यापार के लिए एक वातानुकूलित वाहन, आईस बॉक्स सहित 174 मोटर साइकिल तथा आईस बॉक्स सहित 10 थ्री-व्हीलर मत्स्य पालकों को उपदान सहायता प्रदान की गई है।

जलाशय मछली दोहन में लगे मछुआरों के आर्थिक उत्थान तथा सुरक्षा निधि के लिए आरम्भ की गई कल्याणकारी योजनाओं के तहत मछुआरों को जीवन सुरक्षा निधि के अन्तर्गत लाया गया है। इस योजना के अन्तर्गत मृत्यु अथवा स्थायी दिव्यांगता से संतप्त परिवार को पांच लाख रुपये की राशि प्रदान की जाती है जबकि प्राकृतिक आपदाओं के कारण प्रभावित मछुआरों के लिए आपदा कोष योजना के अन्तर्गत उपकरणों के नुकसान की भरपाई के लिए कुल लागत का 50 प्रतिशत प्रदान किया जाता है। रिस्क फंड योजना के अंतर्गत अभी तक 94 मछुआरों को तीन लाख 43 हजार रुपये की राशि प्रदान की गई है। मत्स्य आखेट बंद सीजन के दौरान सरकार द्वारा 4500 रुपये की दर से राशि पारंपरिक मछुआरों के परिवारों के लिए आजीविका और पोषण सम्बन्धी सहायता के लिए प्रदान की जाती है जिसके तहत जनवरी, 2023 से माह जून, 2024 तक 2675 सक्रिय जलाशय महागिरों को दो माह के बंद आखेट मत्स्य सीजन के दौरान एक करोड़ 20 लाख से अधिक की राशि वित्तीय सहायता के रूप में प्रदान की गई है।

नदी मत्स्य पालन कार्यक्रम के अंतर्गत मत्स्य जैव विविधता को कायम रखने के उद्देश्य से प्रदेश की 32 विभिन्न नदी नालों में मत्स्य विभाग द्वारा 44 लाख रुपये से अधिक की लागत से 15 लाख 43 हजार स्वदेशी मछली प्रजाति की उन्नत मछलियों का संग्रहण किया गया।

विभाग द्वारा जनजातीय क्षेत्रों के लिए प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के अंतर्गत तीन करोड़ रुपये से अधिक की विभिन्न योजनाएं लागू की गई हैं। सरकार का प्रयास है कि मत्स्य पालन व्यवसाय को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ इस क्षेत्र में नवीन पहल भी सुनिश्चित की जाए।

संजय सूद

नौणी विवि के पूर्व छात्रों ने चमकाया प्रदेश का नाम

शख्सियत

डॉ. यशवंत सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी ने अपनी गुणात्मक शिक्षा के लिए जानी जाती है। नौणी विश्वविद्यालय से निकले होनहार छात्रों ने देश-विदेश में अपनी योग्यता का लोहा मनवाया है। इसी कड़ी में नौणी के पूर्व छात्र व 1992 बैच के आईएफएस अधिकारी पुरुषोतम लाल धीमान को मध्य प्रदेश सरकार द्वारा पीसीसीएफ पद पर पदोन्नत किया गया है। नौणी विश्वविद्यालय की एक अन्य पूर्व छात्रा डॉ. थानेश्वरी को आईआईएम सिरमौर में हार्टीकल्चर ऑफिसर के पर नियुक्ति मिली है।

डॉ. यशवंत सिंह परमार यूनिवर्सिटी नौणी के पूर्व छात्र व हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिला निवासी भारतीय वन सेवा (आईएफएस) अधिकारी पुरुषोतम धीमान को मध्य प्रदेश में प्रधान मुख्य वन संरक्षक (पीसीसीएफ) के प्रतिष्ठित पद पर पदोन्नत किया गया है। मध्य प्रदेश कैडर के 1992 बैच के आईएफएस अधिकारी पुरुषोत्तम धीमान की इस महत्त्वपूर्ण उपलब्धि ने डॉ. यशवंत सिंह परमार यूनिवर्सिटी नौणी को गौरवान्वित किया है।

श्री धीमान की प्रारंभिक शिक्षा हमीरपुर के बिझड़ी ब्लॉक की राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला महराल में हुई।

इसके बाद नौणी विश्वविद्यालय से अपनी बीएससी (फॉरेस्ट्री) और एमएससी की। उनकी शिक्षा के प्रति लग्न के चलते उन्होंने पहले ही प्रयास में भारतीय वन सेवा (आईएफएस) की परीक्षा उत्तीर्ण की। प्रशिक्षण के बाद उन्हें आईएफएस का मध्य प्रदेश कैडर मिला था। डॉ. यशवंत सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी से स्नातकोत्तर डिग्री पूरी करने वाले पुरुषोत्तम धीमान को वानिकी, ग्रामीण एवं आजीविका विकास में व्यापक अनुभव है। आंध्रप्रदेश की सीमा पर स्थित मध्यप्रदेश के बस्तर में अपनी प्रारंभिक पोस्टिंग के बाद से वह समुदायों को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए विकास प्रयासों के लिए समर्पित

रहे हैं। साथ ही नर्मदा नदी के तट पर साल के जंगलों में लगने वाली बीमारी साल बोरर को समाप्त करने का जिम्मा भी इसी वन अधिकारी के कंधे पर था, जो उन्होंने बखूबी निभाया। इसके अलावा सीएसआर फंड से नर्मदा नदी के किनारे पौधरोपण करवाया।

पुरुषोतम धीमान ने मोबाइल पर बातचीत में बताया कि एमपी में योग्यता और आपके कार्यों को पूर्ण सम्मान दिया जाता है। उन्होंने कहा कि उनके कार्यों को देखते हुए ही उन्हें पीसीसीएफ पद दिया गया है। सोलन में कॉलेज के समय के अनुभव को साझा करते हुए उन्होंने बताया कि जब उन्होंने बीएससी फॉरेस्ट्री में दाखिला लिया था तो सोचा था कि वन विभाग में रेंजर की नौकरी मिल जाएगी। सोलन डीसी ऑफिस के बाहर हम अपनी मांगों को लेकर प्रदर्शन करते थे और फॉरेस्ट्री को प्रदेश में तरजीह देने की मांग करते थे।

नौणी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजेश्वर सिंह चंदेल ने पुरुषोत्तम धीमान को पीसीसीएफ के पद पर पदोन्नत होने पर हार्दिक बधाई दी। विश्वविद्यालय के कर्मचरियों और छात्रों ने भी इस उपलब्धि पर बधाई दी और उनके भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। नौणी विश्वविद्यालय की पूर्व छात्रा डॉ. थानेश्वरी की नियुक्ति आईआईएम सिरमौर में हार्टीकल्चर ऑफिसर के पद पर हुई है। डॉ. थानेश्वरी लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर कार्य कर रही थी। आईआईएम के लिए मई 2024 में हुई परीक्षा दी और इस परीक्षा में उनका चयन हार्टीकल्चर ऑफिसर के पद पर हुआ है। थानेश्वरी का जन्म सुंदरनगर (मंडी) के झुंगी गांव में मीना राम व माया देवी के घर 30 जनवरी 1990 को हुआ। थानेश्वरी के पिता गांव में ही दुकान चलाते हैं, जबकि माता सरकारी सेवा से सेवानिवृत्त है। घर में शुरू से ही शिक्षा का माहौल था, सभी बहन-भाई उच्च शिक्षित हैं। थानेश्वरी ने प्रारंभिक शिक्षा सीनियर सैकेंडरी स्कूल झुंगी से ली। यहां मैट्रिक की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने अभिलाषी स्कूल से जमा एक व दो की पढ़ाई पूरी की।

वर्ष 2008 में उन्होंने डॉ. यशवंत सिंह परमार यूनिवर्सिटी नौणी में बीएससी (बागबानी) में प्रवेश लिया और 2012 में बीएससी की डिग्री पूरी की। बीएससी के बाद इसी विश्वविद्यालय से 2014 में एमएससी. (फ्लोरीकल्चर एंड लैंडस्केप आर्किटेक्चर) पूरी की। वर्ष 2014-18 में आईसीएआर भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली आउटरीच परिसर आईसीएआर- भारतीय बागबानी अनुसंधान संस्थान, बेंगलुरु से पीएचडी (फ्लोरीकल्चर और लैंडस्केप आर्किटेक्चर) में की। डॉ. थानेश्वरी ने पीएचडी की डिग्री पूरी करने के बाद जनवरी 2018 से जुलाई 2024 तक लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, फगवाड़ा में सहायक प्राध्यापक (बागबानी) के रूप में कार्य किया। अब उन्हें राष्ट्रीय महत्त्व के एक स्वायत्त संस्थान, भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम) सिरमौर में हॉर्टीकल्चर ऑफिसर का पद मिला। उनके पति कमलेश कुमार आईटी प्रोफेशनल हैं और चंडीगढ़ स्थित एक आईटी कंपनी में सेवारत हैं।

डॉ. थानेश्वरी ने बताया कि उनके माता-पिता की शिक्षा के प्रति जागरूकता के कारण ही आज वह इस मुकाम तक पहुंची है। अपनी सफलता का श्रेय वह डॉ. वाई.एस. परमार विश्वविद्यालय में उनके अध्यापकों के सही मार्गदर्शन को देती है। नौणी विश्वविद्यालय से शिक्षा लेने वाले छात्र-छात्राओं ने देश-विदेश में अपना अलग मुकाम बनाया है।

यशपाल कपूर

HP PUBLIC WORKS DEPARTMENT
e-Procurement Notice
INVITATION FOR BIDS (IFB)

1.The Executive Engineer HPPWD Jubbal Distt Shimla H.P on behalf of Governor of H.P invites the online bids on Percentage rate, in electronic tendering system, in 2 Cover System for the under mentioned work from the eligible and approved contractors/Firms registered with HPPWD Department.

Job No 1 **Name of Work** R/R Damages on link road from Madhaik Nallah to Baina via Samshanghat km 0/00 to 2/00 (SH:- C/O B/Wall at RD 0/435 to 0/450 & R/Wall at RD 0/655 to 0/667.50 and 0/662 to 0/694.50) **Estimated Cost (Rs.)** 1570528 **Earnest Money (Rs.)** 31600 **Cost of Tender Form (Rs.)** 500 **Time Allowed** 2 Month **Class** D

Job No 2 **Name of Work** C/O link road Oddi Mundhadhar Garnu road km 0/00 to 1/500 (SH:- F/C 5/7 mtr wide road in km 0/810 to 0/900, C/O B/Wall in wire crate CD wortks and Khuranja Stone Soling) **Estimated Cost (Rs.)** 1185800 **Earnest Money (Rs.)** 29500 **Cost of Tender Form (Rs.)** 500 **Time Allowed** 2 Month **Class** D

Job No 3 **Name of Work** C/O link road Kelvi Bhalai Gadouge km 0/0 to 2/00 (SH:- Improvement of formation Deficiency in km 0/405 to 0/855) **Estimated Cost (Rs.)** 1128858 **Earnest Money (Rs.)** 35000 **Cost of Tender Form (Rs.)** 500 **Time Allowed** 2 Month **Class** D

Job No 4 **Name of Work** C/O link road from Kiarkoti to Upper Kumrari in km 0/00 to 0/390 (SH:- F/C 5/7 mtr wide road at RD 0/120 to 0/390) **Estimated Cost (Rs.)** 1250900 **Earnest Money (Rs.)** 25600 **Cost of Tender Form (Rs.)** 500 **Time Allowed** 2 Month **Class** D

Job No 5 **Name of Work** C/o link road Jharashali Bus Stand to Village Jharashali km 0/00 to1/120(Removal of Slips on various RD between km 0/00 to 1/120 & P/L Kharanja Stonr Soling at various RD between km 0/00 to 1/120 & PP/L CD works at RD 0/450 & 0/480 & C/O R/Wall at RD 0/110 to 0/120 ,0/265 to 0/275 **Estimated Cost (Rs.)** 1999151 **Earnest Money (Rs.)** 24500 **Cost of Tender Form (Rs.)** 500 **Time Allowed** 2 Month **Class** D

Job No 6 **Name of Work** R/R Damages on link road Jubbal Kenchi to Santoshi Nagar km 0/0 to 6/0(SH: C/O R/Wall at RD 5/380 to 5/391 & 5/460 to 5/464) **Estimated Cost (Rs.)** 767164 **Earnest Money (Rs.)** 16000 **Cost of Tender Form (Rs.)** 350 **Time Allowed** 2 Month **Class** D

Job No 7 **Name of Work** R/R Damages on Kuddu Dhadi Saraji raod km 0/0 to 11/500(SH:- C/O R/Wall at RD 1/290 to 1/310) 1st Step **Estimated Cost (Rs.)** 750000 **Earnest Money (Rs.)** 15000 **Cost of Tender Form (Rs.)** 350 **Time Allowed** 2 Month **Class** D

Job No 8 **Name of Work** R/R Damages on link road Kalech Dogri to Sari Shakrala KM 0/0 to 2/00 (SH:- Removal of Slips at RD 0/015 to 0/105 and B/Wall at RD 0/015 to 0/105) **Estimated Cost (Rs.)** 1873922 **Earnest Money (Rs.)** 38000 **Cost of Tender Form (Rs.)** 500 **Time Allowed** 2 Month **Class** D

Job No 9 **Name of Work** R/R Damages on Jhalta Boulidhar road km 0/00 to 3/500(SH:- C/O R/Wall at RD 1/040 to 1/055 SCDP Soling CD **Estimated Cost (Rs.)** 732780 **Earnest Money (Rs.)** 14700 **Cost of Tender Form (Rs.)** 350 **Time Allowed** 2 Month **Class** D

Job No 10 **Name of Work** Construction of Link road Devgaad to Oddi via Govt Sr. Sec. School Giltari Km 0/0 to0/900(SH:-Formation Cutting 5/7 mtr. Wide road at RD 0/135 to 0/900) **Estimated Cost (Rs.)** 1050000 **Earnest Money (Rs.)** 21000 **Cost of Tender Form (Rs.)** 500 **Time Allowed** 2 Month **Class** D

Job No 11 **Name of Work** R/R damage on link road to village Thana Km o/o to 7/00 (SH:- C/O retaining wall at RD 4/120 to 4/135) **Estimated Cost (Rs.)** 1159600 **Earnest Money (Rs.)** 13000 **Cost of Tender Form (Rs.)** 350 **Time Allowed** 2 Month **Class** D

Job No 12 **Name of Work** R/R Damages on Katinda Giltari road km 0/0 to 16/900 (SH:- C/O R/Wall at RD 3/500 to 3/520) **Estimated Cost (Rs.)** 1130000 **Earnest Money (Rs.)** 22500 **Cost of Tender Form (Rs.)** 500 **Time Allowed** 2 Month **Class** D

Tender document and other instructions can be downloaded or viewed online from the portal https://hptenders.gov.in by the firm/individual registered on the website which is free of cost.

Key Dates:

1. Date of Online Publication 29.08.2024 11:00 HRS
2. Document Download Start and End Date 29.08.2024 11:00 HRS upto 04.09.2024 17:30 HRS
3. Bid Submission Start and End Date 29.08.2024 11:30 HRS upto 04.09.2024 17:30 HRS
4. Physical Submission of EMD and Cost of Tender Document On line Mode
5. Date of Technical Bid opening, 05.09.2024 11:00 HRS

6 Evaluation of Technical Bid followed by Opening of Financial Bid. Date to be announced

1529/2024-25 Him Suchna Avam Jan Sampark

HP PUBLIC WORKS DEPARTMENT
e-Procurement Notice
INVITATION FOR BIDS (IFB)

The Executive Engineer HPPWD Bangana Division Distt Una H.P on behalf of Governor of H.P invites the online bids for percentage rate, in electronic tendering in 2 Cover System for the below mentioned works from the eligible and approved contractors/Firms registered with HPPWD Department.

Sr.No. 1 **Name of Work** Annual Maintenace Plan for M.D.R. for the year 2024-25 Una Barsar Bhota Bhambla Kalkhar Ner Chowk road (SH:-Providing and laying 30 mm thick Bituminous concrete in km. 22/000 to 24/000 & 33/000 to 36/000) **Estimated Cost** Rs. 12565337 **EMD** Rs. 158200 **Time Limit** ThreeMonth **Cost of Tender** Rs. 5000 **Eligible class of Contractor** Class A-C

Sr.No. 2 **Name of Work** Annual Maintenace Plan for the year 2024-25 on Link road from Una Dhamandri Road to Vishna Nagar km. 0/000 to 2/000, Link road Mansoh to Kudu km 0/000 to 4/000, Link road from Ambehra Dheeraj to Harot km. 4/000 to 6/000 and Link road from Una to Village Dangoli km. 0/000 to 1/560) (SH:-Providing and laying 30 mm thick Bituminous concrete) **Estimated Cost** Rs. 10981734 **EMD** Rs. 142400 **Time Limit** ThreeMonth **Cost of Tender** Rs. 5000 **Eligible class of Contractor** Class A-C

Sr.No. 3 **Name of Work** Annual Maintenace Plan for PMGSY Roads for the year 2024-25 on T.M.B.D road to Proiana Kalan km. 2/000 to 3/000 & 7/000 to 9/000, T.M.B.D road to Dobar km. 1/000 to 3/000), Lathiani Kohdra road km. 8/000 to 8/420 & Hatli Talpi road km. 0/000 to 1/000)(SH:-Providing and laying30mm thick Bituminous Concrete) **Estimated Cost** Rs. 7852852 **EMD** Rs. 111100 **Time Limit** ThreeMonth **Cost of Tender** Rs. 2000 **Eligible class of Contractor** Class A-C

The bidders are advised to note other details / tender document / eligibility conditions from the department website https://hptenders.gov.in. For submission of bids, the bidder is required to have Digital Signature Certificate (DSC) from one of the authorized Certifying Authorities (CA)

Key Dates:

1. Date of Online Publication 20.08.2024 11:00 HRS
2. Document Download Start and End Date 20.08.2024 11:30 HRS 28.08.2024 upto 10:00 HRS
3. Bid Submission Start and End Date 20.08.2024 11:30 HRS 28.08.2024 upto 10:00 HRS
4. Date of Technical Bid opening 28.08.2024 11:00 HRS
5. Evaluation of Technical Bid

Evaluation of technical Bid will be followed after verification of the documents.

TENDER DETAILS:

a) The Tender Documents shall be uploaded online in 2 Covers:

b) Cover 1: shall contain scanned copies of all "Technical Documents/ Eligibility Information".

Cover2: shall contain "BOQ/Financial Bid", where contractor will quote his offer for each item.

3. SUBMISSION OF ORIGINAL DOCUMENTS: Sucessful bidder shall have to submit the original documents physically with the concerned authority before issue of Letter of award of the work. It may be noted that in case any uploaded scanned document is found to be false / forged at any stage, the bidder shall be debarred for tendering in HPPWD in future as per his affidavit / undertaking submitted along with his bid as per Hon'ble High Court Judgment in CWP NO. 6371/2021.

4. BID OPENING DETAILS: The bids shall be opened on **28.08.2024** at 11:00 HRS in the office Executive Engineer, Bangana Division HPPWD Bangana H.P. by the authorised officer. If the office happens to be closed on the date of opening of the bids as specified, the bids will be opened on the next working day at the same time and venue.

5. The bids for the work shall remain valid for acceptance for a period not less than 45 days after the deadline date for bid submission.

6. Other details can be seen in the bidding documents. The officer inviting tender shall not be held liable for any delays due to system failure beyond his control. The Employer shall not be liable for any information not received by the bidder. It is the bidders' responsibility to verify the website / tender portal for the latest information related to the tender.

1531/2024-25 Him Suchna Avam Jan Sampark

स्वास्थ्य अधोसंरचना में सुधार लाने के लिए सरकार प्रतिबद्धः मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर एचआईवी जागरूकता अभियान शुरू करते हुए कहा कि राज्य सरकार शिक्षा, स्वास्थ्य और अधोसंरचना में सुधार लाने के साथ-साथ राजस्व बढ़ाने के लिए प्रयास कर रही है। सरकार के प्रयासों के परिणाम ही स्वरूप अर्थव्यवस्था में तेजी से सुधार हो रहा है और हमें पूरी उम्मीद है कि 2032 तक हिमाचल प्रदेश देश का सबसे समृद्धतम राज्य बनेगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में भी कई क्रांतिकारी बदलाव किए हैं। हर विधानसभा क्षेत्र में चरणबद्ध तरीके से राजीव गांधी डे-बोर्डिंग स्कूल खोले जा रहे हैं। प्रदेश के 850 शिक्षण संस्थानों को इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस के रूप में विकसित किया जा रहा है। जहां पर स्मार्ट क्लास रूम, ऑडियो-वीडियो विजुअल टीचिंग जैसी सुविधाएं होंगी। पांच से कम बच्चों की संख्या वाले स्कूलों को मर्ज किया जा रहा है तथा शैक्षणिक संस्थानों में आवश्यकता के आधार पर भविष्योन्मुखी पाठ्यक्रम शुरू किए जा रहे हैं, ताकि विद्यार्थियों को गुणात्मक शिक्षा उपलब्ध करवाई जा सके। राज्य सरकार एड्स के प्रति जागरूकता लाने के लिए व्यापक स्तर पर कार्य कर रही है। राज्य सरकार एड्स से पीड़ित रोगियों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा कि 'राज्य सरकार एंटी रेट्रो वायरल थेरेपी केंद्रों में निःशुल्क उपचार करवाने वाले व्यक्तियों को 1500 रुपये प्रतिमाह की आर्थिक सहायता और पीड़ितों के 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों को 300 रुपये से लेकर 800 रुपये प्रतिमाह की आर्थिक सहायता प्रदान कर रही है। इसके साथ ही उपचार के लिए आने वाले व्यक्तियों को फ्री बस यात्रा की सुविधा भी दी जा रही है।' एचआईवी जागरूकता अभियान 12 अक्तूबर, 2024 तक चलेगा। प्रदेश के सभी जिलों में यह अभियान गांव स्तर तक चलाया जाएगा। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने एक जागरूकता वाहन को भी हरी झंडी दिखाकर रवाना किया तथा दो महीने तक चलने वाले इंटिग्रेटिड हेल्थ चेकअप अभियान का भी शुभारंभ किया। इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस 'क्लिक से प्रगति की ओर-सतत् विकास के लिए युवा डिजिटल माध्यम' के थीम पर मनाया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने प्रदेश में कैंसर के बढ़ते मामलों पर भी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि इसके अध्ययन के लिए राज्य सरकार ने आईसीएमआर से सम्पर्क किया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार सरकारी अस्पतालों में कैंसर के मरीजों को उनके उपचार के लिए 42 दवाइयां मुफ्त प्रदान कर रही है। इन दवाइयों को राज्य की अनिवार्य दवा सूची में शामिल किया गया है। इन दवाइयों में कैंसर उपचार के लिए प्रयुक्त होने वाला ट्रासटूज़ूम्ब टीका भी शामिल है, जिसकी कीमत लगभग 40 हजार रुपये होती है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार युवाओं को नशे व अन्य सामाजिक बुराइयों से दूर रखने के लिए खेलों की ओर प्रोत्साहित करने के प्रयास कर रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि युवा देश की ऊर्जा है और राष्ट्र निर्माण में युवाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इस अवसर पर स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ. (कर्नल) धनी राम शांडिल, मुख्य संसदीय सचिव राम कुमार चौधरी व संजय अवस्थी, विधायक सुरेश कुमार व हरीश जनारथा और राज्य एड्स नियंत्रण समिति के परियोजना निदेशक राजीव कुमार सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू एचआईवी जागरूकता वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए

एचआईवी जागरूकता अभियान

शिक्षण संस्थानों में शोध एवं नवाचारों को मिले बढ़ावा : राज्यपाल

राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने कहा कि उच्च शिक्षण संस्थानों में गुणवत्ता के साथ-साथ प्रौद्योगिकी के उपयोग पर विशेष बल दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालयों को उद्यमिता की भावना को बढ़ावा देने और शोध एवं नवाचार के माध्यम से आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ना चाहिए।

राज्यपाल ने यह बात गत दिनों शिमला राजभवन में राज्य के छह सरकारी विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के साथ बैठक की अध्यक्षता करते हुए कही। बैठक में शिक्षा मंत्री रोहित ठाकुर भी उपस्थित थे। राज्यपाल ने कहा कि विश्वविद्यालयों को उत्कृष्टता की दिशा में निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए। विद्यार्थियों को दी जाने वाली शिक्षा विषय-वस्तु में मजबूत होने के अलावा वैश्विक परिदृश्य की उभरती मांगों के लिए भी प्रासंगिक होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों के लिए तैयार किए गए पाठ्यक्रम निरंतर अपडेट किए जाने चाहिए, ताकि विद्यार्थियों को विभिन्न क्षेत्रों में हो रही प्रगति के बारे में जानकारी मिलती रहे। उन्होंने कहा कि छात्रों के समग्र विकास के लिए शैक्षिक ज्ञान, शारीरिक शिक्षा के साथ-साथ खेल-स्पर्धाओं और अन्य गतिविधियों के लिए भी तैयार किया जाना चाहिए।

राज्यपाल ने कहा कि आज के तकनीकी युग में विश्वविद्यालयों के डिजिटलीकरण की भी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि सभी विश्वविद्यालयों को स्मार्ट परिसर बनाने की दिशा में कार्य करना चाहिए, जहां सामान्य शिक्षा के साथ-साथ छात्रों को प्रौद्योगिकी शिक्षा की भी सुविधा मिल सके। उन्होंने ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफार्म से लेकर डिजिटल पुस्तकालयों और प्रशासन तक, इन उपकरणों को अपनाने पर बल दिया। यह हमारे विश्वविद्यालयों की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण साबित होगा। उन्होंने कहा कि उचित रणनीति आर्थिक संसाधनों में आत्मनिर्भरता, उद्योगों के साथ साझेदारी स्थापित करने, पूर्व छात्रों के नेटवर्क को सुदृढ़ करने और विश्वविद्यालयों के लिए संसाधन विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्होंने कहा कि छात्रों और शिक्षकों के बीच उद्यमशीलता की भावना को बढ़ावा देने से अनुसंधान और नवाचारों का व्यावसायीकरण हो सकता है, जो हमारे संस्थानों की आर्थिक आत्मनिर्भरता में और अधिक योगदान देगा।

- छह सरकारी विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के साथ बैठक
- आज के तकनीकी युग में विश्वविद्यालयों के डिजिटलीकरण की आवश्यकता
- शिक्षण संस्थानों में स्मार्ट परिसर बनाने पर दिया जाएगा बल

शिक्षा मंत्री रोहित ठाकुर ने कहा कि राज्य सरकार शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने के लिए कृतसंकल्प है और इस दिशा में कई महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि राज्य में शैक्षणिक संस्थानों को पूर्व निर्धारित मापदंडों के अनुसार चरणबद्ध तरीके से 'शैक्षणिक संस्थानों के समूह' के रूप में विकसित किया जा रहा है। राज्य सरकार शिक्षा क्षेत्र में 9560 करोड़ रुपये खर्च कर रही है। उन्होंने कहा कि सरकारी स्कूलों में छात्रों के नामांकन में कमी आई है और इसे सुधारने के प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश की अधिकांश जनसंख्या कृषि और बागबानी पर निर्भर है और फसलों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए नई तकनीक और नवाचार अपनाने से आर्थिकी को और मजबूत किया जा सकता है। राज्य के कृषि और बागबानी विश्वविद्यालयों की इस दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

इससे पूर्व, राज्यपाल के सचिव राजेश शर्मा ने बैठक में राज्यपाल और अन्य गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया और कार्यवाही का संचालन भी किया। सचिव शिक्षा राकेश कंवर ने भी राज्य में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में सुधार के लिए राज्य सरकार द्वारा उठाए जा रहे कदमों की जानकारी दी।

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला के कुलपति प्रो. एस.पी. बंसल, डॉ. वाईएस परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजेश्वर चंदेल, सरदार पटेल विश्वविद्यालय मंडी के कुलपति प्रो. ललित कुमार अवस्थी, हिमाचल प्रदेश तकनीकी विश्वविद्यालय हमीरपुर के कुलपति प्रो. शशि धीमान, अटल मेडिकल विश्वविद्यालय मंडी के डॉ. सुरेन्द्र कश्यप तथा चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के डॉ. नवीन कुमार ने भी इस अवसर पर पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से अपने बहुमूल्य सुझाव दिए।

निराश्रितों की अभिभावक प्रदेश सरकार

स्वास्थ्य, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. (कर्नल) धनी राम शांडिल की अध्यक्षता में गत दिनों मुख्यमंत्री सुख-आश्रय कोष के तहत गठित राज्य स्तरीय समिति की समीक्षा बैठक आयोजित की गई।

बैठक में स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि निराश्रित बच्चों एवं महिलाओं सहित समाज के संवेदनशील वर्ग के कल्याण के प्रति प्रदेश सरकार प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने सरकार गठन के तुरंत बाद 100 करोड़ रुपये के सुख-आश्रय कोष एवं सुख-आश्रय योजना की शुरुआत की। बैठक में योजना के तहत निराश्रित बच्चों को प्रदान की जा रही विभिन्न सुविधाओं की समीक्षा की गई और शिक्षा और विवाह अनुदान के सम्बंध में आए आवेदनों को स्वीकृति प्रदान की गई। बैठक में योजना के तहत भवन निर्माण, कौशल विकास, व्यावसायिक प्रशिक्षण और स्टार्ट-अप के आवेदनों की भी समीक्षा की गई।

बैठक में सचिव सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता आशीष सिंहमार, निदेशक महिला एवं बाल विकास रुपाली ठाकुर, निदेशक अनुसूचित जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं विशेष रूप से सक्षम का सशक्तिकरण किरण भड़ाणा सहित विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

मेले एवं त्योहार आपसी भाईचारा बनाए रखने में सहायक

राजस्व, बागबानी, जनजातीय विकास एवं जन शिकायत निवारण मंत्री श्री जगत सिंह नेगी ने गत दिनों किन्नौर के पूह उपमण्डल में आयोजित किए गए ग्रीष्म महोत्सव के समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि मेले एवं त्योहारों के माध्यम से जनजातीय जिला किन्नौर के लोगों ने कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के बावजूद भी आपसी मेल-जोल व भाईचारा बरकरार है। राजस्व मंत्री ने इस अवसर पर कहा कि वर्तमान राज्य सरकार प्रदेश सहित जनजातीय जिलों की समृद्ध संस्कृति एवं धरोहरों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए प्रतिबद्ध है तथा इनके आयोजनों में पूर्ण सहयोग प्रदान कर रही है।

उन्होंने कहा कि जनजातीय जिला किन्नौर की विविध संस्कृति, रीति-रिवाज, खान-पान व पहरावे को हमारी आने वाली पीढ़ी तक संरक्षित रखने के लिए इन मेले एवं त्यौहारों का आयोजन आवश्यक है। इस अवसर पर श्री जगत सिंह नेगी ने मेला समिति को मेले के सफल आयोजन के लिए तीन लाख रुपये की राशि भी प्रदान की।

सिरमौर जिले में स्थापित होगा राज्य स्तरीय नशा मुक्ति एवं पुनर्वास केंद्र : ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू

प्रदेश सरकार सिरमौर जिले के पच्छाद उपमंडल के कोटला बड़ोग में राज्य स्तरीय आदर्श नशा मुक्ति एवं पुनर्वास केंद्र स्थापित किया जाएगा। यह नशा मुक्ति केंद्र मादक पदार्थों की लत से जूझ रहे लोगों की सहायता करेगा और उन्हें नशीली दवाओं पर अपनी निर्भरता से उबरने तथा आत्मनिर्भरता के साथ समाज में फिर से एक खुशहाल और स्वस्थ जीवन जीने में मदद करेगा।

मुख्यमंत्री ने नशे से निपटने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता पर बल देते हुए कहा कि राज्य सरकार ने युवाओं को मादक पदार्थों के खतरे के बारे में जागरूक करने के लिए विभिन्न कदम उठाए हैं जिसका उद्देश्य उन्हें नशे की लत से बचाना है।

उन्होंने कहा कि आज के दौर में युवाओं को नशे से दूर रखना सबसे बड़ी चुनौती है। उन्होंने कहा कि समाज को भी नशे की लत से जूझ रहे लोगों का मनोबल बढ़ाना चाहिए ताकि वे दृढ़ इच्छाशक्ति से मादक पदार्थों का सेवन छोड़ सकें।

नशा मुक्ति केंद्र में कमरे, शौचालय, भोजन की व्यवस्था, मनोरंजन स्थल, पुस्तकालय, व्यायामशाला और खेल, ध्यान और योग की सुविधाएं भी दी जाएंगी। इसके अतिरिक्त केंद्र में कौशल विकास व व्यावसायिक प्रशिक्षण और इन-हाउस उपचार, भोजन, कपड़े और लॉन्ड्री जैसी अनिवार्य सेवाएं भी प्रदान की जाएंगी। उन्होंने कहा कि इस समग्र दृष्टिकोण का उद्देश्य नशे के आदी लोगों के लिए महत्त्वपूर्ण सहायता और पुनर्वास सेवाओं का मानकीकरण करना है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि नशे से जूझ रहे पुरुष और महिलाओं के लिए इस केंद्र में 100 बिस्तरों की सुविधा होगी। इस केंद्र का उद्देश्य राज्य के युवाओं को नशे से दूर रखना और समाज में सकारात्मक योगदान सुनिश्चित करना है। नशा मुक्ति केंद्र के लिए चयनित स्थल 157 बीघा और 07 बिस्वा में फैला हुआ है। यहां मौजूदा इमारतों को मामूली मरम्मत के साथ फिर से इस्तेमाल किया जा सकता है, वहीं अतिरिक्त बुनियादी ढांचे की योजना भी तैयार की गई है। लोक निर्माण विभाग को कार्य को आगे बढ़ाने के लिए एक विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करने का जिम्मा सौंपा गया है।

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा कि इस केंद्र की स्थापना मादक पदार्थों के दुरुपयोग से निपटने और ऐसे लोगों को मुख्यधारा में लाने की सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। उन्होंने कहा कि विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) को अंतिम रूप दिए जाने के बाद, राज्य सरकार आदर्श नशा मुक्ति एवं पुनर्वास केंद्र के निर्माण के लिए पर्याप्त धनराशि मुहैया करवाएगी।

इसके अतिरिक्त केंद्र में नशे की लत से जूझ रहे व्यक्तियों की उचित देखभाल के लिए पर्याप्त स्टाफ भी सुनिश्चित किया जाएगा।

आईजीएमसी और एआईएमएसएस चमियाना में भरे जाएंगे 489 पद

चिकित्सा क्षेत्र में डॉक्टरों और सहायक कर्मचारियों की कमी को दूर करने के लिए प्रदेश सरकार ने इंदिरा गांधी चिकित्सा महाविद्यालय (आईजीएमसी) शिमला और अटल इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल सुपर स्पेशियलिटी चमियाना (एआईएमएसएस) चमियाना में विभिन्न श्रेणियों के 489 नए पदों का सृजन कर भरने की मंजूरी दी है। इस पहल से जरूरतमंद लोगों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं सुनिश्चित होंगी। इन पदों में सामान्य चिकित्सा में 10 पद, बाल रोग में तीन, आर्थोपेडिक्स, आपातकालीन चिकित्सा और नेत्र विज्ञान में दो-दो पद और त्वचा विज्ञान और ईएनटी में एक-एक पद शामिल हैं।

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा कि अटल इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल सुपर स्पेशियलिटी चमियाना को यूरोलॉजी, कार्डियोलॉजी, नेफ्रोलॉजी, न्यूरोलॉजी, न्यूरोसर्जरी, एंडोक्राइनोलॉजी और गैस्ट्रोएंटरोलॉजी में एक-एक नए पद भरे जाएंगे। उन्होंने कहा कि विशेषज्ञ देखभाल में विस्तार इन महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में रोगियों को विशेष स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। प्रदेश सरकार डॉ. राजेंद्र प्रसाद राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय टांडा में भी विभिन्न श्रेणियों के 462 पदों को भर रही है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने विशेषज्ञ चिकित्सकों के अलावा पर्याप्त पैरामेडिकल और अन्य सहायक कर्मचारियों को भरने का भी निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि इन पदों में 400 स्टाफ नर्स, 43 ऑपरेशन थियेटर सहायक, 11 नर्सिंग ऑर्डरली-सह-ड्रेसर, दो आहार विशेषज्ञ, एक फिजियोथेरेपिस्ट और चार डेटा एंट्री ऑपरेटर शामिल हैं।

गिरिराज
हिमाचल की प्रगति एवं संस्कृति का दर्पण

मनुष्य कर्म से महान होता है, जन्म से नहीं
-चाणक्य

समृद्ध एवं आत्मनिर्भर हिमाचल

राष्ट्रीय पर्व स्वतंत्रता दिवस को साकार करने के लिए लाखों देशभक्तों, स्वतंत्रता सेनानियों व क्रांतिकारियों ने सर्वोच्च बलिदान दिया है। इन महान देशभक्तों ने क्षेत्र, धर्म, जाति व समुदाय से ऊपर उठकर हमें विदेशी दासता से 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता दिलाई। इस पावन दिन हम अपने उन स्वतंत्रता सेनानियों, वीर सैनिकों व क्रांतिकारियों का आदर व सम्मान के साथ श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं, जिनके संघर्ष त्याग और बलिदान के परिणामस्वरूप आज हम स्वतंत्र हैं। यह उन्हीं के सर्वोच्च बलिदान का परिणाम है कि आज हमारा देश स्वतंत्र व सुदृढ़ पहचान बना पाया है। हमारे इस छोटे से पहाड़ी प्रदेश ने भी स्वाधीनता आंदोलन में बड़ी सक्रियता से योगदान दिया है। प्रदेश के स्वाधीनता सेनानियों ने देश के अन्य प्रांतों के राष्ट्र प्रेमियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर स्वाधीनता आंदोलन के इस महायज्ञ में अपनी आहुति डाली। धामी गोली कांड, सुकेत सत्याग्रह, प्रजामंडल आंदोलन तथा पझौता आंदोलन जैसी घटनाओं ने उस समय के राष्ट्रीय नेताओं का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया तथा उन्हें बता दिया कि हिमाचल प्रदेश के शांतिप्रिय लोग भी विदेशी दास्तान एवं रजवाड़ा शाही से मुक्ति चाहते हैं। हालांकि हिमाचल प्रदेश का उदय स्वतंत्रता प्राप्ति के लगभग आठ माह उपरांत हुआ। वर्ष 1948 में प्रदेश के गठन से लेकर 25 जनवरी 1971 को प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा मिलने तक हिमाचल प्रदेश ने विकास के हर क्षेत्र में जो प्रगति की है वह न केवल पहाड़ी राज्यों के लिए एक मिसाल है, अपितु आज इस पहाड़ी प्रदेश की गणना देश के विकसित राज्यों में की जाने लगी है। इसका श्रेय जहां प्रदेश के ईमानदार व मेहनतकश लोगों को जाता है तो वहीं अधिकतर समय सत्ता में रही कांग्रेस सरकारों को भी इसका श्रेय जाता है, जिसने प्रदेश के विकास को सही दिशा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा प्रदेश के गठन के शासन काल में विकास की ठोस नींव रखी। आज हिमाचल प्रदेश ने विकास के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक उपलब्धियां अर्जित की हैं, जो प्रत्येक हिमाचलवासी के लिए गौरव का विषय है। विगत लगभग 20 माह से प्रदेश की बागडोर मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू के हाथों में है। इस अवधि में प्रदेश सरकार ने जिस संवेदनशीलता एवं राजनीतिक परिपक्वता का परिचय दिया है वह निःसंदेह सराहनीय है। कठिन वित्तीय परिस्थितियों तथा पूर्व सरकार के वित्तीय कुप्रबंधन के कारण प्रदेश आर्थिक बदहाली का दंश झेल रहा है। राज्य सरकार ने जहां एक ओर मुख्यमंत्री सुखाश्रय योजना, इंदिरा गांधी प्यारी बहना सुख सम्मान निधि योजना जैसी योजनाएं आरंभ कर जनहितैषी निर्णय लिए वहीं प्रदेश की आर्थिकी को पटरी पर लाने के लिए बिजली व पानी के बिलों में भी दी जा रही संपन्न वर्ग की सब्सिडी का युक्तिकरण कर दृ दृढ़ इच्छा शक्ति का भी परिचय दिया है। प्रदेश सरकार ने जहां युवाओं को रोजगार एवं रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाने के लिए 680 करोड़ रुपये की राजीव गांधी स्टार्टअप योजना शुरू की, वहीं राज्य सरकार के लगभग 1.36 लाख सरकारी कर्मचारियों की सुविधा के लिए ओ.पी.एस. की बहाली कर एक साहसिक फैसला लिया है। प्रदेश के युवाओं की सुविधा के लिए पारदर्शिता के साथ रोजगार के अवसर सुनिश्चित बनाने के लिए राज्य सरकार ने सत्ता संभालते ही हिमाचल प्रदेश कर्मचारी चयन आयोग को भंग कर इसमें युवाओं के भविष्य के साथ हो रहे खिलवाड़ को बंद कर तुरंत हिमाचल प्रदेश राज्य चयन आयोग का गठन किया। इससे प्रदेश के लाखों युवाओं का चयन प्रक्रिया पर विश्वास बना। प्रदेश के स्वच्छ एवं निर्मल पर्यावरण को बनाए रखने के लिए भी राज्य सरकार द्वारा कारगर पहल की गई है सरकार द्वारा प्रदेश को वर्ष 2026 तक देश का हरित ऊर्जा राज्य बनाने के लक्ष्य रखा गया है। प्रदेश के परिवहन निगम को इलेक्ट्रिकल बसें खरीदने के लिए 517 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। प्रदेश में सौर ऊर्जा के दोहन को व्यापक बढ़ावा दिया जा रहा है। युवाओं को भी टैक्सी चलाने के लिए उपदान दिया जा रहा है। प्रदेश के लोगों से शुरू से किसानों का बागबानों की सुविधा के लिए पहली बार तहसील व एवं उप-तहसील स्तर पर विशेष राजस्व लोक अदालतों का आयोजन किया जा रहा है। अभी तक इन अदालतों में लगभग 1.86 लाख राजस्व मामलों का निपटारा कर लोगों को लाभान्वित किया गया है प्रदेश के बागबानों की सुविधा के लिए जहां एक ओर सब आम, किन्नू, माल्टा, संतरा व गलगल जैसे फलों के समर्थन मूल्य में व्यापक वृद्धि की गई है वहीं एक ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए पहली बार सेब की पैकिंग के लिए यूनिवर्सल कार्टन का प्रयोग करने का निर्णय भी लिया गया है। इस निर्णय से प्रदेश के बागबानों को उनके उत्पाद के उचित मूल्य मिल सकेंगे। व्यवस्था परिवर्तन लीक से हटकर काम करने के संकल्प के साथ सत्ता में आई वर्तमान सरकार के इन निर्णयों से निःसंदेह आने वाले वर्षों में सुखद परिणाम आएंगे।

आखिर कैसे आई ये आज़ादी

डॉ. कमल के. प्यासा

आज हम छाती तान कर और सिर उठा कर बड़े ही गौरवान्वित होकर अपने आप को स्वतंत्र भारत के नागरिक होने का दम भरते हैं, लेकिन कभी आप ने यह भी सोचा है कि यह आजादी हमें कैसे मिली है ? बहुत कुर्बानियां दी हैं हमारे देश के बहादुर नौजवानों ने। कितने ही हंसते-हंसते शहीद हो गए, कितनों ने अपनी छाती पर गोलियां खाईं और न जाने कितने फांसी पर लटक गए ? क्या बीती होगी हमारे उन तमाम शहीदों के घर परिवार वालों पर ? बड़ा दुःख होता है और आज हम आजादी का ये जश्न उनकी बदौलत ही तो मना रहे हैं। आज से ठीक 76 वर्ष पूर्व, 15 अगस्त 1947 के दिन हमारा देश अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त हुआ था। मुक्त क्या देश के तीन टुकड़े करके और इधर सांप्रदायिक दंगे फसादों में हमें धकेल कर , चालबाज अंग्रेज अंदर ही अंदर खुश हो रहे थे।

देश पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादेश), पश्चिमी पाकिस्तान व भारत में बांट दिया गया था। विस्थापितों के आने-जाने से न जाने कितने घर परिवार उजड़ गए, कितने बिछड़ गए और कितने खून खराबे में मारे गए! बस ये कुछ थोड़ी सी जानकारी (विस्थापन व 15 अगस्त की आजादी की) जो मुझे मेरे माता-पिता, दादा-दादी व नानी-नाना से मिली थी बता दी, क्योंकि मैं भी तो उस समय अभी गोदी में ही था। हां, इधर अखंड भारत का मानचित्र देखने पर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि कभी हमारा देश भारत इतना विशाल व दूर दूर तक अपनी सीमाएं फैलाए था। इसमें अफगानिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, बर्मा, थाईलैंड, नेपाल, भूटान, तिब्बत, जावा, सुमात्रा, मालदीव व कंबोडिया आदि शामिल थे और आज अपने सिकुड़ते हुए देश के क्षेत्रफल को देख कर हैरानी होती है। इतिहास के पन्नों को पलटने से पता चलता है कि पिछले 2500 वर्षों में देश पर विदेशी हमलों के परिणाम स्वरूप इसका 24 बार विभाजन हो चुका है, जिनमें एक हजार ई. में महमूद गजवानी का आक्रमण व लूट, 1191 ई. की मुहम्मद गौरी की लूट, 1400 ई की मंगोलों (तैमूर का आक्रमण) फिर 1526 ई. में बाबर के आक्रमण के पश्चात यहीं मुगल साम्राज्य की स्थापना करना से लेकर आगे 1700 ई. में यहां अंग्रेजों का आना और अपना साम्राज्य फैलाना शामिल है। इस प्रकार यूनानी विदेशियों व मुगलों के आक्रमण व अंग्रेजों, डचों तथा पुर्तगालियों की लूटपाट से देश को न जाने कितनी बार विभाजन का शिकार होना पड़ा। बार-बार प्रताड़ित होने के बावजूद भी भारतीयों का मनोबल कभी भी डगमगाया नहीं बल्कि अपनी आजादी के लिए हमेशा लड़ते ही रहे। इन्हीं लड़ाइयों में प्रमुख आ जाती है 1857 ईस्वी की प्रसिद्ध विद्रोह की लड़ाई जो कि मेरठ से शुरू हो कर सारे देश में फ़ैल गई थी। इसके पश्चात किसानों द्वारा कई विद्रोह चलाए गए जिनमें नील विद्रोह 1859 -1860 ईस्वी में बंगाल के किसानों द्वारा चलाया गया था। 13 अप्रैल 1919 ईस्वी को अमृतसर में जालियांवाला कांड होने के पश्चात सारे देश में भारी रोष व विद्रोह की लहर फैल गई।

बार-बार प्रताड़ित होने के बावजूद भी भारतीयों का मनोबल कभी डगमगाया नहीं बल्कि अपनी आजादी के लिए हमेशा लड़ते ही रहे। इन्हीं लड़ाइयों में प्रमुख आ जाती है 1857 ई. की प्रसिद्ध विद्रोह की लड़ाई जो कि मेरठ से शुरू हो कर सारे देश में फैल गई थी।

प्रथम फरवरी 1922 ईस्वी को चौरा चौरी कांड के फलस्वरूप जब पुलिस के एक दरोगा द्वारा क्रांतिकारियों की पिटाई की गई तो, लोग भड़क उठे और उन्होंने पुलिस वालों पर हमला बोल दिया, परिणाम स्वरूप इसमें 260 लोग मारे गए बाद में इसमें 23 पुलिस वालों को भी मार दिया गया था। अमृतसर के जालियां वाला कांड के विरुद्ध 1920 ई 0से 1922 ईस्वी तक असहयोग आंदोलन चलाया गया। 1929 ईस्वी में पूर्ण स्वतंत्रता की मांग रखी गई। ऐसे ही फिर 1930 ईस्वी में सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाया गया। 12 मार्च 1930 को महात्मा गांधी की नेतृत्व में नमक के लिए सत्याग्रह करते हुए दांडी यात्रा शुरू की गई जो की कई दिनों तक चलती रही। आगे 1942 ईस्वी में नेता जी सुभाष चन्द्र बोस द्वारा आजाद हिंद फौज का गठन किया गया और आजादी की गतिविधियां देश से बाहर भी की जाने लगी। 8 अगस्त 1942 ईस्वी को भारत छोड़ो आन्दोलन को तेज कर दिया गया। आखिर सभी के कठिन प्रयासों व अमूल्य बलिदानों ने रंग लाया और 15 अगस्त 1947 को देश आजाद हो गया। 1950-51 ईस्वी की गणना के अनुसार (खून खराबे के बावजूद) इधर से 72 लाख 26 हजार मुसलमान पाकिस्तान को तथा उधर से इधर 72 लाख 49 हजार हिंदू व सिख विस्थापित होकर स्वतंत्र भारत पहुंचे थे। तभी से इस दिन को स्वतंत्रता दिवस के रूप में 15 अगस्त को बड़े ही धूमधाम से मनाया जा रहा है।

15 अगस्त की पूर्व संध्या को देश के राष्ट्रपति का संदेश देश वासियों के नाम से प्रसारित किया जाता है। अगले दिन अर्थात 15 अगस्त को देश के प्रधानमंत्री का संदेश देशवासियों के लिए लाल किले से दिया जाता है। प्रधानमंत्री द्वारा ही झंडा फहरा कर, 21 तोपों के साथ सलामी दी जाती है, सांस्कृतिक और रंगारंग कार्यकर्मों के पश्चात राष्ट्र गान होता है। इनके साथ ही साथ जगह जगह रेडियो टेलीविजन आदि पर देश भक्ति के कार्यक्रम व गीतों का प्रसारण किया जाता है। देश के सभी राज्यों के मुख्यालयों में मुख्यमंत्रियों द्वारा व शहरों कस्बों में प्रशासनिक अधिकारियों व गणमान्य नागरिकों द्वारा झंडे की रस्म के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों व परेड आदि का आयोजन किया जाता है। सभी सरकारी संस्थानों में भी झंडे की रस्म अदा की जाती है। सभी सरकारी व मुख्य स्थलों को रोशनियों से सजाया जाता है और कहीं कहीं आतिशबाजी की भी खूब झलक देखने को मिल जाती है। भारत हमारा अपना देश है। हम इसी स्वतंत्र देश के नागरिक हैं , तो फिर क्यों न इस दिन को हम खूब जोश से मिल कर मनाएं।

मौसमी घटनाएं विनाशकारी आपदाओं का कारण

राजन कुमार शर्मा

हिमाचल प्रदेश राज्य भारत के उत्तर पश्चिम क्षेत्र में स्थित एक सुंदर एवं रमणीक पर्यटन स्थल है। इस राज्य में विभिन्नता में एकता देखने को मिलती है जैसे कि यहां पर ऊंचे-ऊंचे पर्वत, पठार, दर्रे, नदियां, समतल क्षेत्र आदि विद्यमान है। अतः जाहिर है कि इस तरह की विभिन्नता होने पर राज्य में आपदाओं से संवेदनशीलता और अधिक बढ़ जाती है। अगर बात करें पिछले लगभग एक दशक से यह वर्ष 2016 से अब तक राज्य में विभिन्न प्रकार की आपदाओं जिसमें की प्राकृतिक एवं मानव निर्मित आपदाएं शामिल हैं उनमें बढ़ोतरी देखने को मिली है। यदि इसका विस्तृत रूप से अवलोकन एवं विश्लेषण किया जाए तो पाया गया कि इन आपदाओं की बढ़ोतरी का कारण जलवायु परिवर्तन के अतिरिक्त पिछले कुछ समय से चरम मौसमी घटनाओं का एकाएक बढ़ जाना है। इस दशक में सबसे भयानक त्रासदी राज्य में वर्ष 2023 के दक्षिण पश्चिम मानसून के दौरान देखी गई थी जिसमें की राज्य को लगभग 12000 करोड़ रुपये का नुकसान तथा लगभग 350 से अधिक मौतों का आकलन आपदा उपरांत किया गया। यह इस दशक की अब तक की सबसे बड़ी त्रासदी थी जिसमें की इतनी अधिक स्तर पर जान-माल एवं मानसिक रूप से राज्य के लोगों को व्यथित किया।

यदि हम इस वर्ष में दक्षिण पश्चिम मानसून के दौरान की बात करें तो हिमाचल में मानसून के दौरान 11 अगस्त 2024 तक लगभग 9 करोड़ रुपये का नुकसान, 185 मौतें, 325 घायल, 46 लोग लापता हुए हैं। इस सीजन के दौरान चरम मौसमी घटनाओं के द्वारा राज्य में 31 जुलाई एवं 11 अगस्त को अधिकतर जिलों में भारी नुकसान देखने को मिला। इस दौरान सबसे अधिक नुकसान राज्य के जिला कुल्लू, मंडी, शिमला (समेज,बागीपुल) एवं ऊना जिला में अधिक मात्रा में रिकॉर्ड किया गया। जिला सिरमौर में 11 एवं 12 अगस्त 2024 को हुई भारी बरसात से जिला में लगभग 13 करोड़ 57 लाख 8 के लगभग विभिन्न विभागों को नुकसान हुआ। इसके अतिरिक्त देखने में पाया गया कि पिछले कुछ वर्षों से जिला सिरमौर में एकाएक बदल फटने की घटनाएं सामने आई हैं जिसमें कि यदि हम आंकड़ों की बात करें तो 25 सितंबर 2022 को सिरमौर के मानगढ़ बड़ू साहब क्षेत्र में बादल फटने से एक व्यक्ति की मृत्यु हुई, 10 अगस्त 2023 को सिरमौर के मालजी गांव में पांच व्यक्तियों के मलबे में फंसने की घटना सामने आई थी जिसे की बाद में बचाव दलों के द्वारा सुरक्षित निकाल लिया गया था, इसके साथ ही 12 अगस्त 2023 को जिला सिरमौर के नाहन एवं पांवटा साहिब उपमंडलों के अंतर्गत गांव कडईवाला व सिरमौरी ताल में बादल फटा तथा इससे सिरमौर ताल में एक ही घर के पांच सदस्यों की मृत्यु हुई। यदि हम वर्ष 2024 की बात करें तो हाल ही में 19 जुलाई 2024 को पांवटा साहिब क्षेत्र के अंतर्गत दाना गांव के समीप ही बादल फटने एवं एकाएक बाढ़ आने से स्थानीय मंदिर बह गया एवं एक व्यक्ति की मृत्यु हुई थी। इन उपरोक्त घटनाओं से यह जान लेना सही है कि जिस तरह से एक्सट्रीम वेदर इवेंट होने की वजह से राज्य एवं जिला में पिछले कुछ समय से मौसम की इन घटनाओं से विभिन्न प्रकार की आपदाओं की संख्या बढ़ रही है जिससे कि आने वाले समय में भी जिला में इस तरह की घटनाएं घटित होने की संभावनाएं बनी है। बता दें कि जब किसी भी एक क्षेत्र में किसी समय एक घंटे में 100 मिली मीटर से अधिक बारिश दर्ज की जाए तो उसे ही बादल फटने की घटना कहा जाता है जिससे कि एकाएक उसे क्षेत्र एवं आसपास के क्षेत्र में तीव्र बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न होती है जो की जान एवं माल एवं विनाशकारी आपदा का रूप धारण कर लेती है। पानी से भरे हुए यह बादल जब पहाड़ों के बीच में फंस जाते हैं तो अधिक घनत्व होने के कारण एक ही स्थान पर बरसाना शुरू कर देते हैं जिससे कि बादल फटने की घटनाएं आजकल न केवल ऊंचाई वाले क्षेत्र बल्कि निकले समतल क्षेत्र में भी देखने को मिल रहे हैं।

राज्य में सबसे भयानक त्रासदी वर्ष 2023 के दक्षिण पश्चिम मानसून के दौरान देखी गई थी जिसमें राज्य को लगभग 12000 करोड़ रुपये का नुकसान तथा लगभग 350 से अधिक मौतों का आकलन आपदा उपरांत किया गया। यह इस दशक की अब तक की सबसे बड़ी त्रासदी थी जिसने लोगों को मानसिक रूप व्यथित कर दिया।

हमें इस तरह की आपदाओं से बचने के लिए समय-समय पर मौसम विज्ञान केंद्र एवं आपदा प्रबंधन प्राधिकरणों द्वारा जारी परामर्शों एवं चेतावनी संदेशों का पालन करना चाहिए एवं खराब मौसम की स्थिति में अत्यधिक आवश्यक होने पर ही अपने घरों से बाहर जाना चाहिए, अनावश्यक यात्राओं एवं तीर्थ यात्राओं को करने से बचना चाहिए। इस तरह से सभी लोगों के सहयोग से राज्य में आपदाओं से होने वाले जान एवं माल के नुकसान को कम किया जा सकता है।

कृषक मित्र

बैंगन में लगने वाले प्रमुख कीटों व रोगों का प्रबन्धन

बैंगन हिमाचल प्रदेश के निचले तथा मध्य क्षेत्रों की एक महत्त्वपूर्ण फसल है। निचले क्षेत्रों में इसकी खेती मार्च से जून या बरसात के समय में की जाती है जबकि मध्य क्षेत्रों में इसे अप्रैल से अक्तूबर तक उगाया जाता है। प्रदेश में इसकी खेती लगभग एक हजार हेक्टेयर में की जाती है व प्रतिवर्ष लगभग 18 हजार टन उत्पादन होता है।

बरसात से पतझड़ ऋतु में किसान इस फसल को लगाकर अधिक लाभ अर्जित कर रहे हैं। परन्तु पिछले कुछ समय से इस फसल में हानिकारक रोगों व कीटों के प्रकोप से पैदावार व उत्पादन में काफी कमी आंकी गई है व किसानों के आर्थिक लाभ में कमी देखी गई है।

यदि किसान भाई इस फसल में लगने वाले रोगों व कीटों की सही पहचान करके समय पर उनका सही प्रबन्धन करें तो न केवल उत्पादन में वृद्धि हो सकती है अपितु रोगनाशक व कीटनाशक दवाओं के अन्धाधुन्ध प्रयोग को भी कम किया जा सकता है। साथ ही पर्यावरण की सुरक्षा के साथ-साथ फसल लागत को भी कम किया जा सकता है।

अतः इसके लिए समेकित नाशीजीव प्रबन्धन के प्रति किसानों को जागरूक करने की अति आवश्यकता है। प्रस्तुत लेख में बैंगन में लगने वाने प्रमुख रोगों व कीटों के एकीकृत प्रबन्धन की जानकारी दी जा रही है जो कि निम्नलिखित है।

प्रमुख रोग

कमरतोड़ रोग : नर्सरी में पौध बीज से निकलते समय या बाद में जमीन की सतह के पास रोग ग्रसित होने के कारण नीचे गिर कर मर जाती है। नमी अधिक होने की अवस्था में यह रोग अधिक फैलता है।

प्रबन्धन : नर्सरी की क्यारियों को फार्मेलिन दवाई (एक भाग दवाई तथा सात भाग पानी) से रोपाई के 15-20

बैंगन प्रदेश के निचले तथा मध्य क्षेत्रों की एक महत्त्वपूर्ण फसल है। निचले क्षेत्रों में इसकी खेती मार्च से जून या बरसात के समय में की जाती है जबकि मध्य क्षेत्रों में इसे अप्रैल से अक्तूबर तक उगाया जाता है। प्रदेश में इसकी खेती लगभग एक हजार हेक्टेयर में होती है व प्रतिवर्ष लगभग 18 हजार टन उत्पादन होता है। बरसात से पतझड़ ऋतु में किसान इस फसल को लगाकर अधिक लाभ अर्जित कर रहे हैं।

दिन पहले शोधित करें तथा सात-दस दिनों तक पॉलीथीन की शीट से ढककर रखें। अगले 15 दिनों तक इसकी गन्ध खत्म करने के लिए क्यारियों को खुला रखें तथा बाद में बिजाई करें। नर्सरी की क्यारियों को पॉलीथीन शीट से 45 दिन तक ढककर सौरकरण करने से भी शुद्धिकरण किया जा सकता है।

स्वस्थ व प्रमाणित बीज का ही प्रयोग करें व बीज उपचार बैविस्टीन 2.5 ग्राम या थीरम तीन ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से करने के बाद ही बिजाई करें।

क्यारियों को मैन्कोजैब (इण्डोफिल एम-45) 2.5 ग्राम व कार्बेण्डाजिम (बैविस्टीन) एक ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से रोग के लक्षण प्रकट होने पर सिंचाई करें।

फाइटोफथोरा फल सड़न रोग : फल अग्रिम भाग से सड़ने आरम्भ हो जाते हैं तथा उन पर सफेद रूंई की तरह कवक की बढ़वार नजर आती है।

प्रबन्धन : रिडोमिल एम जैड या मैटको (2.5 ग्राम) प्रति लीटर पानी का छिड़काव मॉनसून से तुरंत पहले करें। मॉनसून आने पर मैन्कोजैब 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें तथा आवश्यकता पड़ने पर दस दिन बाद पुनः छिड़काव करें।

फोमोप्सिस सड़न व ब्लाइट :

इस रोग के लक्षण पत्तें पर गोल भूरे धब्बे के रूप में दिखाई देते हैं। फलों पर हल्के पीले गढ्ढेदार धब्बे बनते हैं जो फल को सड़ा देते हैं।

✍ पंकज सूद
✍ डी.एस. यादव

प्रबन्धन : स्वस्थ व प्रमाणित बीज का प्रयोग करें।

बीज का उपचार थीरम (तीन ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज की दर से करें।

फसल पर मैन्कोजैब 2.5 ग्राम, कार्बेण्डाजिम एक ग्राम या कम्पैनियन दो ग्राम या बैविस्टीन एक ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से फूल आने पर 15 दिनों के अन्तराल पर तीन बार छिड़काव करें। मैन्कोजैब 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव फल लगने पर प्रति सप्ताह करें लेकिन फल तुड़ाई के समय यह छिड़काव कदापि न करें।

तीन वर्षीय फसल चक्र अपनाएं।

जीवाणुज मुरझान रोग : यह रोग अधिक नमी तथा गर्म मौसम में अधिक पनपता है। पौधे बिना पीला पड़े अचानक मुरझा जाते हैं। रोग ग्रसित पौधों के तने को काटने पर उनके संवाहक उत्तक भूरे दिखाई देते हैं।

प्रबन्धन : रोग रोधी किस्में जैसे अरका निधि, अरका केशव व पूसा परपल क्लस्टर लगाएं व रोग रहित पौध की रोपाई करें।

रोगी पौधों के अवशेषों को समूल उखाड़कर नष्ट कर दें। जल की निकासी का उचित प्रबन्धन करें। तीन वर्षीय फसल चक्र अपनाएं व जिन खेतों में रोग का प्रकोप हो वहां पर तीन से चार वर्ष तक बैंगन के अतिरिक्त शिमला मिर्च, मिर्च व टमाटर की फसल को न लगाएं।

गर्मियों में पॉलीथीन शीट से 45 दिन तक सौरकरण करने से भी रोग के रोगाणुओं को समाप्त किया जा सकता है।

कीट : टहनी एवं फल छेदक कीट : शुरू में इस कीट की मादा टहनियों के अग्र कोमल भागों में अण्डे देती है जिससे सुण्डियां निकलकर टहनियों में घुसकर अन्दर की कोशिकाओं को नष्ट कर देती है जिसके फलस्वरूप पौधों की कोमल टहनियां सूख कर लुड़क जाती हैं।

बाद में विकसित हो रहे फल में भी सुण्डियां बाह्य दल पुजों द्वारा घुस जाती हैं लेकिन बाहर निशान नहीं छोड़ती हैं। सुण्डियों के बाहर निकलने से फलों में बड़े-बड़े छेद हो जाते हैं।

प्रबन्धन : क्षतिग्रस्त टहनियों व फलों को निकालकर दबा या जला दें।

पौधों की टहनियों पर जैसे ही कीट के लक्षण प्रकट हों वैसे ही एक मिलीलीटर साइपरमैथ्रिन (दस ई. सी) का छिड़काव प्रति लीटर पानी की दर से करें। फिरोमोन प्रपंच का प्रयोग करें तथा उसमें एकत्रित पतंगों को नष्ट कर दें।

यह सावधानी रखें कि छिड़काव के एक सप्ताह तक फलों की तुड़ाई न करें और सभी मण्डी योग्य एवं कीटग्रसित फलों व टहनियों को छिड़काव से पहले तोड़ लें।

माईट व जैसिड : माईट के प्रकोप से पत्तों पर सफेद चकते बनते हैं तथा पौधे की वृद्धि प्रभावित होती है जबकि जैसिड के शिशु एवं प्रौढ़ पत्तियों की निचली सतह से कोशिका का रस चूसते है और पत्ते ऊपर की ओर मुड़कर सूख जाते हैं।

प्रबन्धन : अधिक प्रकोप होने पर दो मिलीलीटर डाइकोफोल प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

हड्डा बीटल : इस कीट के शिशु एवं प्रौढ़ पत्तियों के बीच से हरे पदार्थ को खा जाते हैं जिससे पत्तियां कंकाल की तरह दिखती हैं व बाद में गिर जाती हैं।

प्रबन्धन : कीट के प्रबन्धन के लिए एक मिलीलीटर साइपरमैथ्रिन (दस ई.सी.) प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

जड़गांठ सूत्रकृमि : यह सूक्ष्म जीव होते हैं जो पौधों की जड़ों पर पलते हैं व उन्हें क्षति पहुंचाते हैं। ग्रसित पौधों की जड़ें मोटी हो जाती हैं व उन पर गांठे बन जाती हैं। पौधों की बढ़वार रूक जाती है व पौधे के उपरी भाग पीले पड़ने लगते हैं।

इसका संक्रमण खेतों में कहीं-कहीं होता है। जहां इसका अधिक प्रकोप हो वहां पौधों पर पानी की कमी के लक्षण जैसे पत्तियों का मुड़ना तथा दिन में अस्थाई रूप से पौधे मुरझा जाते हैं।

प्रबन्धन : खेत में तैयारी के समय कार्बोफ्यूरान 2.4 किलोग्राम प्रति बीघा मिलाएं। प्रभावित खेतों में बैंगन तथा इसी कुल की अन्य सब्जियां जैसे टमाटर, शिमला मिर्च, मिर्च आदि फसलें न उगाएं।

हमेशा सूत्रकृमि रहित पौधशाला से बिना गांठ वाली जड़ों के पौधे लगाएं। सब्जियों के साथ अन्न की फसल विशेषकर धान का फसल चक्र अपनाने से सूत्रकृमि की संख्या कम हो जाती है। उपरोक्त दर्शाए गए प्रबन्धन के तरीकों को अपनाकर सब्जी उत्पादक अधिक लाभ अर्जित कर अपनी आजीविका को सुदृढ़ कर सकते हैं।

उत्पादन व वास्तुकला का संयोजन

ऊर्ध्वाधर खेती

ऊर्ध्वाधर (वर्टिकल) खेती खड़ी परतों में फसल उगाने की एक उन्नत तकनीक और गहन कृषि पद्धति है, इससे उत्पादन में तेजी से वृद्धि हो सकती है। ऊर्ध्वाधर खेती खाद्य उत्पादन बढ़ाने, उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों को बनाए रखने, सुरक्षा और टिकाऊ शहरी खेती में योगदान देने के लिए फायदेमंद हो सकती है। हाइड्रोपोनिक्स, एरोपोनिक्स और एक्वापोनिक्स जैसी हालिया तकनीकों के साथ वर्टिकल फार्मिंग का भविष्य उज्ज्वल प्रतीत होता है। उच्च तकनीक प्रणालियां खेती और खाद्य उत्पादन में बदलाव लाती हैं और शहरी खेती के लिए आदर्श हैं क्योंकि वे रखरखाव को कम करती हैं और उपज को अधिकतम करती हैं। ऊर्ध्वाधर खेती में तेजी से बढ़ने और अधिक उपज देने के लिए फसलों को पर्लाइट, कोको-पीट, वर्मीक्यूलाइट आदि जैसे विभिन्न तरीकों का उपयोग करके उगाया जाता है। इस ऊर्ध्वाधर खेती के लिए सब्जियां सबसे उपयुक्त हैं, क्योंकि ये कम अवधि की होती हैं और उच्च शुद्ध रिटर्न प्रदान करती हैं।

ऊर्ध्वाधर खेती के प्रकार : बाहरी ऊर्ध्वाधर खेती : इसमें स्थानीय सामग्री के साथ वर्टिकल सहायक संरचनाएं बनाकर सब्जियों की खेती की जाती है। इसमें जस्ती लोहे के तार के साथ बांस की संरचनाएं बनाकर सब्जियां उगाई जाती हैं।

इनडोर ऊर्ध्वाधर खेती : इनडोर ऊर्ध्वाधर खेती में पौधों की वृद्धि का समर्थन करने वाली विभिन्न निश्चित या स्थायी संरचनाएं शामिल होती हैं। मुख्य रूप से सारी खेती पॉली-हाउस, नेट हाउस, शेड नेट, प्लास्टिक शीट से ढके बांस से बने ढांचों के नीचे की जाती है। इसमें हाइड्रोपोनिक्स, एरोपोनिक्स, एक्वापोनिक्स शामिल हैं।

ऊर्ध्वाधर खेती के लिए उपयुक्त फसलें

आमतौर पर ऊर्ध्वाधर संरचनाओं में उगाए जाने वाले पौधे वे होते हैं जिनकी वृद्धि सीधी होती है, वे गैर-झाड़ीदार प्रकार के होते हैं और तने के साथ-साथ फल देते हैं। इसमें सब्जियां, फूल, जड़ी-बूटियां और कुछ औषधीय पौधे जो कम ऊर्ध्वाधर स्थान लेते हैं जैसे सलाद, टमाटर, खीरा, मीठी मिर्च, पुदीना, धनिया, पालक, स्ट्रॉबेरी आदि शामिल हैं।

ऊर्ध्वाधर खेती की तकनीकें :

ऊर्ध्वाधर फार्म विभिन्न आकृतियों और आकारों में आते हैं, जिनमें बुनियादी दो-स्तरीय या दीवार पर लगे ढांचे से लेकर कई मंजिल ऊंचे विशाल संरचनाए शामिल हैं। लेकिन सभी ऊर्ध्वाधर खेत पौधों को पोषक तत्त्व प्रदान करने के लिए तीन मिट्टी-मुक्त प्रणालियों हाइड्रोपोनिक्स, एरोपोनिक्स, या एक्वापोनिक्स में से एक का उपयोग करते हैं। निम्नलिखित जानकारी इन तीन संरचनाओं की व्याख्या करती है जो बढ़ रही हैं :

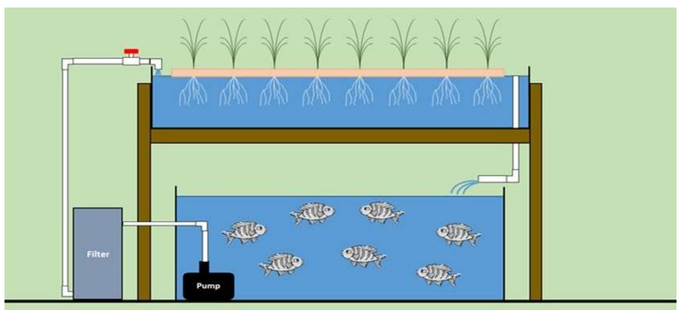

हाइड्रोपोनिक्स : मिट्टी के बिना पौधे उगाने की विधि हाइड्रोपोनिक्स को संदर्भित करती है जो ऊर्ध्वाधर खेतों में उपयोग की जाने वाली प्रमुख प्रणाली है। पौधों की जड़ें तरल में डूबी रहती हैं। हाइड्रोपोनिक प्रणालियों में नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, सल्फर, पोटेशियम, कैल्शियम और मैग्नीशियम जैसे मैक्रोन्यूट्रिएंट्स और आयरन, क्लोरीन, मैंगनीज, बोरान, जस्ता, तांबा और मोलिब्डेनम जैसे ट्रेस तत्त्वों वाले समाधान हैं। इसके अलावा, जड़ों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए मिट्टी के विकल्प के रूप में अक्रिय (रासायनिक रूप से निष्क्रिय) मीडिया जैसे गंदगी, रेत और चूरा का उपयोग किया जाता है। हाइड्रोपोनिक्स के लाभों में प्रति क्षेत्र उपज बढ़ाने और पानी के उपयोग को कम करने की क्षमता शामिल है।

✍ बलबीर सिंह डोगरा
✍ अंजली कुमारी

एरोपोनिक्स : 1990 के दशक में, नासा को अंतरिक्ष में पौधे उगाने के कुशल तरीकों की खोज करने में रुचि थी और उसने ''एरोपोनिक्स'' शब्द गढ़ा, जिसे ''मिट्टी के बिना और हवा-धुंध वाले वातावरण में बहुत कम पानी के बिना पौधे उगाना'' के रूप में परिभाषित किया गया था। ऊर्ध्वाधर खेती की दुनिया में एरोपोनिक प्रणालियां अभी भी एक अपवाद हैं, लेकिन वे काफी रुचि प्राप्त कर रही हैं। सबसे प्रभावी हाइड्रोपोनिक प्रणालियों की तुलना में 90 प्रतिशत तक कम पानी के साथ, एरोपोनिक्स प्रणाली ऊर्ध्वाधर खेतों के लिए अब तक की सबसे कुशल पौधे उगाने वाली प्रणाली है।

एक्वापोनिक्स : एक्वापोनिक्स शब्द दो शब्दों के मेल से बना है: एक्वाकल्चर, मछली पालन का जिक्र, और हाइड्रोपोनिक्स, मिट्टी मुक्त पौधों को उगाने की तकनीक। एक्वापोनिक्स प्रणाली हाइड्रोपोनिक प्रणाली को एक कदम आगे ले जाती है, पौधों और मछलियों के साथ समान आवास को एकीकृत करती है। इनडोर तालाबों में, पोषक तत्त्वों से भरपूर अपशिष्ट उत्पन्न करने के लिए मछलियों को पाला जाता है, जिसका उपयोग ऊर्ध्वाधर कृषि पौधों के लिए फीड स्रोत के रूप में किया जाता है। इसके अलावा, पौधे अपशिष्ट जल को निकालते हैं और शुद्ध करते हैं जिसे मछली तालाबों में पुनर्चक्रित किया जाता है।

ऊर्ध्वाधर खेती के लाभ :

- अधिक पैदावार
- जल एवं उर्वरक की बचत
- रोजगार सृजन
- किसान की आय में वृद्धि
- पूरे वर्ष उत्पादन
- पारंपरिक तरीकों की तुलना में साफ-सुथरा उत्पादन
- फसल खराब होने की कम संभावना

इससे पर्यावरण पर कम बोझ पड़ता है क्योंकि प्राकृतिक जल स्रोतों में नाइट्रोजन (एन) और फॉस्फोरस (पी) का प्रवाह नहीं होता है।

ऊर्ध्वाधर खेती में चुनौतियां :

बुनियादी ढांचे की स्थापना में भारी निवेश। विभिन्न फसलों की जलवायु या पोषण संबंधी आवश्यकताएं अलग-अलग होती हैं इसलिए मिश्रित खेती संभव नहीं है। क्षैतिज खेती में उगाई जाने वाली सभी फसलों को ऊर्ध्वाधर संरचनाओं के नीचे उगाया जाना संभव नहीं है। क्षैतिज या खुले मैदान की खेती की तुलना में आधुनिक ऊर्ध्वाधर खेती संरचना में श्रम लागत, रखरखाव लागत, ऊर्जा लागत आदि परिवर्तनीय लागत बहुत अधिक है। क्रॉस-परागण जैसी प्राकृतिक प्रक्रियाओं को मैन्युअल रूप से करना पड़ता है और इसके लिए एक विशिष्ट समय पर उच्च जनशक्ति की आवश्यकता होती है, जो उच्च लागत उन्मुख होती है। इकाई में जगह की कमी होती है, तो कुछ प्रौद्योगिकियां सुविधा प्रदान कर सकती हैं, जो सीमित स्थानों के लिए विशिष्ट हैं रासायनिक उर्वरकों और रेडीमेड पोषक तत्त्व समाधान और उच्च उपज वाले संकरों पर निर्भरता के कारण ऐसी संरचनाओं में सब्जियों का जैविक उत्पादन मुश्किल है।

ऊर्ध्वाधर खेती निश्चित रूप से भारतीय खेती में महत्त्वपूर्ण समस्याओं जैसे कृषि उपज की आपूर्ति में कमी, कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग, उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग, मिट्टी की गिरावट और यहां तक कि बेरोजगारी की समस्या का समाधान है। ऊर्ध्वाधर खेती ने वास्तुकला और शहरी डिजाइनिंग के लिए नए अवसर प्रदान किए हैं। शहरी डिजाइनरों ने शहरों को हरित और सुरक्षित बनाने में इसके महत्त्व को प्रमाणित किया है। खाद्य उत्पादन और वास्तुकला के संयोजन से उर्ध्वाधर खेती कई कार्यों में सक्षम इमारतों का निर्माण करने में मदद करता है।

78वें स्वतंत्रता दिवस पर मुख्यमेंत्री का आलेख

साहसिक फैसलों से पूरा होगा समृद्ध-आत्मनिर्भर हिमाचल का संकल्प

स्वतंत्रता संग्राम में प्रदेश के सपूतों का अविस्मरणीय योगदान

हमारी सरकार की पहली जिम्मेदारी समाज के संवेदनशील वर्गों का संरक्षण और कल्याण सुनिश्चित करना है। मुख्यमंत्री सुख-आश्रय योजना शुरू कर छह हजार बच्चों को 'चिल्ड्रन ऑफ द स्टेट' के रूप में अपनाकर सरकार इनकी पढ़ाई, जेब खर्च का जिम्मा उठा रही है।

ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू
मुख्यमंत्री, हिमाचल प्रदेश

हिमाचल के मेहनती और ईमानदार लोगों के बुलंद हौसलों और मेहनत के कारण हम विकास के पथ पर आगे बढ़ते रहे। हमें गर्व है कि हिमाचल प्रदेश आज दूसरे पहाड़ी राज्यों के लिए विकास का आदर्श बनकर उभरा है।

भारत के 78वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। यह हमारे लिए बहुत गर्व और हर्ष का दिन है क्योंकि इसी शुभ दिन एक लम्बे संघर्ष के उपरान्त भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी। हम उन महान स्वतंत्रता सेनानियों, वीर सैनिकों तथा राष्ट्र-निर्माताओं के प्रति कृतज्ञ हैं जिनके अथक प्रयासों के फलस्वरूप हमारा देश आज अपनी मज़बूत और विशेष पहचान बना पाया है।

हिमाचल प्रदेश के स्वतंत्रता सेनानियों ने भी आज़ादी के आंदोलनों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेकर दमनकारियों का डटकर सामना किया। देश की एकता एवं अखंडता को बनाए रखने के लिए विकट परिस्थितियों में हमारे वीर सपूतों ने अदम्य साहस का परिचय दिया, जिसके लिए उन्हें सर्वोच्च सम्मान प्रदान किए गए।

हमारे लिए गर्व की बात है कि देश के पहले परमवीर चक्र से प्रदेश के वीर सपूत मेजर सोमनाथ शर्मा को नवाज़ा गया। हिमाचल प्रदेश से ही संबंध रखने वाले कर्नल डी.एस. थापा, कैप्टन विक्रम बत्तरा तथा सूबेदार मेजर संजय कुमार को भी परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।

हिमाचल के नौजवान देश की सेनाओं का हमेशा महत्त्वपूर्ण अंग रहे हैं और हमारी सरकार वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानियों, सैनिकों, पूर्व सैनिकों तथा उनके परिजनों को हर संभव सहायता प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

हिमाचल के मेहनती और ईमानदार लोगों के बुलंद हौसलों और मेहनत के कारण हम विकास के पथ पर आगे बढ़ते रहे। हमें गर्व है कि हिमाचल प्रदेश आज दूसरे पहाड़ी राज्यों के लिए विकास का आदर्श बनकर उभरा है।

प्रदेश की जनता के भरपूर सहयोग और आशीर्वाद से 11 दिसम्बर, 2022 को कांग्रेस सरकार ने राज्य में जन सेवा का दायित्व संभाला। मेरे लिए यह सौभाग्य की बात है कि मुझे सरकार का नेतृत्व संभालने का अवसर प्राप्त हुआ। 20 महीने के छोटे-से कार्यकाल में हमने राजनीतिक, आर्थिक और आपदा के मोर्चों पर तीन-तीन चुनौतियों का मजबूती के साथ सामना किया।

मैं सभी प्रदेशवासियों का हार्दिक आभार प्रकट करना चाहता हूं जिन्होंने हमारी सरकार पर अपना भरोसा बनाए रखा और भरपूर सहयोग दिया। प्रदेश में लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकार को अस्थिर करने के लिए कई साजिशें रची गईं। चुनी हुई प्रदेश की सरकार को धनबल और बेईमानी के सहारे गिराने के प्रयास भी बहुत किए गए। प्रदेश पर उप-चुनावों का आर्थिक बोझ पड़ा और विकास परियोजनाओं की गति रोकने के भी प्रयास किए गए। लेकिन प्रदेशवासियों ने उन्हें नाकाम कर दिया तथा लोकतंत्र को मजबूत करते हुए धनबल को हराकर जनबल की विजय का परचम लहराया।

हमारा संकल्प है कि हिमाचल आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बने और आने वाले दस वर्षों में देश के सबसे समृद्धशाली राज्यों की सूची में शामिल हो। हमने आबकारी नीति में बदलाव लाने जैसे कई साहसिक फैसले लिए हैं जिनसे केवल एक वर्ष में ही 2200 करोड़ रुपये से अधिक का अतिरिक्त राजस्व अर्जित हुआ है। राज्य सरकार ने प्रदेश के हितों की अदालतों में भी पूरी मजबूती के साथ पैरवी की है। इन प्रयासों से अडाणी पॉवर्स और वाइल्ड फ्लावर हॉल जैसे मामलों का फैसला हिमाचल प्रदेश के पक्ष में आया है।

हिमाचल एक ऐसा प्रदेश बनता जा रहा है, जहां लोग अमीर हैं पर सरकार गरीब है। इसका कारण पिछली सरकार ने अमीर-गरीब दोनों को एक बराबर सब्सिडी देने की प्रथा शुरू कर दी। साथ ही कुछ ऐसे फैसले लिये जिनसे प्रदेश पर हजारों करोड़ रुपये का अतिरिक्त बोझ पड़ गया। उदाहरण के तौर पर ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली और पानी दोनों के बिल जीरो कर दिए। जो व्यक्ति जरूरतमंद है उसे यह सुविधा मिले, इसका हमारी सरकार विरोध नहीं करती। लेकिन सम्पन्न परिवारों को इस सुविधा का लाभ नहीं मिलना चाहिए। बिजली का बिल जीरो करने से प्रदेश सरकार पर इस साल 780 करोड़ रुपये और पानी का बिल जीरो करने से 300 करोड़ रुपये का अतिरिक्त बोझ पड़ेगा।

भारत का वित्त आयोग हर पांच साल के लिए ऐसे प्रदेशों को विशेष सहायता देता है जो रेवेन्यू सरप्लस नहीं होते यानी उनमें राजस्व पैदा करने के साधन कम होते हैं। देश में राज्यों का गठन सम्पूर्ण आर्थिक इकाइयों के तौर पर नहीं किया गया है इसलिये इन्हें राजस्व सरप्लस एरिया की तरह देखना ठीक नहीं है। हिमाचल प्रदेश को भारत सरकार ने विशेष श्रेणी राज्य घोषित किया है और हमारे लिए राजस्व घाटा अनुदान का प्रावधान किया है।

15वें वित्त आयोग ने राजस्व घाटा अनुदान में कटौती कर प्रदेश के साथ अन्याय किया। हमने प्रदेश के हित में इस मामले को 16वें वित्त आयोग के सामने प्रमुखता से रखा है। वर्ष 2021-22 में यह ग्रांट 10 हजार 249 करोड़ थी, जो वर्ष 2025-26 में घटकर 3 हजार 257 करोड़ रुपये रह जाएगी। इसका अर्थ यह है कि आने वाले साल में प्रदेश को विकास के लिए लगभग 7 हज़ार करोड़ रुपये कम मिलेंगे। पिछली सरकार ने भारत सरकार के साथ इस मुद्दे को बिल्कुल नहीं उठाया। हमने इस मामले को 16वें वित्त आयोग के सामने प्रमुखता से रखा है। हिमकेयर योजना के दुरुपयोग के कई मामले सामने आये हैं। बहुत से निजी अस्पतालों ने इसे पैसा कमाने का धंधा बना लिया था। इसलिए हमने 147 निजी अस्पतालों को इस योजना के दायरे से बाहर कर दिया है। सभी सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में इस योजना का लाभ मिलता रहेगा। निजी अस्पतालों में डायलिसिस की सुविधा को बहाल रखा गया है।

वर्तमान परिस्थितियों के दृष्टिगत हमें अपने तौर-तरीके बदलने की ज़रूरत है। इस साल प्रदेश के 99 प्राइमरी स्कूलों और 10 मिडल स्कूलों में शून्य नामांकन थे, जिन्हें बन्द करने का निर्णय लिया गया है। हमने दो किलोमीटर दायरे के प्राइमरी स्कूलों और तीन किलोमीटर के दायरे के मिडल स्कूलों में पांच और इससे कम विद्यार्थी संख्या होने की स्थिति में इनका निकटतम विद्यालय के साथ विलय करने का निर्णय लिया है।

हिमाचल प्रदेश कर्मचारी चयन आयोग में युवाओं के भविष्य के साथ हो रहे खिलवाड़ को देखते हुए हमने इस आयोग को बंद कर भर्तियों में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए हिमाचल प्रदेश राज्य चयन आयोग खोला है। आयोग ने कुल लम्बित 2,983 पदों के परिणामों में से 1841 पदों के अंतिम नतीजे घोषित कर दिए हैं। चार साल से लटके जेओए (आईटी) पोस्ट कोड 817 का केस भी हमारी सरकार ने मजबूती के साथ लड़ा और न्यायालय से फैसला आने के बाद इस परीक्षा का परिणाम घोषित किया है। बाकी लंबित परीक्षा परिणामों को भी जल्दी घोषित करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

पिछले वर्ष की तरह इस बरसात में भी हमें बहुत नुकसान उठाना पड़ा है। कई बहुमूल्य जीवन प्राकृतिक आपदा में हमने खोए हैं, जिन्हें मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मैं विश्वास दिलाता हूं कि दुःख की इस घड़ी में हम आपदा प्रभावितों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हैं और एक-एक परिवार को फिर से बसाना हमारा संकल्प है। हर प्रभावित परिवार को फौरी राहत के रूप में 50 हज़ार रुपये दिए गए हैं। उन्हें तीन महीने तक किराए पर मकान के लिए शहरी क्षेत्र में 10 हजार रुपये और ग्रामीण क्षेत्र में 5 हज़ार रुपये प्रदान किए जा रहे हैं। प्रभावितों को मुफ़्त राशन, गैस, बर्तन, बिस्तर और सिलेंडर भी उपलब्ध करवाए गए हैं।

हमारी सरकार की पहली जिम्मेदारी समाज के संवेदनशील वर्गों का संरक्षण और कल्याण सुनिश्चित करना है। मुख्यमंत्री सुख-आश्रय योजना शुरू कर 6 हज़ार बच्चों को 'चिल्ड्रन आफ द स्टेट' के रूप में अपनाकर सरकार इनकी पढ़ाई, जेब खर्च का जिम्मा उठा रही है।

अपनी चुनावी गारंटी को पूरा करते हुए हमारी सरकार ने इंदिरा गांधी प्यारी बहना सुख-सम्मान निधि योजना शुरू की है। इस योजना के अंतर्गत पात्र महिलाओं को सम्मान राशि के रूप में हर महीने 1500 रुपये प्रदान किए जा रहे हैं। पूर्व में अन्य पेंशन योजनाओं से लाभान्वित हो रहीं लगभग 2.37 लाख महिलाओं को भी इसके दायरे में लाकर मासिक पेंशन को बढ़ाकर 1500 रुपये किया गया है।

प्रदेश के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले सरकारी कर्मचारियों को सरकार ने अपनी चुनावी गारंटी के मुताबिक पुरानी पेंशन योजना बहाल कर 1.36 लाख से अधिक कर्मचारियों और उनके लाखों परिजनों को लाभान्वित किया है। लेकिन कर्मचारियों के एनपीएस के लगभग 9 हजार 200 करोड़ रुपये अभी भी केन्द्र सरकार के पास फंसे हैं।

अपने एक और चुनावी वायदे को पूरा करते हुए हमने युवाओं के लिए 680 करोड़ रुपये की राजीव गांधी स्टार्ट-अप योजना शुरू की है। इसके अंतर्गत ई-टैक्सी खरीदने, निजी भूमि पर सोलर पैनल लगाने के लिए 50 प्रतिशत अनुदान का प्रावधान है। तीसरे चरण में किसानों को प्राकृतिक खेती से जोड़ा जाएगा। प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए हिम उन्नति योजना भी लागू की गई है जिसके अंतर्गत लगभग 50 हजार किसानों को शामिल करने के लिए 2600 कृषि समूहों को स्थापित करने का लक्ष्य है।

प्रदेश के बच्चों को गुणात्मक शिक्षा की सुविधा प्रदान करना हमारी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है। प्रदेश के सरकारी स्कूलों में पहली कक्षा से अंग्रेज़ी माध्यम शुरू करने की गारंटी को हमने पूरा किया है। हर विधानसभा क्षेत्र में अत्याधुनिक तकनीक व उपकरणों से युक्त राजीव गांधी डे-बोर्डिंग स्कूल खोले जा रहे हैं। स्कूलों में बेहतर संसाधन जुटाने के उद्देश्य से हमने स्कूलों के क्लस्टर बनाए हैं।

हिमाचल प्रदेश में तेजी से बढ़ रहे कैंसर के मामले गंभीर चिंता का विषय है। प्रदेश सरकार ने कैंसर मरीजों के लिए निःशुल्क इलाज और मुफ़्त दवाइयां प्रदान करने का निर्णय लिया है। टांडा मेडिकल कॉलेज में विशेषज्ञ डॉक्टरों और चिकित्सा अधिकारियों सहित विभिन्न श्रेणियों के 462 पद और आई.जी.एम.सी., शिमला व अटल सुपर स्पेशिल्टी आयुर्विज्ञान संस्थान, चमियाना, में 489 पद भरने का फैसला लिया है। स्वास्थ्य क्षेत्र में राज्य सरकार द्वारा लगभग 2700 पदों को भरा जा रहा है।

बागबानी क्षेत्र का हमारे प्रदेश की अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण योगदान है। बागबानों के हित में राज्य सरकार ने कई बड़े फैसले लिए हैं। इस साल सेब सीज़न के दौरान यूनिर्वसल कार्टन का प्रयोग शुरू किया गया है। मंडी मध्यस्थता योजना के अंतर्गत सेब उत्पादकों की सभी देनदारियों का भुगतान करने के लिए 153 करोड़ रुपये जारी किए गए हैं जिसमें पिछली सरकार की 90 करोड़ रुपये की देनदारी भी शामिल है। इस साल भी सेब, आम और नींबू प्रजाति के फलों को 12 रुपये के समर्थन मूल्य पर खरीदा जा रहा है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए राज्य सरकार प्राकृतिक रूप से उगाए गए गेहूं को 40 रुपये प्रति किलोग्राम और मक्की को 30 रुपये प्रति किलोग्राम के न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदेगी। यह न्यूनतम समर्थन मूल्य देश के सभी राज्यों में सबसे अधिक है। हमने गाय के दूध पर न्यूनतम समर्थन मूल्य को 32 रुपये से बढ़ाकर 45 रुपये प्रति लीटर और भैंस के दूध को 47 रुपये से बढ़ाकर 55 रुपये प्रति लीटर किया है। दूध खरीद पर न्यूनतम समर्थन मूल्य प्रदान करने वाला हिमाचल देश का एकमात्र राज्य है।

पर्यावरण संरक्षण की दिशा में क्रांतिकारी पहल करते हुए प्रदेश सरकार ने 31 मार्च, 2026 तक हिमाचल को हरित ऊर्जा राज्य बनाने का लक्ष्य रखा है। इसी कड़ी में प्रदेश में 6 ग्रीन कोरिडोर स्थापित किए जा चुके हैं। नालागढ़ में ऑयल इंडिया कम्पनी की भागीदारी से ग्रीन हाइड्रोजन गैस के उत्पादन के लिए एक मैगावाट का प्लांट स्थापित किया जा रहा है। ऊना जिला के पेखूबेला में 32 मेगावाट सौर ऊर्जा परियोजना तैयार की गई है जिससे सालाना 19 करोड़ 17 लाख रुपये के राजस्व लाभ का अनुमान है। अघलौर में 10 मेगावाट और भंजाल (शेष पृष्ठ 7 पर)

अपने एक और चुनावी वायदे को पूरा करते हुए हमने युवाओं के लिए 680 करोड़ रुपये की राजीव गांधी स्टार्ट-अप योजना शुरू की है। इसके अंतर्गत ई-टैक्सी खरीदने, निजी भूमि पर सोलर पैनल लगाने के लिए 50 प्रतिशत अनुदान का प्रावधान है। तीसरे चरण में किसानों को प्राकृतिक खेती से जोड़ा जाएगा। प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए हिम उन्नति योजना भी लागू की गई है।

हिमाचल प्रदेश कर्मचारी चयन आयोग में युवाओं के भविष्य के साथ हो रहे खिलवाड़ को देखते हुए हमने इस आयोग को बंद कर भर्तियों में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए हिमाचल प्रदेश राज्य चयन आयोग खोला है। आयोग ने कुल लम्बित 2,983 पदों के परिणामों में से 1841 पदों के अंतिम नतीजे घोषित कर दिए हैं। चार साल से लटके जेओए (आईटी) पोस्ट कोड 817 का केस भी हमारी सरकार ने मजबूती के साथ लड़ा और न्यायालय से फैसला आने के बाद इस परीक्षा का परिणाम घोषित किया है।

स्वतंत्रता संग्राम में मंडी, सुकेत एवं रामपुर बुशैहर के लोगों का योगदान

जून 1913 में सन-फ्रांसिसको में लाला हरदयाल जी के नेतृत्व में गदर पार्टी का गठन हुआ और इसमें मंडी के दो युवक काशीराम मल्होत्रा एवं हरदेव ने डॉक्टर मथरा सिंह जो गदर पार्टी के विशेष सदस्य थे, जापान में भेंट हुई। हरदेव गदर पार्टी के सदस्य बन गए तथा मंडी आकर इसके लिए भर्ती की। भाई हिरदा राम की हरदेव से मित्रता हो गई। हिरदा राम ने डॉक्टर मथरा सिंह से बम बनाने की तकनीक सीखी। परंतु अंग्रेजों को उनके भेद का पता लग गया। गदर पार्टी के सदस्य पकड़े गए उन पर लाहौर नामक षड्यंत्र का अभियोग चलाया गया और भाई हिरदा राम को फांसी की सजा सुनाई गई परंतु बाद में आजीवन कारावास में बदल दी गई। हरदेव के घर की तलाशी ली गई पर वह वहां से भाग निकले और बद्रीनाथ पहुंचे। उन्होंने कृष्णानंद नाम धारण कर लिया। वे कांग्रेस के प्रमुख सदस्य रहे और सिन्ध उनका कार्य क्षेत्र रहा। जहां उनका नाम आदर से लिया जाता। सुरजण सिंह नामक क्रांतिकारी पंजाब से मंडी आए और यहां युवक संस्था की स्थापना की उसके सिद्धू, ज्वाहर सिंह, ज्वाला सिंह, सिद्धू द्वितीय, बद्री, शारदा राम, लौगुं, दिलीप सिंह, राजा भवानी सेन, रानी खैरागढ़ी आदि प्रमुख सदस्य बने। इन्होंने मंडी एवं सुकेत रियासतों में क्रांति की ज्वाला भड़कानी शुरू कर दी। इन क्रांतिकारियों की बैठक सन् 1914 ईस्वी में वड्सू नामक गांव में हुई जिसकी अध्यक्षता निधान सिंह चुग्घा (पंजाब) ने की। इन्होंने बम बनाने सीख लिए तथा जोगिंदर नगर के जंगलों में विस्फोटक पदार्थों का परीक्षण किया परंतु दिलीप सिंह और निधान सिंह चुग्घा अलग-अलग जगहों पर पकड़े गए।

दिलीप सिंह ने पुलिस को सारी चालें उगल दी। पुलिस ने मंडी को घेर लिया। सिद्धू खराड़ा के अतिरिक्त अन्य सभी पकड़े गए। उन पर नागचला डकैती झूठा मुकद्दमा चलाया गया। निधान सिंह चुग्घा एवं सूरजण देश भक्तों को फांसी के फंदे गले में डालने पड़े। सिद्धू खराड़ा ने बडयाणा गांव में मियां राजपूतों के घर में शरण ली, परन्तु उसको पकड़ा दिया गया। जब सिद्धू खराड़ा को पुलिस मंडी लाई तो हजारों की संख्या में जन-समूह उन्हें देखने के लिए उमड़ पड़ा। उन पर मुकद्दमा चलाया गया और आयु प्रर्यन्त कैद की सजा दी गई।

सुकेत सत्याग्रह 26 जनवरी 1948 को हिमाचल स्टेट्स रीजनल काउंसिल की एक सभा जिसमें पहाड़ी प्रांत की अस्थाई सरकार की स्थापना की गई। इसमें सिरमौर के शिवानंद रामोल प्रधान चुने गए, बिलासपुर के सदा राम चंदेल, बुशैहर से श्री पदम देव तथा सुकेत से श्री मुकंद लाल इसके प्रमुख सदस्य निर्वाचित हुए। इनमें से आज कोई भी जीवित नहीं है पर उनके त्याग एवं निष्ठा का इतिहास में उच्च स्थान हमेशा रहेगा। केंद्र में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओं की एक

सुकेत सत्याग्रह 26 जनवरी 1948 को हिमाचल स्टेटस रीजनल काउंसिल की एक सभा जिसमें पहाड़ी प्रांत की अस्थाई सरकार की स्थापना की गई। इसमें सिरमौर के शिवानंद रामोल प्रधान चुने गए, बिलासपुर के सदा राम चंदेल, बुशैहर से श्री पदम देव तथा सुकेत से श्री मुकंद लाल इसके प्रमुख सदस्य निर्वाचित हुए।

✍ सत्यपाल वशिष्ठा

सरकार बनी थी। ऑल इंडिया स्टेट पिपुल्स कांफ्रेंस ने रियासतों के भारत में विलयीकरण का जोर डाल दिया था। परंतु पहाड़ी राजाओं को आशा थी कि उनकी सत्ता स्थाई रहेगी तथा वर्ष 1948 ईस्वी में उन्होंने एकत्रित होकर एक संविधान का निर्माण किया जिसमें शिमला रियासतों को एक संघ के अंतर्गत इकट्ठा करने की योजना थी और हिमाचल के भोले-भाले लोगों को इन नेताओं के विरुद्ध करने की चाल चल रहे थे, पर चाल चल ना सकी।

लोक नेताओं ने इसी कड़ी में जनता के सहयोग से बहुत संघर्ष करना पड़ा ताकि सत्ता राजाओं से लोक नेताओं को सौंपी जा सके। इसी कड़ी में सुकेत सत्याग्रह ने इतिहास में अपना नाम जोड़ा है। आठ फरवरी 1948 को लोक नेताओं और जनता की एक सभा में निर्णय लिया कि रियासतों के विलयीकारण के लिए सत्याग्रह किया जाएगा। सर्वप्रथम सुकेत राज्य को चुना गया। राजा लक्ष्मण सेन को एक पत्र लिखकर इस रियासत को लोक नेताओं के हवाले करने के लिए 48 घंटे का समय दिया गया। परंतु निर्धारित समय पर उत्तर न मिलने पर 18 फरवरी 1948 को 1000 स्वयंसेवकों का जत्था श्री पदम देव की अध्यक्षता में तत्तापानी से सुकेत की राजधानी सुन्दरनगर की ओर रवाना हुआ। फरनू आदि चौकियों से होता हुआ करसोग पहुंचा। उसी दिन करसोग तक जनता का राज्य स्थापित हो गया। सुकेत राज्य के विभिन्न क्षेत्रों पर अधिकार स्थापित करते हुए जन समूह 23 फरवरी 1948 को जय देवी पहुंच गया। उस समय जत्थे की संख्या 1000 से बढ़कर 5000 तक हो गई थी। जयदेवी तक सुकेत राज्य का 3/4 हिस्सा जनता के अधिकार में आ चुका था। जब सुकेत के राजा को पता चला तो उन्होंने केंद्र से सैन्य सहायता मांगी परंतु उन्होंने सहायता देने से इन्कार कर दिया क्योंकि यह केंद्र सरकार का अंग नहीं था।

इसी समय रामपुर बुशैहर के राज्य में एक घटना घटी। एक मार्च 1948 में रामपुर बुशैहर के सराहन में एक जनसभा हुई जिसमें राज्य के कर्मचारियों की धांधली एवं अमानवीय व्यवहार के भेद खोले गये। राजा के विरुद्ध नारे लगाए गए एवं न्याय की मांग की गई। इस सभा के नेता मास्टर अनुलाल थे। पुलिस ने कुछेक अन्य नेताओं सहित मास्टर अनुलाल को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस अभी उन्हें लेकर गौड़ा नामक स्थान पर ही पहुंची थी कि जनता ने उसे घेर कर मास्टर अनुलाल और अन्य नेताओं को मुक्त कर दिया। सूचना मिलते ही रामपुर के डीएसपी और न्यायाधीश तथा अन्य अधिकारी सेना लेकर गौड़ा पहुंचे। जनता ने उनका मुकाबला कर उन्हें पराजित किया। सब अधिकारियों को गिरफ्तार कर जनता, राज्य की राजधानी रामपुर पहुंचे और वहां जनता ने अपना शासन घोषित कर दिया। यह एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। रियासत के दीवान सरदार बलदेव सिंह जो उस समय शिमला थे, पंजाब सशस्त्र पुलिस की टुकड़ियां लेकर रामपुर पहुंचे। तत्पश्चात् राजा रामपुर ने भी राजसत्ता से संन्यास लेकर विलायीकरण के पत्रों पर हस्ताक्षर कर दिए।

शिव प्रताप शुक्ल
राज्यपाल
हिमाचल प्रदेश

सत्यमेव जयते

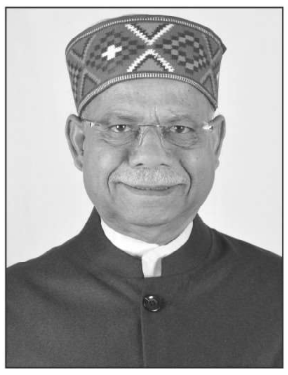

स्वतंत्रता दिवस पर महामहिम राज्यपाल का सन्देश

हिमाचल प्रदेश के मेरे प्यारे भाइयो और बहनो!

समूचा राष्ट्र उमंग और उल्लास के साथ स्वतंत्रता दिवस मना रहा है। इस पावन अवसर पर मैं समस्त प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं देता हूँ।

प्रदेशवासियो! यह ऐतिहासिक दिन है, जब विदेशी साम्राज्य की दासता से यह राष्ट्र मुक्त हुआ। असंख्य देशभक्तों के बलिदान और माँ भारती के वीर सपूतों के संघर्ष ने हमें स्वतंत्रता दिलवाई। इस मंगल दिवस पर मैं उन सभी देशभक्तों को श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ। मैं, उन वीर सपूतों को भी नमन करता हूँ, जिन्होंने स्वतंत्रता के उपरान्त देश की एकता और अखण्डता को बनाए रखने तथा देश की सीमाओं की रक्षा के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया है। इन बलिदानी सैनिकों का गौरवमयी इतिहास हमारे लिए प्रेरणादायक है।

स्वतंत्रता दिवस हमें आत्म-विवेचन का अवसर प्रदान करता है। यह भारत का 'अमृत काल' है। इस अमृत काल में प्रत्येक भारतवासी को देश के लिए किसी न किसी रूप में अपना योगदान देना है ताकि यह राष्ट्र विकास के शिखर को प्राप्त कर सके।

इस वर्ष भी बरसात के मौसम में हिमाचल प्रदेश में जान-माल का काफी नुकसान हुआ है। हम सब मिलकर इस चुनौती का सामना कर रहे हैं। केन्द्र और प्रदेश सरकार के सहयोग से आपदा प्रभावित क्षेत्रों एवं प्रभावित लोगों के लिए राहत कार्य कार्यान्वित किए जा रहे हैं।

राज्य के प्रत्येक नागरिक ने प्रदेश की विकास यात्रा में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है, जिसके लिए मैं आप सभी को बधाई देता हूँ। इस महत्त्वपूर्ण दिवस पर मैं राज्य की उन्नति एवं सर्वांगीण विकास की कामना करता हूँ। आइए, हम सब संकल्प लें कि निष्ठा और प्रतिबद्धता के साथ हम राष्ट्र और राज्य की उन्नति के लिए अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करेंगे।

मैं पुन: समस्त प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस पर बधाई देता हूँ और उनके खुशहाल एवं मंगलमय जीवन की कामना करता हूँ।

जय हिन्द! जय हिमाचल!

(शिव प्रताप शुक्ल)

तिरंगे झंडे के शिल्पकार : पिंगली वैंकैया

हमारा राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा जब अपनी आन बान और शान से लहराता है तो समूचा देश गर्व से भर उठता है। यह हमारी आजादी की सबसे बड़ी निशानी है। इसको लहराता हुआ देखकर आपके मन में एक जिज्ञासा तो जरूर हिलोरे लेती होगी कि इस ध्वज को बनाया किसने है? कौन रहा होगा इसका शिल्पकार? यह बात उन दिनों की है, जब भारत में अंग्रेजी राज्य को समाप्त करने के लिए राष्ट्रीय आंदोलन चल रहा था। गांधी जी के कहने पर पिंगली वेंकैया ने तिरंगे झंडे का डिजाइन तैयार किया था। इसके पहले भी कई झंडे बने थे मगर लोकप्रिय नहीं हो पाये। उन्होंने तिरंगे झंडे के बीच में सफेद रंग की पट्टिका को जोड़ने का कार्य किया।

पहले बीच में पीले रंग की पट्टिका थी। बीचों बीच चरखा रखा गया। कांग्रेस के कराची अधिवेशन (1931) ई. में इस झंडे को स्वीकृति मिली। आजादी के बाद चरखे का स्थान चक्र ने ले लिया। सर्वप्रथम 15 अगस्त 1947 ई. को भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरु जी ने लाल किले पर इस तिरंगे झंडे को फहराया था। तब से अब तक हमारा प्यारा तिरंगा झंडा हमें स्वतंत्रता, समानता और भाइचारे का संदेश दे रहा है।

✍ नरेन्द्र सिंह 'निहार'

साहसिक फैसलों से पूरा होगा.......

(पृष्ठ छः का शेष) में पांच मेगावाट क्षमता वाली सौर ऊर्जा परियोजनाओं का निर्माण कार्य जारी है। इन परियोजनाओं के संचालन से प्रदेश सरकार को 11 करोड़ रुपये से अधिक राजस्व प्राप्त होगा।

प्रदेश सरकार पर्यटकों को बेहतर सुविधाएं और सेवाएं उपलब्ध करवा रही है जिससे पर्यटन गतिविधियों में लगातार बढ़ोतरी हुई है। कांगड़ा को पर्यटन राजधानी के रूप में विकसित किया जा रहा है। देहरा उप-मण्डल के बनखंडी में 619 करोड़ रुपये की लागत से वन्य प्राणी उद्यान स्थापित किया जा रहा है। कांगड़ा हवाई अड्डे के विस्तार की प्रक्रिया भी जारी है। प्रदेश में 16 हेलीपोर्ट निर्मित किए जा रहे हैं और रोप-वे निर्माण को भी गति दी जा रही है।

राज्य सरकार सड़कों के विस्तार के लिए निरंतर प्रयास कर रही है। हिमाचल प्रदेश पथ परिवहन निगम प्रदेश के अति दुर्गम क्षेत्रों तक रोजाना लाखों यात्रियों को आवागमन की सुविधा उपलब्ध करवा रहा है। निगम को इलेक्ट्रिक बसें खरीदने के लिए 517 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं।

हमारी सरकार ने 20 माह के कार्यकाल में रोज़गार के 31 हजार से अधिक अवसर सृजित किए हैं। इसकी तुलना में, पूर्व भाजपा सरकार ने अपने पांच वर्ष के कार्यकाल में केवल 20 हजार नौकरियां दी थीं जिनमें से अधिकतर कानूनी दाव-पेचों में उलझी रहीं। प्रदेश में पहली बार तहसील और उप-तहसील स्तर पर विशेष राजस्व लोक अदालतों का आयोजन कर 1,87,500 से अधिक राजस्व मामलों का निपटारा किया गया। इस व्यवस्था से आम आदमी को भूमि से जुड़े मामलों में बार-बार सरकारी कार्यालयों के चक्कर काटने से राहत मिली है।

मैं प्रदेश के लोगों को विश्वास दिलाता हूं कि राज्य सरकार व्यवस्था परिवर्तन से आत्मनिर्भर हिमाचल प्रदेश बनाने का सपना साकार कर रही है। पिछली भाजपा सरकार प्रदेश पर 75 हजार करोड़ रुपये से अधिक का कर्ज तथा कर्मचारियों की लगभग 10 हजार करोड़ रुपये की देनदारियों का बोझ छोड़ कर गई। यही वजह है कि राज्य सरकार को कर्ज और ब्याज चुकाने के लिए भी कर्ज लेना पड़ रहा है। आज हालात ये हैं कि 100 रुपये में से वेतन पर 25 रुपये, पैंशन पर 17 रुपये, ब्याज पर 11 रुपये, कर्ज अदायगी पर 9 रुपये, स्वायत्त संस्थानों की ग्रांट पर 10 रुपये और बचे हुए 28 रुपये पूंजीगत व्यय और अन्य गतिविधियों पर खर्च किए जा रहे हैं। लेकिन हमारा दृढ़ संकल्प है कि प्रदेश के विकास और जनकल्याण में खराब आर्थिक स्थिति को बाधा नहीं बनने दिया जाएगा।

मैं एक बार फिर समस्त प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की बधाई देता हूं तथा समस्त प्रदेशवासियों के सुखमय और स्वस्थ जीवन की कामना करता हूं।

जय हिन्द, जय हिमाचल!

कहानी

वकील बाबू

हल्के – फुल्के लड़ाई झगड़े कहां या किस घर में नहीं होते भला। उस पर अपने ही घर में कोई बड़ा या फिर छोटा वकील भी तो होता ही है न उन झगड़ों का निपटारा करने वाला। लेकिन बात जब बड़े झगड़े या किसी बड़ी समस्या की हो तो कोर्ट कचहरी के चक्कर भी लगाते अनेक लोगों को देखा है हम सबने।

किसी की जमीन का झगड़ा तो किसी की संपत्ति के हिस्सों के बंटवारे को लेकर कोर्ट में हाजिरी। किसी के पैसों का लेनदेन तो किसी के बैंक से लिए कर्ज को लेकर कचहरी और वकीलों के चक्कर। किसी की बीवी साथ नहीं रहना चाहती अपने शौहर के साथ तो कोई पति अपनी बीवी से तलाक लेने को कोर्ट परिसर में हाजिर है। मतलब यह कि असंख्य लोग अपनी समस्याओं के समाधान को लेकर न्यायाधीशों के फैसलों के इंतजार में अपने वकीलों की जेबें गर्म करते हैं। और कहा जा सकता है कि इन वकीलों को उनकी फीस तो देनी ही पड़ेगी, यदि अपनी समस्या का कोई हल निकलवाना है तो। इन वकीलों के बिना कोर्ट का कोई काम मुमकिन नहीं। और उस पर वकीलों की जुबान देखिए कितनी मिठास लिए हुए अपने मुवक्किल को अपने हुनर से अपनी जिरह समझाते हुए पक्का और पूरा यकीन दिलाते है कि आप यह मुकद्दमा जीतेंगे ही, बस वक्त जरूर लग सकता है जरा।

फिर भले ही हमारे द्वारा दायर किए गए मुकद्दमे में कोई दम-खम हो या नहीं भी। वकील हमेशा हमारी उम्मीदों को जिंदा रखने की कुव्वत या सामर्थ्य रखते हैं। और हमारी जेब ढीली करने में सदैव कामयाब भी रहते हैं।

लेकिन इन सब में एक वकील बिलकुल अलग-थलग मिले 'राणा जी'। सपाट माथा लिए चेहरे पर कोई हाव भाव नहीं। निष्क्रिय किंतु चेहरा तपते सूरज की तरह लाल अंगारे जैसा। बस बदन पर पहने हुए उनके काले कोट से ही उन्हें पहचाना जा सकता है। अलबत्ता राणा जी को पहचान पाना उतना ही मुश्किल जैसा कि जाड़े के मौसम में सूरज को ढूंढना होता है।

शांत स्वभाव वाले राणा जी कोर्ट में अपने मुवक्किलों के साथ बहुत ज्यादा बातों में व्यस्त नहीं दिखे उस दिन भी। मैं अपने दोस्त राम की समस्या को लेकर उनके पास गया था, राम द्वारा दायर किए जाने वाले मुकद्दमे के सिलसिले में। बड़े तपाक से मिले राणा जी हम दोनों से क्योंकि राणा जी भी मेरे चंद मित्रों में से एक हैं।

इन सब में एक वकील बिलकुल अलग-थलग मिले 'राणा जी'। सपाट माथा लिए चेहरे पर कोई हाव भाव नहीं। निष्क्रिय किंतु चेहरा तपते सूरज की तरह लाल अंगारे जैसा। बस बदन पर पहने हुए उनके काले कोट से ही उन्हें पहचाना जा सकता है। अलबत्ता राणा जी को पहचान पाना उतना ही मुश्किल जैसा कि जाड़े के मौसम में सूरज को ढूंढना होता है।

वह अभी हमसे बात करने ही वाले थे कि हरकारे की लंबी आवाज सुनकर वह हमसे मुखातिब होते हुए बोले 'जनाब मैं अपने मुवक्किल की पेशी भुगत कर आता हूं' और इतना कहकर वे अपनी सहायिका से हमें चाय पिलाने के लिए कहकर चले गए।

कुछ देर बाद ही वे वापिस आते हुए स्वयं से ही बुदबुदा रहे थे।

'कितनी बार समझाया था कि जैसा मैं कहूं वैसा ही कहना ....लेकिन नहीं...... पता नहीं क्या खा कर आ जाते हैं घर से' लगता था मानो वह अपने से ही उलझ पड़े हों। और फिर साथ ही चाय के कप में चुस्की लेने के अंदाज से हाथ घुमाते हुए हमसे पूछने लगे थे 'चाय पी या नहीं आपने ?' हम दोनों ने भी स्वीकृति में हामी भर दी थी।

'हां तो अब कहिए क्या सेवा करूं मैं आपकी ? ' और उनके यह कहते ही राम बोलने लगा था। 'मेरी जमीन का मसला है ..... माता जी ने स्वर्गवासी होने से पहले ही सारी जायदाद इंग्लैंड में रहने वाले भाई के नाम कर दी है।' वह कुछ रुककर फिर बोला था।' मेरे पिता जी ने दूसरी शादी की थी। सौतेली मां का व्यवहार मेरे साथ कुछ खास अच्छा नहीं रहा ...... अब आप ही बताइए मैं क्या करूं ।' मेरा मित्र राम रुआंसे लफ्जों में अपनी कहानी राणा जी से साझा करते और किसी अच्छी सलाह की चाह लिए हुए कह रहा था।

टकटकी लगाए राणा जी ने सारी कहानी ध्यान से सुनी और राम पर पहला सवाल दागा 'देखो राम जी जैसा कि आप पहले ही बता चुके हैं आपकी माता जी से बनती नहीं थी..... और ऐसा होने से वह जायदाद इंग्लैंड वाले अपने बेटे के नाम कर गई हैं .... तो बताओ अब ऐसे में ... मैं क्या कर सकता हूं भला ?'

✍ राजेन्द्र पालमपुरी

सुनते ही राम सकपका गया। वह कुछ धीरज रखते हुए बोला 'नहीं जी बनती तो थी...... लेकिन सौतेली जो ठहरी' कहकर चुप हो गया था राम। अब राणा जी मेरी तरफ मुंह करके बोले - हरि जी आपने क्यों नहीं समझ दिया इनको ..... आपको तो पता ही है जब पहले ही संपत्ति किसी दूसरे के नाम कर दी जाए तो कोई हथकंडा नहीं रह जाता किसी भी वकील के पास'

राणा जी फिर नम्रतापूर्वक राम से बोले - 'देखिए जनाब मैं आपको एक अच्छा मशविरा दे सकता हूं ..... आप सब कुछ भगवान आसरे छोड़ दो कोई देखे न देखे वह सब देखता है और सबका देखता है ......' फिर मेरी ओर इशारा करते हुए राम से ही कहने लगे 'राम बाबू आपके पास इतने बड़े कहानीकार हैं.... कोई सलाह इन्हीं से ले ली होती ..... आपको अच्छा सुझाव दे देते यह ......'

कुछ देर बाद वह फिर बोले 'देखिए राम जी ...... जो आपकी माता जी कर गई हैं उस पर कोई कानून, कोई जिरह काम नहीं करती ..... हां मेरा मानना है ईश्वर जरूर आपकी मदद करेगा।' सुनकर मेरे मित्र के मुंह में जैसे आवाज ही नहीं थी जैसी स्थिति थी। वह बिलकुल चुपचाप राणा जी की बात सुनते जा रहा था।

वकील बाबू की जिरह जारी थी वह कह रहे थे 'मेरी मानिए कोई वकील बिना रुपल्ली खर्च किए ऐसा मशविरा नहीं देगा ...... हां यदि मुकद्दमें पर पैसा ही लगाना है तो जैसी आपकी मर्जी ' और कुर्सी पर अपना सिर टिकाए कुछ सुस्ताते हुए कहने लगे।' वैसे मैं आपका केस नहीं ले पा.......

लेकिन राणा जी की बात अभी पूरी नहीं हो पाई थी कि अचानक राम के मोबाइल पर कॉल आ गई। फोन राम के इंग्लैंड में रहते सौतेले भाई का था।

राम फोन सुनने के लिए कोर्ट परिसर से कुछ दूर चला गया था। और जब वह हमारे पास आया तो उसके चेहरे पर मुस्कान थी। उसके चेहरे की रंगत बता रही थी कि अवश्य ही फोन पर उसने कोई मनचाही बात सुनी है। और पास आते ही उसने कहा था 'राणा जी आपके मुंह में घी शक्कर, मेरा इंग्लैंड वाला भाई मुझे मेरे हिस्से की जमीन देने घर आ रहा है हमारा वह मुकद्दमा न सही .... मिलने वाली जमीन की रजिस्ट्री तो आप ही करवाएंगे न मेरी।'

बात सुनते हुए राणा जी बेहद खुश हुए थे और बोले थे 'देखा राम जी आपके मन की मुराद पूरी कर दी राम जी ने ..... ?'

हम दोनों घर आते हुए राणा जी की ही बात कर रहे थे। राम ने मुझसे कहा था 'भाई हरि यह होते हैं वकील ..... कोई और होता न .... तो अपने पैसों के लिए उसी वक्त हमारा मुकद्दमा बिना किसी कारण रजिस्टर करवा देता ..... पैसा तो पैसा समय भी खराब होता और उसपर मानसिक परेशानियां सो अलग।'

और 'वकील बाबू' की कुछ ऐसी ही बातें करते-करते हम घर कब पहुंचे हम दोनों को पता ही नहीं चला।

कविता

मेरे गांव

**मेरे गांव
सच-सच कहना
मुझ से न छिपाना
ये तुम बदले हो कि मैं
हम दोनों
जो कभी एक थे
बरसात और धुंध की तरह
आज दो विपरीत ध्रुवों में
बदल गए हैं
अलग-अलग दिशाओं में छोर बने खड़े हैं
तुम आज भी वहीं खड़े हो
जहां के तहां
वही सदियों पुराना
उपेक्षाओं का फटा लिबास पहने
जर्जर व्यवस्था का प्रतीक बने
सोए हुए हो इस युग में भी
और मैं
तुम से दूर कहीं दूर
निकल गया हूं
महानगर की चकाचौंध में
डूब गया हूं
अब लौटना नामुमकिन है
तुम से आती है घिन सी
तुम्हारी अच्छाइयां?
अब सम्मोहित नहीं करती
बस याद सी दिलाती हैं
पर क्या ऐसा हो सकता है
कि मैं फिर से तुम्हारा बेटा बन जाऊं
और तुम मेरा प्यारा गांव।**

✍ **हंस राज भारती**

सामान्य ज्ञान

एंटी-डंपिंग शुल्क?

एंटी डंपिंग शुल्क एक संरक्षणवादी टैरिफ है जो एक घरेलू सरकार विदेशी आयात पर लगाती है जिसके बारे में उसका मानना है कि उसकी कीमत उचित बाजार मूल्य से कम है। डंपिंग एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें एक कम्पनी किसी उत्पाद को ऐसी कीमत पर निर्यात करती है जो उसके घरेलू बाजार में सामान्य रूप से वसूल की जाने वाली कीमत से काफी कम होती है। विश्व व्यापार संगठन, एंटी डंपिंग उपायों के अन्तर्राष्ट्रीय विनियमन सहित अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार नियमों का संचालन करता है।

1. हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा सभी सामाजिक सुरक्षा सेवाओं की लाभार्थियों तक आसान पहुंच सुनिश्चित करने के लिए कौन सा ऑनलाइन प्लेटफार्म विकसित किया जा रहा है ?
2. इंद्रासन पर्वत चोटी हिमाचल के किस जिले में स्थित है ?
3. स्पीति घाटी का अंतिम गांव कौन सा है ?
4. वर्ष 1960 में कौन सा जिला हिमाचल प्रदेश का छठा जिला बना ?
5. चकली किस रियासत का प्रसिद्ध सिक्का था ?
6. रॉयल इंडियन नेवी विद्रोह किस वर्ष प्रारम्भ हुआ था ?
7. 'भारत का आर्थिक इतिहास' नामक पुस्तक किसने लिखी थी ?
8. नैतिक तर्क का अवस्था सिद्धांत किसने स्पष्ट किया है ?
9. अंतर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान सलाहकार समूह का मुख्यालय कहां स्थित है ?
10. विक्रमशिला विश्वविद्यालय किस लिए विख्यात था ?
11. हेमिस राष्ट्रीय उद्यान कहां स्थित है ?
12. कांग्रेस ने किस अधिवेशन में पूर्ण स्वराज्य को अपना मुख्य लक्ष्य घोषित किया था ?
13. राष्ट्रीय हरित अधिकरण की स्थापना कब हुई थी ?
14. भारत की सबसे बड़ी प्रायद्वीपीय नदी कौन सी है ?
15. दीपवंश किस देश के प्राचीन इतिहास से संबंधित प्रसिद्ध ग्रंथ है ?

प्रस्तुति : चन्द्रशेखर वर्मा

उत्तर- 1. हिम एक्सेस, 2. कुल्लू, 3. लोसर, 4. किन्नौर, 5. चम्बा, 6. 18 फरवरी, 1946, 7. रमेश चंद्र दत्त, 8. लॉरेंस कोहलबर्ग, 9. फ्रांस में, 10. तान्त्रिक बौद्ध दर्शन, 11. लद्दाख, 12. लाहौर अधिवेशन (दिसम्बर-1929), 13. वर्ष 2010 में, 14. गोदावरी नदी, 15. श्रीलंका ।

विविध विषयों का सुंदर गुलदस्ता : समग्र सामयिकी

आलेख लेखन हिंदी साहित्य की एक ऐसी कला है, जिसके द्वारा विभिन्न क्षेत्रों के ज्ञान से पाठकों को अवगत कराने की कोशिश की जाती है। वर्तमान में घटित हो रही घटनाओं को अतीत और भविष्य के प्रभावों से जोड़कर आलेखों को सूक्ष्मता से विश्लेषित किया जाता है। आलेख कला मुख्यता विवादास्पद मुद्दों पर प्रकाश डालती है जिनके विषय वृहद होते हैं, जैसे राजनीति, पर्यावरण, कानून, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, सामाजिक, आर्थिक इत्यादि।

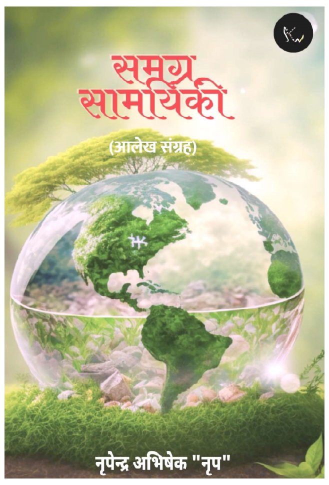

वैचारिक और बौद्धिक मतभेदों से जूझते समकालीन स्थितियों को समझते हुए प्रसिद्ध लेखक, स्तंभकार, निबंधकार एवं शोधार्थी नृपेंद्र अभिषेक 'नृप' अपनी तीसरी पुस्तक 'समग्र-सामयिकी' लेकर आये हैं। जिसमे विभिन्न विषयों पर आधारित पैंतीस आलेखों को कलमबद्ध किया गया है। छह खण्डों में विभक्त ये पुस्तक रोचक मुद्दों की सजग विवेचना करती है। यूं तो जब ये पुस्तक हाथों में आती है तो सामान्य सी प्रतीत होती है, परन्तु पृष्ठ दर पृष्ठ पलटते हुए कब आप आखरी पन्ने तक पहुंच जाते हैं ये आभास ही नहीं रहता।

नृपेंद्र अभिषेक अपनी पुस्तक की शुरुआत पर्यावरण सम्बन्धी मुद्दों से करते हैं, जहां उन्होंने पर्यावरण संकट के कारण पृथ्वी को होने वाली क्षति और विनाशकारी प्रभाव की गूढ़ चर्चा की है। अपने दूसरे आलेख में वो प्लास्टिक प्रदूषण की सांख्यिकीय विवेचना करते हैं, वहीं जैव-ईंधन के लाभ प्रयासों के बारे में जानकारी देते हैं।

दूसरे खंड की ओर अग्रसर होते ही विज्ञान और प्रौद्योगिकी से सम्बंधित मुद्दे प्रकाश में आते हैं, जहां उन्होंने ग्रीन हाइड्रोजन, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, टेस्ट ट्यूब बेबी तकनीक आदि जैसे विकसित हो रहे तकनीकों से भविष्य को नयी उम्मीदों की रोशनी को संरचित होते बताया है। वहीं सामाजिक मुद्दों की तरफ बढ़ते हुए उन्होंने महिला सशक्तीकरण की बात कही है और बताया है की किसी भी देश, समाज और परिवार के उज्ज्वल भविष्य के लिए ये कितना महत्त्वपूर्ण है। नारी सम्मान में उन्होंने दो पंक्तियां कुछ इस तरह प्रस्तुत की हैं,

'नारी शक्ति है, सम्मान है, नारी गौरव है, अभिमान है,
नारी ने ही ये विधान रचा है, उनको हमारा शत-शत प्रणाम है।'

सामाजिक मुद्दों पर उन्होंने आगे चर्चा करते हुए अत्यंत ही संवेदनशील आत्महत्या जैसे विषय को स्पर्श किया है, और उसकी वृद्धि से लेकर रोकथाम तक की बात रखी है। विभिन्न रिपोर्टों और आंकड़ों के आधार पर नृपेंद्र अभिषेक भुखमरी के बढ़ते स्तर से अवगत कराते हैं और सरकारी प्रयासों की चर्चा करते हैं। इसी प्रकार वो बाल-श्रम, बढ़ती आबादी, बेरोजगारी और सड़क हादसों जैसे विषयों का सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। इस तरह ये पुस्तक आर्थिक विषयों के खंड तक पहुँचती है और गिग इकॉनमी, जैविक खेती की चुनौतियों से हमारा परिचय करवाती है। फिर अंतरराष्ट्रीय मुद्दों का खंड आता है, जहां इजराइल- फिलिस्तीन विवाद, रूस-यूक्रेन युद्ध और संरक्षणवाद जैसे ज्वलंत मुद्दों को शामिल किया गया है।

इसके अलावा अंतिम खंड में विविध विषयों का समागम है। ये सारे आलेख गंभीर विषयों के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों को प्रदीप्त करती हुई हमें एक नयी दृष्टि प्रदान करती है। जिन उद्देश्यों के मद्देनजर इस पुस्तक की रचना की गयी है, ये उन सभी आयामों पर खरी उतरती है, ये पुस्तक जनसामान्य के लिए ज्ञानवर्धक तो है हीं साथ हीं लोकसेवा और विभिन्न प्रतियोगी परीक्षार्थिओं के लिए ये पुस्तक अति-सहायतापूर्ण है। इस पुस्तक को पढ़ते हुए ज्ञान, रोचकता और आनंद की अनुभूति होती है। आप भी अपने ज्ञान के भण्डार को आलेखों के इस संग्रह से भरना चाहते हैं तो 'समग्र- सामयिकी' आपके लिए एक समग्र पुस्तक के रूप में मौजूद है। लेखक को इस स्तर की पुस्तक के लिए धन्यवाद और भविष्य के लिए ढेरों शुभकामनाएं।

समीक्षक : मनीषा मंजरी

पुस्तक : समग्र सामयिकी
लेखक : नृपेंद्र अभिषेक 'नृप'
प्रकाशन : किताब राइटिंग पब्लिकेशन, मुम्बई
मूल्य : 249 रुपये, पेज : 224

लेख

निपटान प्रथाओं, विशेष रूप से अंधाधुंध डंपिंग को कम करने के लिए तत्काल हस्तक्षेप की आवश्यकता है। एक समाधान फलों और सब्जियों के कचरे से इको-एंजाइम का उत्पादन करना है, जिससे जैविक पदार्थ बहुमुखी उत्पादों में बदल जाते हैं। बढ़ते कचरे की मात्रा को कुशलतापूर्वक प्रबंधित करने के लिए इको-एंजाइम उत्पादन को बढ़ाना महत्त्वपूर्ण है।

अपशिष्ट संचय न्यूनीकरण और आधुनिक कचरा प्रबंधन

✍ ईशानी शर्मा

नींबू, एक लोकप्रिय फसल है, जो आवश्यक फाइटोकेमिकल्स से भरपूर है और यह मानव स्वास्थ्य में योगदान देता है। अपनी पोषण संबंधी समृद्धि के बावजूद, प्रचुर मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट और विटामिन सी युक्त साइट्रस छिलके को अक्सर बेकार कर दिया जाता है, जिससे सालाना 144 मिलियन मीट्रिक टन छिलकों के कचरे के चौंका देने वाले वैश्विक निपटान में इजाफा होता है। इन छिलकों में न केवल जीवंत बाहरी परत (एपिकारप) बल्कि नरम आंतरिक परत (मेसोकार्प) भी शामिल है, जो पॉलीफेनोल, आवश्यक तेलों और ऑराप्टीन और बर्गमोटिन जैसे यौगिकों के भंडार हैं, स्वास्थ्यवर्धक गुणों के लिए जाने जाते हैं। नींबू के छिलके कचरे का प्रबंधन जटिल चुनौतियों को प्रस्तुत करता है, विशेष रूप से भारत जैसे देशों में। यहां, जनसंख्या वृद्धि और औद्योगीकरण के कारण बढ़ता हुआ अपशिष्ट उत्पादन लैंडफिल क्षमताओं को प्रभावित करता है।

वैश्विक स्तर पर, लगभग 30-40 प्रतिशत फल और सब्जी उत्पादन बर्बाद हो जाता है, जो घरेलू आकार, आय असमानताओं और अपर्याप्त अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों जैसे कारकों से प्रभावित होता है। कचरे की चुनौतियों का समाधान करने में रीसाइकिल करने और इष्टतम मूल्य निकालने की पहल शामिल है। निपटान प्रथाओं, विशेष रूप से अंधाधुंध डंपिंग को कम करने के लिए तत्काल हस्तक्षेप की आवश्यकता है। एक समाधान फलों और सब्जियों के कचरे से इको-एंजाइम का उत्पादन करना है, जिससे जैविक पदार्थ बहुमुखी उत्पादों में बदल जाते हैं। बढ़ते कचरे की मात्रा को कुशलतापूर्वक प्रबंधित करने के लिए इको-एंजाइम उत्पादन को बढ़ाना महत्त्वपूर्ण है। शून्य-अपशिष्ट ढांचे को अपनाने से कमी, पुनः उपयोग और पुनर्चक्रण की वकालत होती है, जिससे एक परिपत्र प्रणाली को बढ़ावा मिलता है। पशु आहार से लेकर पर्यावरण के अनुकूल सॉल्वैंट्स और एंटीबायोटिक्स उत्पादन तक विभिन्न क्षेत्रों में साइट्रस कचरे का उपयोग महत्त्वपूर्ण है। हालांकि, साइट्रस कचरे के उपयोग को अनुकूलित करने से न केवल पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान होता है, बल्कि मूल्यवान जैव-आधारित उत्पाद भी मिलते हैं, जो कुशल अपशिष्ट प्रबंधन रणनीतियों की तत्काल आवश्यकता पर जोर देता है।

जैवसक्रिय और पोषण संबंधी संरचना : छिलके, बीज, रस पुटिकाओं और झिल्ली सहित त्यागे गए खट्टे घटक, आहार फाइबर, फ्लेवोनोइड्स, पॉलीफेनोल, शर्करा, कैरोटीनॉयड, एस्कॉर्बिक एसिड और आवश्यक तेलों जैसे उच्च-अतिरिक्त-मूल्य यौगिकों का एक पर्याप्त और आर्थिक रूप से मूल्यवान स्रोत दर्शाते हैं। ये खट्टे अपशिष्ट, अपने उच्च शर्करा स्तरों के साथ, बायोएथेनॉल उत्पादन में किण्वन जैसी प्रक्रियाओं के लिए महत्त्वपूर्ण साबित होते हैं और ठोस अवस्था किण्वन के लिए सब्सट्रेट के रूप में काम करते हैं।

उप-उत्पाद उपयोग : नींबू उत्पादन में प्राथमिक चुनौती कठोरता है, जो विश्लेषकों को उप-उत्पाद उपयोग, विशेष रूप से छिलके और बीज का पता लगाने के लिए प्रेरित करती है, ताकि समग्र नींबू उपयोग में सुधार हो सके। सभी खट्टे फल, छिलके और पोमेस सहित प्रमुख प्रसंस्करण उप-उत्पाद, ताजे फल का 55-60 प्रतिशत हिस्सा बनाते हैं। ये उप-उत्पाद विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं, कीटनाशक, धूम्रक और कीट विकर्षक के रूप में कार्य करते हैं। वे वाष्पशील तेल और बीज के तेल को पुनः प्राप्त करने और शुद्ध करने, मवेशियों के चारे के रूप में गोली के रूप में सूखे छिलकों को संसाधित करने और खट्टे छिलके को फिर से उपयोग में लाने में भी प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

भविष्य की संभावना : साइट्रस प्रसंस्करण अपशिष्ट, जो पौधों से प्राप्त प्राकृतिक पूरकों में प्रचुर मात्रा में होता है, खाद्य उद्योग में सिंथेटिक योजकों को प्रतिस्थापित करने के लिए तैयार है। इसके स्वास्थ्य लाभों के बारे में बढ़ती जागरूकता से प्राकृतिक अवयवों की मांग बढ़ने की उम्मीद है, खासकर भोजन, सौंदर्य प्रसाधन और फार्मास्यूटिकल्स में।

निष्कर्ष : नींबू का कचरा, जिसमें अपशिष्ट जल और छिलके शामिल हैं, दवा, कॉस्मेटिक और खाद्य उद्योगों में महत्त्वपूर्ण है। इस कचरे का प्रभावी ढंग से प्रबंधन करने से मिट्टी को प्राकृतिक कंडीशनर और पशु आहार के रूप में समृद्ध करके आर्थिक लाभ मिलता है। बायोएक्टिव यौगिकों से भरपूर, यह बेहतर स्वास्थ्य परिणामों के लिए सूजन, संक्रमण और घनास्त्रता से लड़ता है।

हालांकि, निपटान पर्यावरणीय और आर्थिक चुनौतियों का सामना करता है। एक सोखने वाली सामग्री के रूप में खट्टे गूदे का उपयोग औद्योगिक अपशिष्टों को प्रभावी ढंग से शुद्ध करता है। हमारी मजबूत वकालत खट्टे कचरे के निपटान को समाप्त कर सकती है, इसके विविध लाभों के बारे में जागरूकता को बढ़ावा दे सकती है। यह रणनीति अपशिष्ट संचय को कम करती है, स्वस्थ प्रथाओं को प्रोत्साहित करती है और सिंथेटिक उत्पादों पर निर्भरता को कम करती है, जिससे स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए बहुआयामी लाभ मिल सकते हैं।

कविताएं

बरसात

बरसात का मौसम।
बूंदों की है रिमझिम।
बादल की कृपा से,
धरती हुई है नम।

ठंडी हवा चली।।
राहत हमें मिली
उद्यान खिल उठे।
मोरों की छमा-छम।

तालाब भर गये।
मेंढक भी गा रहे।
खेतों में धान के।
पानी गया है रम।

पिकनिक मना रहे।
आनंद कर रहे।
हंसते जगत को देख।
सूरज का ताप कम।

छतरी निकल गई।
पहने हैं रेनकोट।
सूखी थी जो नदी।
पानी से चमाचम।

✍ संदीप पांडे

किसान

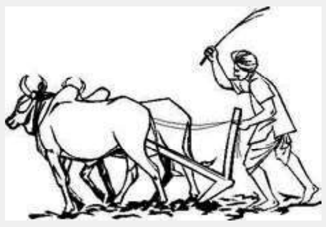

हैं भारत की शान किसान,
खेतों की पहचान किसान।

हर मौसम में खेती करते,
भर देते सारा खलिहान।

खून-पसीने से खेतों में,
खूब उगाते गेहूं, धान।

रोज सवेरे बैलों के संग
गाते जाते हैं श्रमगान।

अन्न उगाते हैं खेतों में,
देते हैं फसलों का दान।

खेतों में फसलें लहराना,
अपने मन में लेते ठान।

आलस में ये कभी न पड़ते,
मेहनत पर देते हैं ध्यान।

गर्व हमें इनकी मेहनत पर,
करते हम इनका सम्मान।

✍ डॉ. फहीम अहमद

संस्मरण

स्वतंत्रता का मूल्य

बात वर्ष 2015 की है जब मैं राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला ज्वालामुखी, जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश में एक प्राध्यापिका थी। विद्यालय में एक आयोजन था। स्टेज के सामने विद्यालय प्रांगण के तीनों ओर दीवार थी जिसके कोने में गेट था। जिसके बाहर सड़क का दृश्य साफ दिखाई पड़ता था। विद्यार्थियों ने रंगारंग प्रस्तुतियां दीं। मुख्यातिथि और प्रधानाचार्य के भाषण व पुरस्कार वितरण के उपरांत कार्यक्रम के अंत में मंच संचालक ने सभी को अपने स्थान पर खड़े होने का आग्रह किया और माइक पर राष्ट्रगान की धुन आरंभ हुई।

राष्ट्रगान की धुन से सारा पांडाल गुंजित होने लगा। क्योंकि मेरी कुर्सी के ठीक सामने विद्यालय का गेट था, तो मेरी नजरें बार-बार उस ओर जा रही थीं। मैंने देखा सड़क पर क्रीम रंग का धोती कुर्ता पहने, हाथ में लाठी के सहारे एक बुजुर्ग अंकल जा रहे थे। साफ क्रीम रंग के कुर्ते पर भूरे रंग की कमरी और सिर पर गांधी टोपी उनके व्यक्तित्व को और आकर्षक बना रही थीं। जैसे ही राष्ट्रगान आरंभ हुआ, मैंने देखा अंकल ने तुरंत झटके से अपनी लाठी सड़क के किनारे फेंक दी और शिष्टता के साथ सावधान अवस्था में खड़े हो गए। कमजोर बूढ़ी हड्डियों के कारण, बिना सहारे खड़े होने में उनकी टांगें लड़खड़ा रही थीं। किंतु राष्ट्र भक्ति की शक्ति उन्हें उस अवस्था में खड़े रहने में हिम्मत दे रही थी। मैंने देखा वे भी धीमी आवाज में राष्ट्रगान गुनगुनाने लगे।

देश के प्रति प्रेम व सम्मान उनके वृद्ध किंतु अनुभवी चेहरे पर साफ झलक रहा था। राष्ट्रगान के उपरांत मैं भागती हुई उनसे मिलने गेट से बाहर निकली। मैंने देखा अंकल ने हाथ जोड़ विनम्र भाव से नतमस्तक होकर तिरंगे को प्रणाम किया। उन्होंने अपना नाम सुशील रतन बताया जो स्वतंत्रता संग्राम में हिमाचल के स्वतंत्रता सेनानियों में से एक रहे हैं।

उन्होंने मुझसे कहा, 'ऊंचा लहराता हुआ तिरंगा हमें अपने देश के लिए गौरवान्वित अनुभव कराता है। बेटा, तुम एक अध्यापिका हो। अपने विद्यार्थियों को स्वतंत्रता का मूल्य समझाओ। भ्रष्टाचार मुक्त भारत बनाने में उनका मार्गदर्शन करो। नैतिकता व सही दिशा में कार्य करने की प्रेरणा दो। तभी हमारी स्वतंत्रता सार्थक होगी। अन्यथा हमारा देश पुनः भ्रष्टाचार की बेड़ियों में जकड़ा जायेगा'। उनके कहे शब्द आज भी मेरे मानस पटल पर अंकित हैं। ज्वालामुखी से हिमाचल के इस स्वतंत्रता सेनानी पण्डित सुशील रतन जी का 2019 में निधन हो गया। प्रतिवर्ष हर गणतंत्र दिवस पर मुझे उस महान व्यक्तित्व का स्मरण होता है।

✍ मंजरी वी महाजन

लघु कहानी

फेसबुक स्टेटस

उस दिन सुनीता सुबह पांच बजे उठ गई थी और उठकर सीधे रसोई में गई और भोजन पकाने लगी। जैसे ही सुरेश ने रसोई घर से बर्तनों के टकराने की आवाज सुनी तो वह भी जाग गया। सुरेश की उम्र लगभग 46 वर्ष है और सुनीता लगभग 44 वर्ष की होगी। सुरेश ने सुनीता को देखा तो वह बिना सिर ढके भोजन पका रही थीं। आटा गूंथ रही थी। दोनों बच्चे सो रहे थे। सुरेश ने कहा, सुनती हो! तुम खाना तो पका रही हो लेकिन तुमने सिर ढक कर नहीं रखा है। पता है हमारे शास्त्रों में बिना सिर ढक कर खाना बनाना कितना बुरा माना जाता है।

सुनीता आधुनिक विचारों की महिला थी। ये विचार सुनकर वह उस पर झल्ला उठी और उनके बीच बहस शुरू हो गई। बहस शुरू होते ही दूसरे कमरे से बच्चों की भी आवाज आने लगी। क्या कर रहे हो मम्मी-पापा! आप लोग भी सुबह-सुबह ही लड़ाई शुरू कर देते हो।

खाना बनाना तो दूर उनके बीच बहस ही लंबे समय तक चलती रही। सुनीता कहती, मुझे इतने वर्ष हो गए आपके साथ रहते आपने कभी मुझे नहीं समझा। मेरी सहेलियां भी हैं जिनकी शादी हमारे साथ ही हुई हैं, लेकिन उन्होंने कभी भी इन दकियानुसी विचारों का अनुसरण नहीं किया और एक मैं हूं जो इतनी पढ़ी-लिखी होने के बावजूद भी आपके इन विचारों को सुनना पड़ रहा है। खुद को कोसती हूं मैं उस दिन के लिए जब मैंने आपके साथ विवाह के लिए हामी भरी थी। दरअसल, सुरेश व सुनीता का प्रेम विवाह हुआ था। ये उस समय की बात है जब सुनीता कॉलेज में पढ़ती थी। हालांकि सुनीता के माता-पिता इस विवाह के लिए सहमत नहीं थे। सुरेश चुपचाप सुनीता की बातों को सुन रहा था।

आखिर उसके पास उस समय तो कोई विचार भी नहीं आ रहा था। सुनीता की याददाश्त इनती तीव्र थी कि उसके साथ बीस वर्षों के अवधि में जो भी अच्छा-बुरा उसके साथ घटित हुआ था उसे वह उसकी स्मृति में इस तरह छपा था कि वह उसे मिनटों में बयां कर देती थीं। सुरेश चुपचाप सुनता रहा आखिर बेचारा बोलता भी तो क्या बोलता एक सिर ढकने के पीछे उसे लगभग पौने घंटे का लेक्चर जो मिल गया था।

समय बीतता गया उनके बीच विचारों का वह द्वंद्व चलता ही रहा। सुरेश अपने विचारों व परम्पराओं के अनुसार आचरण से सुनीता को समझाने की कोशिश कर रहा था। पहले भी दोनों के बीच इस तरह की बहस आम बात थी। इन विचारों से वह कुछ समय के लिए तो प्रभावित होती लेकिन वह मन से इन विचारों को नहीं स्वीकारती जो उसके प्रतिउत्तर के ढंग में साफ प्रतिबिंबित हो रहा था। जब कभी भी सुनीता व्हट्सऐप व फेसबुक पर अपनी सहेलियों के स्टेट्स देखती थी तो सुरेश को टोकती कि देखो किस तरह से मेरी सहेलियां उन्मुक्त होकर अपना जीवन व्यतीत कर रही हैं।

हालांकि सुनीता भी कामकाजी महिला थी लेकिन उसे माह में कुछ दिन ही काम पर जाना होता था। उनकी यह बहस घंटों चलती रही और फिर क्या था। सुनीता खाना बनाकर निपटी और लंबी सांस भरते हुए बिस्तर पर लेटते हुए मोबाइल चलाने लगी। सुरेश भी ऑफिस के लिए तैयार हुआ और बच्चे भी स्कूल चले गए। इस दरमियान सुनीता फेसबुक पर स्टेट्स चेक कर रही थी जिसमें एक संत के द्वारा बताया जा रहा था कि औरतों को बिना सिर पर कुछ ओढ़े भोजन पकाने पर कितना दोष है?

बताया जा रहा था कि बिना सिर ढके पूजा स्थल पर जाना और भोजन पकाना नकारात्मक ऊर्जा को बुलावा देना है। यदि सिर ढककर महिलाएं भोजन पकाती है और मंदिर में प्रवेश करती है तो मन मस्तिष्क भी एकाग्र रहता है। ऐसा माना जाता है कि आकाशीय विद्युत तरंगे हमारे सिर के माध्यम से ही शरीर में प्रवेश करती है जो कई बार स्वास्थ्य और मस्तिष्क के लिए हानिकारक हो सकती है। भोजन में बाल इत्यादि गिरना भी भोजन को अशुद्ध कर देता है।

ये सब सुनकर सुनीता की आंखे खुल गई और वह सुरेश की तरफ पश्चाताप की दृष्टि से देखने लगी। उसकी आंखों से निकल रहे अश्रु पर सुरेश ने उससे पूछा। क्या हुआ?

सुरेश ने भी उस फेसबुक स्टेट्स की आवाज सुन ली थी। लेकिन वह उसके सामने जानबूझकर अनजान बना रहा। इससे पहले जब सुरेश यहीं बात समझाने की कोशिश कर रहा था तो वह समझने को तैयार नहीं थी। लेकिन सुरेश को अब पता चला गया था कि सुनीता को अपनी गलती का अहसास हो गया है।

✍ हेमंत शर्मा

पहाड़ी भाषा कनै साहित्य लोक मंच

गिरिराज साप्ताहिक, शिमला, 21-27 अगस्त, 2024

भेडू

✍ अनुवाद : जीवन धीमान
मूल लेखक : रणजोध सिंह

सर्दीयाँ रे मौसम था, बड़ा बड़ीया दिन था, हऊँ अपणयां दो लग दोस्तां प्रो. तोमर कने प्रो. राणा सौगी माशु-चयोग गई रा था। असल ची ये गांव प्रो. तोमर रे सौरीयां रा था कने तीस रे साले रा ब्याह था, जिसची जाणे खातर आहें लोग तिथी पुजी रे थे। ये गांव सिरमौर जिले रा इक बड़ा भारी वांकीया जगह ची था, से टौंस नदीया रे कनारे बसीरा था, नदीया रे इस साइड हिमाचल प्रदेश रा ये वांका गांव है कने दूजे कनारे उत्तराखंड रे पहाड़ी गांव किसी जन्नत रा का एहसास करवायें। वैसे तां ये जगह पौंटासाहिब शिलाई रोड़ा पर सड़का ने जुडी रा। इस गांवां जो पूजणे जो कफोटा नांवां रा इक कस्बा है से उस टैम बिलकुल भी विकसित नीं था। बाज़ारा रे नांवां पर सिर्फ दस-पंद्रह दक्वानां थी जीथी लोकल सब्जियां ते लेई ने रोज़मरा रा सम्मान खरीदी स्कां थे। पर अज कीया डेटा ची इने कस्बे अच्छे-खासे शहरा रा रुप लेई रा, अनगिनत दुकानां ते अलावा इक डिग्री कॉलेज भी खुली गई रा है।

ख़ैर उस वक्त इस कस्बे ते माशु-चयोग तक जाणे जो लगभग पंद्रह किलोमीटर रा कच्चा रस्ता ही था, जिस पर या ता पैदल चली सकां थे या फेरी छोटी गाड़ियां ते पुजी सकां थे। प्रो. तोमर रे सौरीयाँ रे खुशीया रा माहौल था, हुन्दा भी क्यों न, आखिर घरा ची मुनु रा ब्याह था। पूरा घर पुरानी शैली से बना हुआ था। घर बनाणे ची जादातर लकड़ी ही लगाई री थी। घरा रे थले हिस्से ची कुछ कमरे थे, जीथी रसोई कने परौणे रे बैठने रा इंतजाम था। घरा रे बिल्कुल सामणे इक खुला सा कच्चा आंगण था कने आंगणा रे दूजी तरफ पशुओं रे खातर गोड (पशुशाला) था। घरा रे उपरी हिस्से ची छोटे-छोटे कमरे बणी रे थे जिनां रे भीत लकडीया रे बणी रे बरांडे ची खुलां थे, जिथी बैठी ने सिर्फ अंगणा ची होणे वाले कम्म काज पर नजर रखी सकां थे बल्कि प्राकृतिक नजारयां रा नन्द लेई सकां थे। सभी ते पैले मेरा ध्यान गोडा (पशुशाला) खा गया क्योंकि ओथी इक बड़ा बांका चीटे (सफ़ेद) रंगा रा इक बकरा बनी रा था। तिस दिना ते पैले मैं एडा पूरा चीटे रंगा रा बकरा नीं देखी रा था। अज का टैम हुंदा ता हऊँ तिस वांके जानवरा ने कई सेल्फियाँ लेंदा पर तिस टैम कैमरे वाले मोबाईल आम आदमी ले नीं पुजी रे थे। मीन्जो कने मेरे मित्र प्रो. राणा जो ब्याह वाले घरा रे ठीक सामणे इक रिश्तेदारा रे घरा ची ठहराया गया। ओथी भी ठीक एडा अंगण था, दो मंजला मकान था, बरामदा था, कने प्रकृति रा अद्भुत नजारा था। अहाँ साही शैहरां ची रैहणे वाले लोकां जो ये बड़े सुखा रे पल थे। दूर पहाड़ीया पर इक होर वांका घर बणी रा था। मैं हैरानीया ने इकदम प्रतिक्रिया कीती, ''वाह!...पहाडीया रीया चोटिया पर बणी रा घर बड़ा वांका है, न कोई धूल, न कोई रौला, न कोई प्रदूषण! एथी तां लोक बमार भी नीं हुंदे हुणे।'' ''लगां तीजो ये जगह बड़ी पसंद आई गी हुणी।'' मेरे दोस्ते हसदे बोल्या। मैं भी पूरीया ईमानदारीया ने जबाब दित्या,'' बिल्कुल ठीक बोल्या, मेरा दिल तां करां कि हऊँ शैहरा रे भीड़ भाडाके जो छड़ी ने सदा सदा जो इस वांके गांवां ची बसी जाऊं।'' मेरे दोस्ते जोरा ने ठहाका लगाया कने भेद भरी हस्सी ने बोल्या, ''इस घरा जो जरा धयाना ने देख, ओथी इक बकरा कने छेलू भी बनी रा, हुई सकां कल उसा रसीया ची हऊँ कने तू भी बन्नी रे हो।'' एकदम मेरे शरीर ची डर बैठी गया, क्योंकि इसते पैले मैं भी शैहरा ची लोकां ते एड़ी कहानियां सुणी री थी कि पहाडा रे लोक लग लग प्रकारां रा जादू टोणा जाणायें। ये एड़ी मंत्र विद्या जाणायें कि किसी भी आदमी जो मंत्रा ने भेडू, बकरा या छेलू बनाई सकांयें। फेरी याद आया कि किसी अनजाण पहाड़ी गांवां ची जाई ने चा भी नीं पीणी चाहींदी क्योंकि से मंत्रा ने चाई पीणे वाले आदमी जो अपणे वशा ची करी लें, कने आदमी चाही ने भी तीनां रे जुन्गला ते नीं छुटी सकदा। हुण सूर्यदेव राम करने जो अपणे सतां घोडयां सौगी आखीं ते दूर हुई गई रे थे, कने राती रा नेरा छाणे लगी रा था। सेही पहाड़ से जे दिना रे टेमा स्वर्गा ते वांके लगी करां थे, हुण मौण धारण करी ने किसी पहुंचे हुए तपस्वी साही शांत भावा ने बैठी रे थे। ब्याह वाले घरा ते राती रे खाणे रा नयुन्द्रा देणे जो प्रो.तोमर अपणे आप आई रे थे। ओथी पुजी ने तां मन्नो स्वर्ग ची ही पूजी गे हो। घरवाले तो घरवाले, पूरे गांववासियों रे चेहरे पर खुशी थी। सारे लोक जमीना पर बैठी ने धाम खाणे लगी रे थे। सभी ते पैले भात, शक्कर, दूध कने बडी सारी देसी घयूआ (घी) री बणी री मीठी खीर जिसरा पारम्परिक नौं छोचिंचु है दीती जिसो पटाणडयां ने खाएं। इसते बाद इस खाणे सौगी पांज-छे स्थानीय सब्जियां दें, जीनां ची स्वादा सौगी-सौगी सफाईया रा भी ध्यान रखां यें। इस खाणे जो पत्रां ची खायें। धामा री खास गल्ल ये थी कि ये सारी धाम बोटी बनाएँ, कने से ही इस खाणे जो बरताएं। तुहां जो सिर्फ अपणीया जगहा पर बैठणा कने वाकी सब कुछ बोटियाँ तुहां ले अपु ही आई जाणा कने हर सब्जी पतला पर मिलणी, जितणी तुहें खाई सकाए। इस्ते इक तां अनाजा री बरबादी नीं हुन्दी, दूजे सौगी-सौगी खाणे ते लोकां ची आपसी प्यार-प्रेम भी बदां। खाणे ते बाद नाच गाणे रा दौर शुरू हुआ जिस्सो नाटी बोलांयें। सिरमौरा री नाटी तां वैसे भी पूरे हिमाचल ची मशहूर है। शुरु ची इहा नाटीआ ची पंच-सात लोक ही थे पर आस्ते आस्ते कई आदमी, जनानां, जवान लड़के-लड़कियाँ, बच्चें, एथी तक कि बूढ़े भी, सच बोलूं तां पूरे रा पूरा गांव ही इस नाटीया ची कठ्ठा हुई गया। ढोल-नगाड़ों री थाप कने लोकल (स्थानीय) गाणे रे मीठे बोल सौगी नाटी। कुछ आदमी तां नचदे-नचदे औंजल भरी भरी ने दारु इहाँ पीणे लगी रे थे कि मन्नो चरणामृत पीणे लगी रे हो। पर फेरी भी कोई भेदभाव नीं था। हलांकि दूरदर्शन कने सिनेमा पर नाटीयां कई बार देखी री थी पर जिंदगीया ची उस दिन पैली बार देखी। राती जो देरा तक नाटी चलती रेही। पर जैली आहें अपणे कमरे ची पहुँचे तां राती रे साढ़े बारह बजी गई रे थे। सामणे पहाड़ हुण भी मौन धारण करी ने घोर तपस्या ची लीन था, डाल चुपचाप किसी सजग प्रहरी की भांति खड़े थे, टौंस हल्ला मचान्दी हुई यमुना में विलीन हो जाने के लिए आतुर थी।

नेरे ची पहाड़ी पर बणी रा घर थोड़ा थोड़ा नजर आई करां था, पर आंगणा ची बन्नी रा बकरा कने छेलू नजर नीं आई करां थे, क्या पता तीनां जो राम करने जो गोड़ा ची बन्नी तरा हो। भयागा उठदे ही प्रो. तोमर नठदे-नठदे मेरेला आये कने बोले,''तुहें अहारे ख़ास परौणे तां तुहां जो इक जरूरी परंपरा करवाणी।'' से अहाँ जो खुशीया ने गोड़ा रे ठीक सामणे वाले आंगणा ची लेई गया। सेही वांका चीटा बकरा जिसने हऊँ फोटो खिंचवाणे जो तयैर था, तिस अंगणा रे बीचो-बीच खडी रा था। तिसरे मथे पर लाल रंगा रा सिंदूरी टीका लगी रा था, गले ची मोली बन्नी री थी। तिनें मीन्जो दसया अज ब्याह ते पैले देवते जो इस बकरे री बलि देणे पौणी कने ये शुभ कम तुहां ते करवाणा है। हऊँ तां सुणी ने पसीना-पसीना हुई गया। मेरी दशा समझी ने प्रो. तोमर ने मीन्जो समझाया कि घबराणे री कोई गल्ल नीं है, मीन्जो सिर्फ तलवार बकरेरीया कयाडीया (गर्दन) ने छ्वाणी है, वाकी कामम लोकां अप्पू करी लैणा। भेडू बणाणे वाली गल्ला ते तां हऊँ पैले ही परेशान था पर बलिया रे नांवां ते इतना डरी गईरा था कि मैं येडा **(क्रमशः)**

कबता

सौअण दिआं चड़ियां

सौअण दे नज़ारे कन्नैं पींगां रे हुलारे,
आद औदें घड़ियां- घड़ियां
छैल बाँकियां उन्दिया , सैअह् सौअण दिआं चड़ियां
भोले बाबे दे मेले लगदे , बाअर नाग नागणियारे सज़दे
टेकण औंदे मथ्थे माहणु सारे, संगता लेई काबड़ चलियां
बाबा अमरनाथ, श्रीखण्ड महादेव, बाबा मणीमहेज़
संगता पैदल चंडे लिए , करणां दर्सण चलियां
भोले बाबे दे रंग रंगीया एह सौअण दिआं चड़ियां।
छैल मतियां उन्दिया सौअण दिआं चड़ियां
काअले -काअले वद्दल गड़कदे घड़ियां-घड़ियां
निअले -निअले अम्बरे टक्की लेदियां
काअले -चिट्टे वद्दलां रिया लड़ियां
मतिया बाँकिया लगदीयां मिन्जो सौअण दिआं चड़ियां॥
पाणी ईयां पौंदा, तियां हीरे मोतियां रियां लड़ियां
एह तियां लिसकण, जियां सतारेयां कन्नैं जड़ियां
चँऊ बखे सैलिया-सैलिया गौर-बतां लगदीयां खरीयां
अम्बा, सेबा, कनै डालियां परियां परियां
ज़िवां रिया गठ्ठीचा निकलदियां टिडुआं मकोडुयां,
जिजुयां कण्डुया दियां लड़ियां
सबना रितां ते खरीयां, एअह सौअण दिआं चड़ियां।
छड़- छड़ वगदे नाअलु खोलु, चीलां चुलदीया अरियां परीयां
उछली-उछली जांदीया खडआं, उछाली मारण घड़ियां- घड़ियां
निक्के न्याणे मते मजे लेंदे, कागदे रियां सैअह्
नाव वणाई कन्नै खेलदे, छवाके लांदे घड़ियां-घड़ियां
रितु राज रथ्थे चड़ी ओन्दे फसलां खड़ियां अरीयां-परीयां
कितणियां छैल बाँकियां एह् सौअण दिआं चड़ियां ॥
सैलियां-सैलियां धाअरा तीतर सीटीयां बजादे
पखेरू चैंचैं पांदे, सिखां दिन्दे भलियां-भलियां
मोर पाअला पादें, कूके कोअल घड़ियां-घड़ियां
मिजरा वनदीयां पैंणा, भाऊ यां जो
पैंणा भाऊ रीया छैल लगदीयां जोड़ीयां
सौअण दे मीअने रे रीती रूआजां कन्नै बअड़ियां
सबणां रे दिलडुए ठण्डाई दिन्दीयां एहअ सौअण दिआं चड़ियां

✍ **सुषमा देवी**

(गतांक से आगे)

संस्कृतियां री जातरा : कावड़ यात्रा

कउंकि केसी बी देसो री पछ्याण तेथोरिया संस्कृतिया रे अंदर बराजमान धार्मिक, समाजिक, आर्थिक मूल्या, ते हो ई। होर जो सरकारा इन्हा सबनी री रक्षा करने दे पूरी तरह समर्थ हो ई से ही सरकार जनतारिया नजरा दे लोकप्रिय, अनुशासन प्रिय, जागरुक, जिम्मेदार, टकाऊ होर मजबूत सरकारा होई।

येबे जियां कि म्हारा देस भिन्न-भिन्न धर्मा, सम्प्रदाया रा देश आ। तो ऐसे मोके एकी महिने तक चलणे वालिया येसा महान कावड़ यात्रा या श्री अमरनाथ यात्रा जिया इना होरी बी कई महान यात्रा रे ठीकठाक, बेहतरीन संचालनो, प्रबंधनो रे जरीये जनमानसो यानि आम आदमियो रे जिउओ दे सुरक्षा, फाज्ती री पूरी भावना पइदा करना ही तिन्हा परदेसा रिया होर केन्द्र सरकारा री पहिली प्राथमिकता, पहिला उत्तरदायित्व हो आ जेतो ते यो सम्बंध राखोइया या जेथो जेथो रे लोक इन्हा दे शामल हो ये। ये बात पक्की ये कि जो भी सरकार सुरक्षा इंतजामा रेया इन्हा मापदण्डा, पई मानेया पांदे खरी उतरोई, तेसा रे परती परदेसो, देसो रिया जन्ता री तिथना ही जादा बस्वास होर आस्था मजबूत होई। येते रे फलादेसे की से सरकार तितणी ही टकाऊ होर मजबूत बणी दी रहो ई जो आगे जाई कि केसी बी परदेसो या देसो रिया तरक्किया रा मील पात्थर साबत होई।

बाहरलेया मुल्खा दे येड़िया सरकारा री बदौलत पूरे देसो रा आदरमान, बपार, आपसी मैत्री संबन्धा ते लावा कई होर बी लाभ मिलोए। येते ते लावा आगला प्रस्न आ कि जनता होर सरकारा खे इन्हा आयोजना ते क्या मिलोआ ? से येते रा जबाब ये आ कि अगर घरेलू बपार-बिजनेसो री बात करिये तो हर साल एकी महीने तक चलने वाले येस ''कावड़ यात्रा महोत्सवो'' दे लाखा ई लोक, लाखा ही कावड़ा खे त्यार करने होर बनाणे खातर प्रयोग कित्ती जाणे वाली सामग्री जियां कि बैन्जो-बांसो या होरी किस्मा री बैंहिंगी बनाणे दे इस्तेमाल हूणे वाली लकड़ी, गंगाजल भरने खे, कावड़ो राख्याजाणे वाले केसी बी धातुओ रे मटके, बांके लोटे,प्लास्टिक गेलणी बगैरा येते लावा कावड/बैहिंगयां सजाणे खातर प्रयोग कित्ते जाणे वालिया रंगबरंगिया सजावटी फूल-माला आदि रा कारोबार एकी येड़े मजबूत होर महान कुटीर उद्योगो रा रुप धारण करी लओआ जेते कित्ते आम साधारण आदमियो खे जो चार पइसे मिलोए तेते की तेसरा सारे सालो रा गुजारा अरामो दे हुई जाओआ।

येते ई साथे ये बी ध्यान राखणे वाली बात है कि येते बिजनेसो कारोबारो रा दूजा भाग बी आ जेति हर साल क्या यड़े कावड़ पर्वो, क्या नवरात्र, कृष्ण जन्माष्टमी, क्या कुम्भ या क्या देसो दे ऐड़ड़े ही हुणे वालेया नेका धार्मिक उत्सवा पांदे धारण करने या पहिनणे खातर बणाई गई 'विशेष तरह री हर-हर गंगे, हर-हर महादेव, जय महाकाल, जय माता की, जय श्री राधे, जय श्री कृष्ण जे नेका ही पुण्य 'लोका या नारेया ते सजिया दिया सुंदर बनैनी, टी- सर्टा, कमीजा, धोतिया, कुर्ते पजामें, निक्करा होर टोपियां, गलो होर हाथो दे धारण करने वालिया चइना, लाक्ट, होर कांगणे आदि रे कारोबारो ते हुणेवाली करोड़ा-अरबा रपैया री कमाईया रा तो बोलणा ई क्या ? कपड़ा उद्योग जगतो साथे जुड़ेदेया लोका खे क्या ये बात एकी तरहा ते आक्सीजन देणे रा काम नी करदी ? जरुर, जरुर येते साथे देसो रे अंदर पइसे रे परचलणो खे बी बढ़ावा देओई जो की राष्ट्रीय आर्थिकिया रिया मजबूतिया खे बी अच्छी खबर ई।

क्या ये बात आसा सबनी भारतवासिया खे गर्वो, फख्रो री गल्ल नी ये कि येसा यात्रा रे समय जेबे सारी दुनिया री नजर पूरे भारतो पांदे लगीदी हो ई ठीक तेस ई समें पुरे देशो रे कुणे-कुणे ते आये दे कावड़िया रिया कांधा पांदे सजेदेया कावड़ा पांदे पूरिया शाना साथे जेबे ''लैहरांदा 'म्हारे देसो रा तिरंगा झंडा'' आपणिया समृद्ध सांस्क्तिक विरासता री मार्फत पूरी दुनिया खे हिन्दूस्तानो रिया मजबूत राष्ट्रीय एकता, अखण्डता, सौहार्द, आपसी भाईचारे, होर विश्व बंधुत्व री मंगलकारी भावना रा संदेशा बी यात्रा साथे-साथे सारी दुनिया खे देणे लगी रौआ। आसे सब देसवासी येसा गला ठीक समझू जाणू ये कि केवल होर केवल कोई बी स्थिर सरकार ही राष्ट्रोरिया सामाजिक, आर्थिक व सामरिक उन्नतिया दे आपणा अहं योगदान देंदे हुए दुनिया दे आपणे देशो री विशेष पैहचाण बनााणे दे कामयाब हो ई, सक्षम हो ई। याद राख्यो! जो देश या देसो री सरकार इना सबनी री रक्षा नी करी पांदे तो स्यो तो जिंउदे रैंहदे बी मुये-मुके रे ही बराबर ये। कउंकि येड़ेया देसा पांदे कदी बी कोई बी दुश्मण देस हमला करी की तेसरा नांव नसाण खत्म करी सको आ।

येते खातर ये कावड़ यात्रा, अमरनाथ,चार धाम आदि रिया जात्रा या दूजे कुम्भ जे महा आयोजन मैहज सधारण यात्रा या आयोजन नी हुई की देशो रे मान, सम्मान, गौरव, अस्मिता, राष्ट्रीय एकता व अखण्डता रीया बी परतीक ये। से येते खातर जनता, सरकार होर देस हितो दे इन्हारा हर स्थितिया दे जारी रैहणा अति जरुरी आ। **समाप्त**

प्रदेश भर में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया स्वतंत्रता.......

(पृष्ठ एक का शेष) कार्यकाल में 31 हजार रोजगार के अवसर सृजित किए हैं जबकि पूर्व सरकार ने सिर्फ 20 हजार लोगों को रोजगार मुहैया करवाया है जिनमें से ज्यादातर भर्तियां कानूनी विवादों में फंसी रही। प्रदेश में पहली बार तहसील और उप-तहसील स्तर पर इंतकाल अदालतों के माध्यम से 1 लाख 57 हजार 500 राजस्व मामले निपटाए गए हैं।

उन्होंने कहा कि कांगड़ा जिले की प्रतिष्ठित शख्सियतों ने प्रदेश का मान बढ़ाया है। यहां के लोगों ने देश की सेनाओं और अन्य प्रमुख क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है, जिससे राष्ट्र को गौरव मिला है, जिनमें भारत के राष्ट्रगान की धुन बनाने वाले कैप्टन राम सिंह और स्वतंत्रता सेनानी पहाड़ी गांधी बाबा कांशी राम शामिल हैं। उन्होंने कहा कि धर्मशाला में एक भव्य युद्ध संग्रहालय विकसित किया जा रहा है। वर्षों से लंबित 643 करोड़ की फिन्ना सिंह सिंचाई परियोजना को भी मंजूरी दी गई है। इसके साथ ही 234 करोड़ लागत की सुखाहर सिंचाई योजना को भी मंजूरी दी गई है, जिससे शाहपुर और ज्वाली के 22 गांव लाभान्वित होंगे।

मुख्यमंत्री ने कई संस्थाओं और शख्सियतों को विशिष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया। डिजिटल प्रौद्योगिकी और शासन विभाग को सिविल सेवा पुरस्कार प्रदान किया गया। हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद के महानिदेशक डॉ. राकेश कुमार, दिव्य मानव ज्योति सेवा ट्रस्ट के संस्थापक सत्य प्रकाश शर्मा और प्रो. महेश वर्मा को प्रेरणा स्रोत सम्मान प्रदान किया गया। केहर सिंह ठाकुर, प्रो. केशव राम शर्मा और पूनम ठाकुर को हिमाचल गौरव पुरस्कार प्रदान किया गया। टी.वी. कार्यक्रम केबीसी से सुर्खियों में आए अरुणोदय शर्मा को विशेष पुरस्कार दिया गया। ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने करदाताओं और व्यापारियों को विभिन्न नियमों के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिए एक सप्ताह तक चलने वाले 'करदाता संवाद अभियान' की भी शुरुआत की। इसके अतिरिक्त राज्य कर एवं आबकारी विभाग शिकायत निवारण के लिए एक वेब पोर्टल शुरू करने जा रहा है जिसे करदाताओं और उपभोक्ताओं की समस्याओं का तुरंत समाधान करने के लिए डिजाइन किया गया है, जिससे विभाग की दक्षता भी बढ़ेगी। उन्होंने कार्य कुशलता बढ़ाने और काम में डिजिटल पद्धति अपनाने के लिए विभिन्न पंचायतों को लैपटॉप भी वितरित किए। इस अवसर पर स्कूली विद्यार्थियों और विभिन्न सांस्कृतिक दलों द्वारा आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया।

केन्द्र से हिमालयन बटालियन.....

कुलदीप कुमार, हवलदार सुरेश कुमार, हवलदार श्याम राणा, नायक कर्ण जीत सिंह, नायक विजय कुमार, नायक दिलवर खान, लांस नायक जसवीर सिंह, लांस नायक तनजीन थीले, लांस नायक प्रवीन शर्मा, सिपाही प्रकाश चन्द, गनर रोहित, सिपाही हैप्पी, सिपाही मनीष कुमार और अग्निवीर कार्तिक चम्बयाल मातृ भूमि की रक्षा करते शहीद हुए हैं।

जिला हमीरपुर के अणु में स्वास्थ्य, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता और सैनिक कल्याण मंत्री ने जिला स्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह की अध्यक्षता करते हुए राष्ट्रीय ध्वज फहराया और भव्य परेड की सलामी ली।

इस अवसर पर सभी जिलावासियों को शुभकामनाएं देते हुए कर्नल डॉ. धनीराम शांडिल ने कहा कि स्वतंत्रता सेनानियों के कड़े संघर्ष और बलिदानों के कारण ही हमें स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी। स्वतंत्रता के बाद भी देश की सीमाओं की रक्षा के लिए हमारे कई वीर सैनिकों ने सर्वोच्च बलिदान दिए हैं।

प्रदेश सरकार के डेढ़ वर्ष के कार्यकाल की चर्चा करते हुए स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि हिमाचल प्रदेश आज विकास का आदर्श बनकर उभरा है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार का संकल्प है कि हिमाचल आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बने और आने वाले दस वर्षों में देश के सबसे अमीर राज्यों की सूची में शामिल हो।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू के नेतृत्व में जिला हमीरपुर विकास की नित नई बुलंदियों को छू रहा है। हमीरपुर में लगभग 65 करोड़ रुपये की लागत से अत्याधुनिक बस अड्डे का निर्माण तेजी से करवाया जा रहा है। प्रदेश सरकार ने यहां जोनल एवं प्रदेश स्तर के तीन बड़े कार्यालय भी स्थापित किए हैं। हमीरपुर शहर की कायाकल्प के लिए प्रदेश सरकार ने करोड़ों रुपये का प्रावधान किया है।

जिला किन्नौर में राजस्व, बागबानी, जनजातीय विकास एवं जन शिकायत निवारण मंत्री श्री जगत सिंह नेगी ने गत दिनों जिला स्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह की अध्यक्षता की और जिलावासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई दीं। इस दौरान उन्होंने ध्वजारोहण किया तथा भव्य परेड की सलामी ली।

बागबानी मंत्री ने इस अवसर पर जिला के निगुलसरी स्थित ब्लॉक प्वाइंट के बहाली कार्य के दौरान अपनी जान गवाने वाले एल एंड टी मशीन ऑपरेटर मदन के परिजन को एक लाख रुपये का चेक भेंट कर उनके प्रति सांत्वना प्रकट की। इसके अलावा निगुलसरी के ब्लॉक प्वाइंट को पूर्ण रूप से बहाल करने में लगे लोगों व अधिकारियों, कर्मचारियों तथा पंचायत के प्रतिनिधियों को भी सम्मानित किया गया।

वन अधिकार अधिनियम 2006 के तहत किन्नौर जिला के 45 लोगों को राजस्व मंत्री द्वारा भू-पट्टे प्रदान किए गए तथा भूमिहीन व्यक्तियों को उनके अपने ज़मीन का मालिकाना हक प्रदान किया गया।

जिला चंबा में जिला स्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह की अध्यक्षता करते हुए शिक्षा मंत्री श्री रोहित ठाकुर ने कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन और देश की सीमाओं की रक्षा करते हुए हिमाचल प्रदेश के अनेक वीर जवानों ने अपने प्राण न्यौछावर किए हैं। हमें अनके बलिदानों को हमेशा याद रखना होगा। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि गत वित्त वर्ष के दौरान जिला चंबा के विद्यार्थियों को विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाओं के माध्यम से एक करोड़ 15 लाख 41 हजार रुपये की राशि वितरित की गई है। इस दौरान पहली से आठवीं कक्षा तक पढ़ने वाले बच्चों को निःशुल्क वर्दी के लिए पांच करोड़ 80 लाख 7 हजार रुपये खर्च किए गए हैं। शिक्षा मंत्री ने बताया कि जिला चंबा में सीएसआर के माध्यम से 60 स्कूलों के कमरों के निर्माण पर लगभग 12 करोड़ रुपये खर्च किए जा रहे हैं।

सिरमौर जिला मुख्यालय नाहन चौगान में 78वें स्वतंत्रता दिवस के जिला स्तरीय समारोह में ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री श्री अनिरुद्ध सिंह ने ध्वजारोहण किया।

उन्होंने पुलिस, होम गार्ड, एनसीसी व एनएसएस की टुकड़ियों द्वारा प्रस्तुत आकर्षक मार्च पास्ट की सलामी ली। परेड की अगुवाई सब इंसपैक्टर अच्छर सिंह ने की।

इससे पूर्व उन्होंने डॉ. वाई.एस. परमार की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। शहीद चौक पर उन्होंने शहीदों को भी श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

उन्होंने कहा कि जिला सिरमौर में 57 हजार 722 पात्र वृद्ध, विधवा और दिव्यांग व्यक्तियों को सामाजिक सुरक्षा पैंशन पर 91 करोड़ 48 लाख व्यय किए गए तथा वर्तमान सरकार के कार्यकाल के दौरान जिला में बिना किसी आय सीमा के 60 वर्ष से अधिक आयु के 6251 पात्र व्यक्तियों को लाभान्वित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जिला सिरमौर के विभिन्न विकास खण्डों की ग्राम पंचायतों में 12 पंचायत घरों के निर्माण पर लगभग 4 करोड़ की राशि व्यय कर निर्माण कार्य पूर्ण कर लिया गया है।

जिला मंडी के सेरी मंच पर नगर एवं ग्राम नियोजन, आवास, तकनीकी शिक्षा, व्यावसायिक एवं औद्योगिक प्रशिक्षण मंत्री श्री राजेश धर्माणी ने जिला स्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह में ध्वजारोहण किया। उन्होंने कहा कि युवाओं की तकनीकी दक्षता बढ़ाने में तकनीकी शिक्षा विभाग भविष्योन्मुखी पाठ्यक्रमों एवं नवीन पहलों के साथ कार्य कर रहा है। शिक्षा को रोजगार और स्वरोजगार से जोड़ने के उद्देश्य से तकनीकी शिक्षण संस्थानों में कृत्रिम मेधा, डाटा साईंस, मशीन लर्निंग, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, ड्रोन ट्रेनिंग जैसे आधुनिक पाठ्यक्रम शुरू किए जा रहे हैं।

बिलासपुर में जिला स्तरीय स्वतन्त्रता दिवस समारोह का आयोजन आयुष, युवा सेवाएं खेल, कानून एवं विधि परामर्शी मन्त्री श्री यादविंदर गोमा ने मुख्यमंत्री आदर्श राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला छात्र के प्रांगण में किया। कार्यक्रम से पहले मुख्यातिथि ने चंगर स्थित शहीद स्मारक में रणबांकुरों को नमन करके उनको श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

इसके अतिरिक्त विधानसभा अध्यक्ष श्री कुलदीप सिंह पठानिया ने सोलन, उद्योग मंत्री श्री हर्षवर्धन चौहान ने केलांग, कृषि मंत्री चंद्र कुमार ने ऊना, लोक निर्माण मंत्री विक्रमादित्य सिंह ने कुल्लू में जिला स्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह में राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

पर्यटन क्षेत्र के लिए 696 करोड़ की...

(पृष्ठ एक का शेष) पर्यटकों की सुविधा के लिए 65.32 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। नादौन में 64 करोड़ रुपये की लागत से राफ्टिंग कॉम्पलेक्स का विकास, शिमला जिले के बनूटी में 58.37 करोड़ की लागत से वेलनेस सेंटर का निर्माण, मनाली में 45.25 करोड़ की लागत से वेलनेस सेंटर, धर्मशाला में 39. 51 करोड़ की लागत से आइस स्केटिंग रिंक एवं रोलर स्केटिंग रिंक का निर्माण, शिमला में 34.85 करोड़ की लागत से आइस स्केटिंग रिंक एवं रोलर स्केटिंग रिंक का विकास, कुल्लू में 27.76 करोड़ की लागत से वेलनेस सेंटर का विकास तथा कुल्लू जिले में नग्गर कैसल के जीर्णोद्धार पर 11.57 करोड़ व्यय किए जाएंगे। उन्होंने अधिकारियों को परियोजनाओं में तेजी लाने तथा निर्धारित समयावधि में कार्य को पूरा करने के निर्देश दिए।

ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा कि पौंग डैम को अंतरराष्ट्रीय स्तर के 'बर्डरज पैराडाइस' के रूप में विकसित किया जाएगा तथा यह जल क्रीड़ाओं के दृष्टिगत भी उत्कृष्टता का राष्ट्रीय केंद्र बनेगा। उन्होंने कहा कि कांगड़ा हवाई अड्डे का विस्तार किया जा रहा है, इससे क्षेत्र में पर्यटकों को आकर्षित करने में प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने कांगड़ा जिले को राज्य की पर्यटन राजधानी घोषित किया है तथा यहां आने वाले पर्यटकों की सुविधा के लिए आवश्यक पर्यटन अधोसंरचना का निर्माण किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान राज्य सरकार के प्रयासों से हिमाचल प्रदेश में आने वाले पर्यटकों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है तथा इस वर्ष जुलाई, 2024 तक राज्य में 1.13 करोड़ पर्यटक भ्रमण के लिए आ चुके हैं।

हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास बोर्ड के उपाध्यक्ष आर.एस. बाली, मुख्य संसदीय सचिव सुन्दर सिंह ठाकुर, प्रधान सचिव वित्त देवेश कुमार, मुख्यमंत्री के सचिव राकेश कंवर, निदेशक पर्यटन मानसी सहाय ठाकुर, हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम के प्रबंध निदेशक राजीव कुमार तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी बैठक में उपस्थित थे।

अटल बिहारी वाजपेयी को श्रद्धांजलि

पूर्व प्रधानमंत्री एवं भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी की पुण्यतिथि पर राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने गत दिनों शिमला के ऐतिहासिक रिज में स्थापित उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि वह एक महान नेता, प्रखर वक्ता थे और उन्होंने प्रत्येक पद पर रहते हुए सिद्धांतों का पालन किया। उन्होंने जीवन पर्यन्त मूल्य आधारित राजनीति की। राज्यपाल ने कहा कि देश के लिए दी गई अमूल्य सेवाओं और बहुमूल्य योगदान के लिए अटल बिहारी वाजपेयी को राष्ट्र सदैव याद रखेगा।

भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय राजनीति के महान नायक थे। उनका कहना था कि 'छोटे मन से कोई बड़ा नहीं होता और टूटे मन से कोई खड़ा नहीं होता'। राज्यपाल ने कहा कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राजनीति में उनके शब्द और अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। विशाल हृदय से ही समाज सेवा की जा सकती है। राष्ट्र हित के लिए वह सभी को साथ लेकर चले। उन्होंने कहा कि आज देश विकसित भारत बनने की ओर अग्रसर है, जिसकी शुरुआत अटल बिहारी वाजपेयी ने की थी।

इस अवसर पर उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री, नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने भी अटल बिहारी वाजपेयी को नमन किया। इस अवसर पर देशभक्ति पर आधारित गीत भी प्रस्तुत किए गए।

NAME CORRECTION

I, Sant Ram S/o Late Mohi Ram R/o 156, Vill. Shard P.O. Chanana Dhar Teh. Kupvi Distt. Shimla, HP. declare that name of my father has been wrongly mentioned as Ram Singh in my PAN Card which may be corrected as Mohi Ram.

मुख्यमंत्री ने किया स्वामित्व योजना का शुभारम्भ......

(पृष्ठ एक का शेष) महीने 1.57 लाख इंतकाल किए गए है ताकि लोगों को बार-बार राजस्व कार्यालयों के चक्कर न लगाने पड़े। उन्होंने कहा कि राजस्व मामलों के निपटारे के लिए हर अधिकारी के स्तर पर समयसीमा तय कर दी गई है। लैंड रेवेन्यू मैनुअल में भी बदलाव किया जाएगा। इसके अतिरिक्त आने वाले समय में विभागीय कामकाज में अन्य बदलाव लाए जाएंगे ताकि लोगों को राजस्व कार्यालयों में बार-बार न आना पड़े। मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान राज्य सरकार गरीब परिवारों को सब्सिडी का लाभ दे रही है। उन्होंने संपन्न परिवारों से सरकार की सब्सिडी स्वयं छोड़ने का आह्वान किया, ताकि राज्य आत्मनिर्भर बन सके और विकास के पथ पर आगे बढ़ सके। उन्होंने कहा कि बड़े-बड़े होटल भी बिजली व पानी की सब्सिडी छोड़ने की पहल करे। उन्होंने कहा कि पानी की गुणवत्ता में सुधारने के लिए भी राज्य सरकार प्रयास कर रही है इसलिए 50 हजार से कम सालाना आय वाले परिवारों को ही पानी के बिल पर सब्सिडी प्रदान की जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के प्रयास कर रही है और गांव में सुविधाएं बढ़ा रही है। प्राकृतिक खेती से उत्पन्न गेंहू को 40 रुपये तथा मक्की को 30 रुपये प्रति किलोग्राम की दर पर खरीदा जाएगा और इसकी सर्टिफिकेशन भी की जाएगी। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश प्राकृतिक खेती से तैयार उत्पादों और दूध पर न्यूनतम समर्थन मूल्य प्रदान करने वाला देश का पहला राज्य बना है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार भैंस के दूध को 55 रुपये प्रति लीटर तथा गाय के दूध 45 रुपये प्रति लीटर की दर से खरीद रही है। कांगड़ा जिला के ढगवार में 250 करोड़ की लागत से आधुनिक मिल्क प्रोसेसिंग प्लांट स्थापित किया जा रहा है। मनरेगा की दिहाड़ी 60 रुपये की बढ़ौतरी कर 300 रुपये कर दी गई है। उन्होंने कहा कि सरकार की विभिन्न योजनाओं का पात्र व्यक्तियों को लाभ उठाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि प्राकृतिक आपदा ने हिमाचल प्रदेश में कहर बरपाया है। इस वर्ष भी बादल फटने की घटनाओं में 31 लोग काल का ग्रास बने और 50 से ज्यादा लोग अभी भी लापता हैं। उन्होंने कहा कि बादल फटने की घटनाओं का अध्ययन किया जाएगा, ताकि जान-माल के नुकसान को रोकने के लिए उपयुक्त कदम उठाए जा सकें।

इससे पहले, मुख्यमंत्री ने राज्य कर एवं आबकारी विभाग की हमीरपुर जिले पक्का भरो में 1.82 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाली कलोनी और 5.59 करोड़ रुपये से बनने वाली टाउन भराड़ी-नंधन-प्लासी सड़क का शिलान्यास भी किया। इस अवसर पर भोरंज के विधायक सुरेश कुमार ने कहा कि वर्तमान कांग्रेस सरकार ने भूमि कानूनों में बड़े स्तर पर सुधार किए हैं ताकि लोगों को मुश्किलों का सामना न करने पड़े। उन्होंने कहा कि पहली बार निचले हिमाचल से कांग्रेस पार्टी ने मुख्यमंत्री के तौर पर ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू को जिम्मेदारी प्रदान की। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए अनेक कदम उठा रही है। पिछले 20 महीने में कई कड़े फैसले किए गए हैं लेकिन भविष्य में इनके परिणाम सुखद आएंगे। उन्होंने कहा कि विपक्ष लोगों को हिमकेयर योजना के नाम पर भ्रमित करने का प्रयास कर रहा है, जबकि इस योजना को बंद नहीं किया गया है। राज्य सरकार पात्र लोगों को संबल प्रदान कर रही है। उन्होंने कहा कि अधिकारियों की जवाबदेही तय कर लोगों को अधिक से अधिक सुविधाएं प्रदान करने का प्रयास किया जा रहा है। हमीरपुर में नर्सिंग कॉलेज व नया बस अड्डा बनाया जा रहा है। इसके साथ ही हमीरपुर बाजार के सौंदर्यीकरण के लिए 20 करोड़ रुपए स्वीकृत किए गए हैं।

हमीरपुर जिला में आदर्श स्वास्थ्य संस्थान बनाए गए हैं, सभी विधानसभा क्षेत्रों में राजीव गांधी डे-बोर्डिंग स्कूल खोले जा रहे हैं। अतिरिक्त मुख्य सचिव (राजस्व) ओंकार चंद शर्मा ने स्वामित्व योजना के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू के मुख्यमंत्री बनने के बाद से राजस्व विभाग लोगों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करने के लिए अपने कामकाज को डिजिटल करने के लिए बड़े पैमाने पर कार्य कर रहा है, जिससे राजस्व कार्यालयों में लोगों की भीड़ कम हुई है।

देशी गायों व भैंसों की खरीद....

(पृष्ठ एक का शेष) के सहयोग से एकीकृत सिंचाई योजनाओं को क्रियान्वित करेगा, ताकि किसानों को अधिकतम लाभ मिले और इन योजनाओं को व्यावहारिक बनाया जा सके। उन्होंने कहा कि सरकार पारंपरिक कूहलों के जीर्णोद्धार और मरम्मत के लिए पर्याप्त धनराशि सुनिश्चित करेगी। उन्होंने संबंधित जिलों में विशिष्ट फसल उत्पादन आवश्यकताओं के अनुसार कोल्ड स्टोर स्थापित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जाइका के तहत गेहूं और मक्का के भंडारण के लिए साइलो स्थापित किए जाएंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार राज्य में दूध का उत्पादन बढ़ाने के लिए विशेष प्रयास कर रही है। भैंस और गाय के दूध का खरीद मूल्य बढ़ाकर 55 और 45 रुपये किया गया है। पशुपालन और प्राकृतिक खेती दोनों ही संबद्ध गतिविधियां हैं, इसलिए राज्य सरकार प्राकृतिक खेती क्लस्टरों में देशी गायों और भैंसों की खरीद के लिए किसानों को वित्तीय सहायता बढ़ाने पर भी विचार कर रही है। उन्होंने कहा कि जलवायु डेयरी क्षेत्र के लिए सबसे अनुकूल है और इसका लाभ उठाकर किसानों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि की जा सकती है, जिससे उनकी आर्थिकी भी मजबूत होगी।

उन्होंने प्राकृतिक खेती, पशुपालन, मत्स्य पालन और मधुमक्खी पालन को एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने जाइका और मिल्कफेड के कामकाज की भी समीक्षा की और कार्य में डिजिटल पद्धति अपनाने के निर्देश दिए।

भूल-सुधार

गिरिराज साप्ताहिक के 7 से 13 अगस्त, 2024 के अंक में पृष्ठ आठ में प्रकाशित सामान्य ज्ञान में प्रश्न संख्या 8 में 'पॉण्डिचेरी के राजकीय फूल का नाम क्या है?', में पॉण्डिचेरी के स्थान पर उत्तर प्रदेश पढ़ा जाए। - संपादक

डाक पंजीकरण संख्या : एच.पी./42/एस.एम.एल. 2024-2026 साप्ताहिक आर.एन.आई. 32195/78

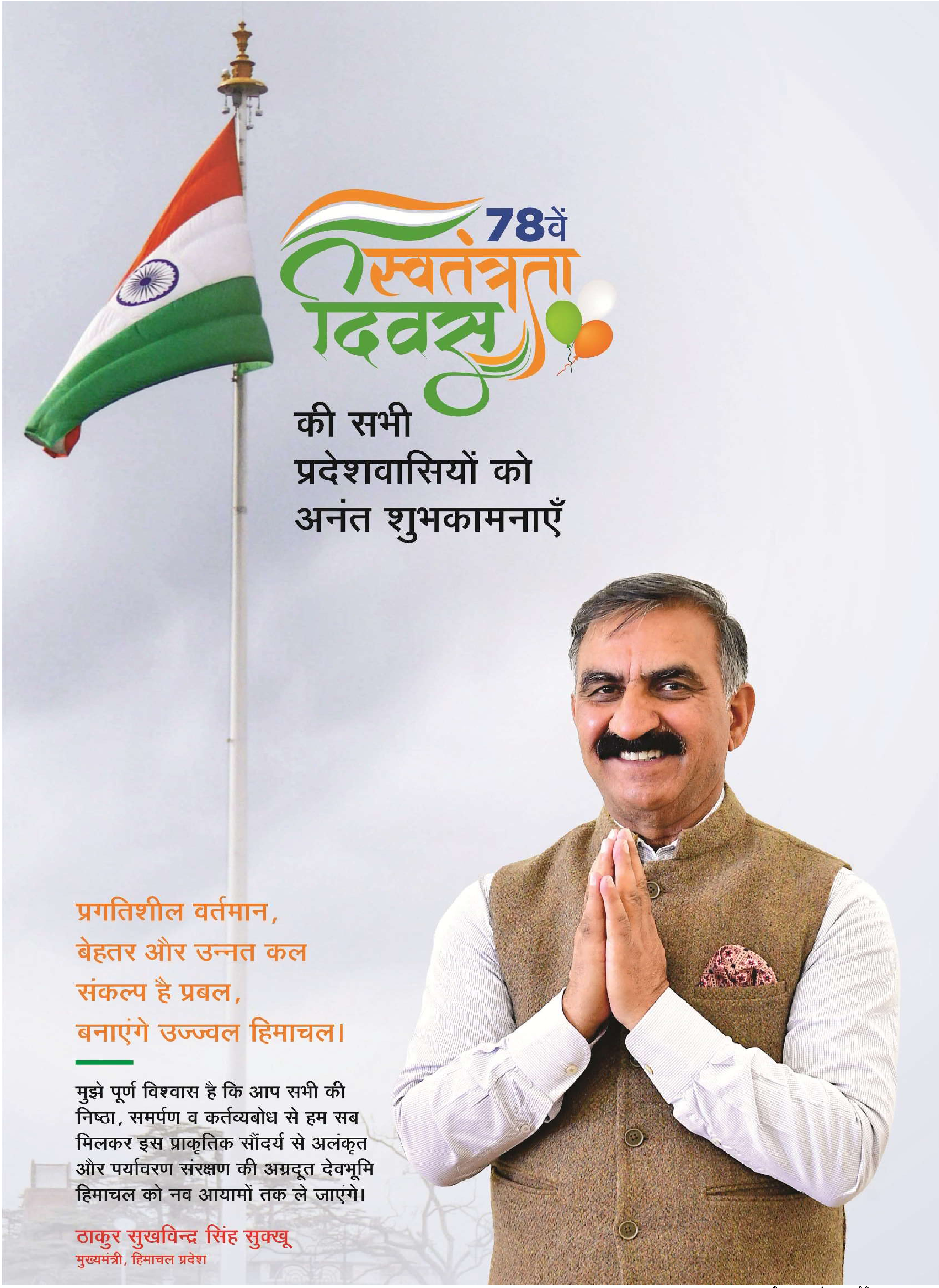

0036/2024-25 हिम सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग

प्रकाशक एवं प्रधान सम्पादकः राजीव कुमार, एच.ए.एस., निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हि.प्र. शिमला-171002, मुद्रकः प्रभा राजीव, नियंत्रक, मुद्रण तथा लेखन सामग्री विभाग, शिमला-171005, फोनः 2830381-PBX.A29, वरिष्ठ सम्पादक : डॉ. राजेश शर्मा, सम्पादकः रीना नेगी
कार्यालयः हि.प्र. मुद्रणालय परिसर, शिमला-171005, फोनः 2633145 व फैक्सः 2830374, ई-मेलः girirajhp@gmail.com. प्राप्ति स्थानः गिरिराज कार्यालय। (गिरिराज साप्ताहिक में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचारों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं)